

কলিকপুরাণান্তর্গত শীকুকানন্দ বোদ্ধারিত ভাদশধ্যারঃ হইতে সংগৃহীত। বক্ত্যা বেদব্যাস গোলামী শোতা পৌরমুবাদি ঘ্রিগণ শীবক শিশুরাম দাসানুমত্যানুসারে

क्रिजी धर्मा मर्मन कर्ड्क

भन्नोत्रीम मानाविध इटम

বিশ্বচিত

প্রকাশক



ৰীবিশ্বর লাহা কলিকাতা,

চিৎপুর বেছে বটভলা ১১২ বছর জবন। বন ১২৮৪ বালা:



The state of the s	· 136.
7.774	
विर्म की	(A)
अथ यरमाना जिल्लाक महानी थां छतान	3
वर्ष वक्रवानकश्व (शार्षा केर्ड केंद्रक फंट्रक	- × ×
कथ जिक्रक त्वार्क गाहेत्व वर्षामात कार्य कर्पांच	Place
कथ यामाना क्रीकृष्णःक भार्ष्ठ याहित्व वादन करत्रन	•
অধ জীক্তকের প্রতি জীদামের কাতক্রতি	8
कथ ममना ने जिक्करण्टक माजान	•
काथ क्षीक्र कार (शार्ष्ण अमन	•
कथ मुख्यात कात्रन सूत'लत श्रीमधीत निकटि अमन	•
कर बिह्नक यरणांनात निक्छ मुख्या जानिए शान	٢
অধ এইক মুক্ত' রক স্থান'ন্তর তৎফল ভারা	
্ গোভুষণ করেন	• 5
कथ ब्रीकृष निकालस्य अभन	<u>à</u>
क्थ यरमाना प्रस्का मर्गात विश्वम इहेन्ना क्री क्रांस्कृत मर्न	ादब
ভ্ৰদ্ধাপ্ত (দধেন	22
अथ छूटी बीहाधात निक्टि के क्टिक गःवाम (मन	23
অধ লাগিতা শ্রীমতীকে ভংসনা করেন	2 3
অথ স্থীগণের মন্ত্রণ	-38
अध भूक वन दकर की नामा पित नियुक्त	:4
काश मधीलात्व मुख्यंदान लगम ଓ खीलारमा पर्न	4,4
অধ্ প্রাক্রক মিলনালে গোপীগণের উপ স্থ চেউ:	39
चार द्वार्यक मर्ग्या हेन क्ली ध दन	6.6
অথ র'ধার লে'তে গমন	34
জথ রাধিকার কুঞা বিরহ	>>
अथ तांचात तम र	2.
আৰ রাধা কর্ত্তৃত ক্লাফের স্তব	5.5
অধ এই ফ রাধার প্রতি সময়	54
• जाय त्राधात मधीलन गरिक कुंकित्त समन	文学

# স্চিপত্ৰ।

बिर्व <b>े</b>	পত্ৰ†ক্ষ।
অংশ নবনারীর কুঞ্জর বাপ খারণ	3.0
जर्थ 🗐 कृत्यः ३ कुञ्ज्वरम शमन	₹.
कथ श्रीकृष्मः व श्रीमडीय कृष्धः विवश्वावनः।	24
खंध कृत्यःत मनगती कृष्ठा नर्भम	: b:
ष्यथ वाथ क्रांक्टर विक्शास्त्र विकास	90
অংথ কলক্ষ ভঞ্জনারম্ভ	20
व्यथ कृत्रका मृष्ट्।	"
व्यथ यटमानांत द्वानन	69
অথ নদের আংকেপ	<b>၁</b> 8
অথ শ্রীদামাদির কাতরুক্তি	-26
অথ বলরামের আক্ষেপ	403
অথ বৈদ্যের আগমন	« b-
<b>७ थ</b> टेवटमात नाना	8 \$
थथ উগनम् कर्जुक नांदीगरगद <b>आखान ও नां</b> दीग	ণের
পরম্পাণ ভাষা করণ	৪২
कथ द्वारियों कर्जुक नांबीतरवंत खन्म निनातन	8.0
অংখ জটিলার নিকটে যশোদ'র গমন	84
ঋষ জটিলা কুটিলায় কথোপকথন	<b>.8</b> @
<b>अथ दे</b> नस्मात दक्ष मिण्यान	89
অথ অটিলার কেশ সেভু পার হওন	8 <b>b</b> -
অথ কুটিলার কেশ মেতু পার হওন	6.8
अथ य भ मारक जन अधनरा देवरभाव निरम्	e3
জ্ঞাথ বৈলোৱ গণনা	02
জ্ঞাইন্ন ভাকে য-শোমকীর বিনয়	6-3
অংথ প্রাফার বিষয়ে পরীকা হীকার ও যমুমার	
ं अभटनांटनाश	4.6
অংখ ভারিত্র যম্নায় প্রমন	69
জাগ শ্ৰীমতাকুকেই আছে ডিকুরেন	44

विर्च <b>्</b>	পত্ৰান্ত ।
অথ জীমতী কুকের ছারা ৰূপ দশ্ন	45
विर्च <b>्छ</b>	পত্ৰ গম্ব
জ্ব প্রীমতীর সেতু পার হওন	<b>v</b> 5
जाय 🕮 कृत्यः व (इंडन	63
च्यथ यटमानात कारनरक वनित्रा त्रांशकूरकत नवन	7
ভোজন	62
ष्ट्रथ रेवटण्डेत विष्यंत	6-0
কলক্ষ ভঞ্জনাত্তে 🕮 হকের শ্রীণতীর কুঞ্জে গমন	ec
मासार्याश कथन	46
नवागए म(क्र्र क्षम न	69
बिक भुख्यत हु छ। लिमी मृह विवाह	9 0
নাড়িজকোৰকোপাখ্যান	93
বিজ পুত্রের বক্ষরাজার সহিত সাকাৎ	98
গৌরম্থ মুনির প্রশ্ন	6-2
शानक धारमञ्ज विवन्न	66
(भारताकनारथत क्रम वर्गन	40
গোলকনাথের বিহার	be
विद्वाबाद कुछ बौताधाद भगरनारनाम	1-6
ष्य जीतायात द्रथ वर्गन	ţc
अद्राधिकात्र विवाकात्र खब्दन भगन ६ विद्राक्षीत्र	
नक्षाक्षा ५ ७ न	6-1
এমতীর বিরাধার গৃহ হইতে নিজালয়ে গমন	43
রাধিকার নিকটে গেল্যেক্নাথের গমন ও	
রাধিকার মান	•6
अथ वा महोत त्यवाधिकाती लाभीविद्यात कल वर्गन	23
ब्रिताशात शूर्व व्यवितिष्ठ क्रूक्ट्स वात्रव ६ क्रूक्ट्स	
ञ्चाकटत शमन	23
कृत्यन श्रान खत्र शमरम खोगांदमत व्याध 4 खीनांद	
আত ক্ষাপ	86

情 <del>情</del>	WATER THE !
জীবতীর প্রতি জীপ্নের ক্রিশাল	**
श्रीशारमत मादन कींचा शहता श्रीशंकीत हृदकत	[N+B
श्रममं च ताथा द्वारणत पातकात	29
वृत्यांवत्व श्रीशाकृत्यत्र विशंत क मन्त्र श्रीकृत्यः	PSTF3 P
निमा काश्वित वहन द्याषात्रेय कटतम	RE
স্থাতিরবাদে প্রমন্তীর সাধানন	44
अपरी कुक्राटक महेन्रा शमन ও शांगमक पर्यम	3***
श्रीत्रजी श्रीकृतकड सवदशीयस सूल मर्गन करंडन	343
अधिकीत गरिक कृत्यत स्त्यानस्थन	<b>4</b> 6
वीकृत्कत रेक्टाट्ड बकात कांगमन	102
ब्राधीकृटकृत विवास	200
नेवबाशास्त्र भोडांबाकृटक्त्र विश्वंत	>•8
रिश्कारक मोहरकत नागर नाम नातन व विषय	ो बोक्कदर
क्यारण गरेश याखागत्रं निकटके व्यन	304
ब्याबरम् विवयन स अवित्रेत्र मान	3.4
श्चित्रकीय भाग पक्षारम कृत्यन रहकी	F6
क्षा बंदण हाबाब मांच फक्कन कटबन	207
मात्रकक्षमारक हुन्या द्वावादक पुत्रान	***
वांवा कृटकत हु जनवदम गमम	3.3
इकोर सूच पुनित्र भून्य आंध्र	64
होशाङ्करकत्र यूपण ज्ञान वर्गव	2.02
প্রস্থাত্তর পরিষয়	33

सूही भव गमांखः।



श्रथ यरणांना क्षित्रक इन्हर्नी विश्वान । धूत्रा । कत्र कत्र क्षित्रक नक्षत यरणांना कीवन धन, शोकून देकल्लकाति शोशीका मरनात्रक्षन ॥

প্রার। মুনিগণ প্রতি ব্যাসদের মুনি কন। ছাপরেছে প্রভূষবে শ্রীনন্দনন্দন।। এক দিন প্রভাতে উঠিয়া নন্দরাণী कारन नरत नीन्मिन कतिरह निर्मान ।। हान्म्रच ननी सन्त আণর করিয়া। যভ দেন তত খান নাচিয়াই।। দেমা দেমা আর দেমা মুখে এই বোল। ভাবদেখে নন্দরাণী ভাবে উক্ত (तान ।। कीव गर नवनी त्य नहेंद्र बङ्ख्य । त्रांभारनद्र श्रूट्य दिन जानम् ज्या ।। चर्ता थाकि दिनंति वटन स्ट स्ट । জন্ম জনাস্তরে কত যশোদার পুণ্য।। বিধি ভব আদি বার্ট্টে ধ্যানে নাহি পার। হেন প্রভু যশোদার আঞ্চিনে খেলার।। **এটक्टल (थानिह्म खननी मन्त । (श्नकाटन उथाय कार्रेना** (भाषीभा ।। नामछा विनश वृक्षा हिता बिरनाहमा । इन्लक लिका क्यांवली क्यांनना ॥ वक्रांचने च्रांची स्वन किनी। अधाना कीमणी मनी कीकूर प्राहिनी।। जात यह त्वांशीवर्ग माम कर कछ । गर्व कृष्णवांत्रगा कृष्णांत्व वछ ।। को त नद नद नी नहेट्य कट्नक्न। प्रिथिए आहेल गृद्ध अपूर् नांहन ॥ (शांभोटल द्यांत्रन आमि यङ (शांभीश्व । इहेन काम्हर्ग त्मांका कि कर कथन ।। नकत्म नवनी त्मन्न विकृत्सन्त्र करत । हुर शंक शांकित्व जानेमचर्दात ॥ शांति शति सूर्व মেলি ছুই হাতে ধান। আর দে বলিয়া হরি বারে বারে চান यटमाना बट्नम इट्ड मून वाश्यम् । शालीवा चारेन छात् र्विटि नाहन । नशीनेव माद्य इति नाह अक्रात ॥ यङ नमी दबेटक शाह निर कमिताह । माटहज बहदन क्ष स्टब

হর্ষিত। নৃত্য আরম্ভিলা তবে জননী বিদিত।। চারিদিকে নথীগণে দের করতালি। কত ভক্ষিমাতে নাচে প্রভুবনমানী কটিতে কিছিণী বাজে চরণে মুপুর। গোপীগণ করতালী দেয় সুমধুর। মধুর কত্বণধ্বনি নহ পড়ে তাল। আনন্দেহইল ভোর নাচরে গোপাল।। আকালেথাকিয়া দেখে হত দেবগণ আরম্ভ করিল তথা ছুকুভি বাজন। একবারে বাজধ্বনিউঠিল নগণে। হেথা প্রভু নাচছেন নল্দের ভবনে।। প্রাক্রগা প্রসাদ বলে হরি পদতলে। এই বেশে নাচ মম হুদ্র কমলে।।

অথ ব্ৰজবালকগণ গোষ্ঠে যাইতে জীকুফকে ডাকেন।

ধীব-ত্রিপদী। এই ক্রপে নন্দালয়, নাচেন আনন্দময়, ত্রজনার পুরাইতে ভাব। সন্দোদা রোহিনী ভার, আচেন পুলক কার, হ্রকালে দেখ আর ভাবা।ইল গোষ্ঠের বেলি যতেক রাখাল মেলি, বলরাম শিক্ষায় দিল সান। বাজিল বলার বেণু, বেরবে জীবন কানু, খুনি রাণীর কাঁপিল প্রাণ জীদাম স্থুদাম দাম, স্থুবলাদি বস্থুদাম, একত্র হইয়া স্থাগণ চূড়া বান্ধি খড়া পরি, হাতেতে পাচন করি;বাহির হইল সর্ব জন। বংগগণ লয়ে সজে, সকলে পরম রঙ্গে, উপনীত নন্দের জন। বংগগণ লয়ে সজে, সকলে পরম রঙ্গে, উপনীত নন্দের ভবন। সাজিয়ে গোর্ফেরসাজ, বেরবেরাখালরাজ, ধায়ে আদি দিলা দর্শন। জীক্ষ মায়ের কাছে, স্বচ্ছুদে আনন্দে আছে দেখি ভাবা ক্রিল রাখাল। ক্রমণ ইলিত ছলে, জীক্রগা প্রসাদ বলে, দয়াধার প্রভু নন্দ্রাল।

প্রীক্ষণ গোর্ফে ঘাইতে যশোনার কাছে অনুমতি চান।

পরার। জীদাম কহিছে ওরে শুনরে কানাই। গোঠে বাইবার বুঝি বেলা হয় নাই। মায়ের নিকটে আছু আদরে বিসয়া। কভেক ছইল বেলা না দেখা চাহিয়া। এই প্রজবাল কের স্বারি মা আছে। কে থাকে ভোমার মন্ত সদা মার কাছে। চিরকাল আখাদের কিনে রাথ নাই। নিভা নিভা ভাকিকে আসিব ভোরে ভাই।। কিসের লাগিয়া কর এত ঠাকুরাল। নিভাই কে রাখিবে ভোর ধেকুপাল।। রাজ পুত্র

বলিয়া গরব কর কত। কে তেন নকর আছে কে শহিবে এত এই বুপে রাখালেরা কহিছে কৃষিনা। উত্তর করেন হরি ঈষ্প হানিয়া। মধুরবচনে কন শুন স্থাগণ। কি লাগিয়া হইয়াছ এত উচ্টেন।। ভোমাসবাকার সঙ্গে যাব গোচারণে। ইহার অভ্যথা কিছু না ভাবিহ মনে।। মায়ের গুলাল আমি মায়ের জীবন। না পারি যাইতে বিনে মায়ের বচন।। আমারে জানিবভাই মাতৃ লাজাকারী সায়ের আরভিবিনে যাইতে না পারি।। কিঞ্ছিৎবিল্যু কর চাহিয়া আমায়। মায়েরকাছেতে আগে হইব বিদায়।।এই কপে স্থা সহ কথোপক্থন। মুনিয়া ব্যাকুল হৈল যশোনার মন।।

### অথ যশোদা শ্রীকৃষ্ণকে গোর্ডে যাইতে নিষেধ করেন।

भीर्ध-जिलमी। भूनि वानरकत वानी, गांकून हरे या तानी, কোলে তুলি লইল তনয়। চাঁদমুখে চুম্ব দিরা সুখ ঘর্ম মুছা हेता, काष्ट्रिन प्राटकत धुनां हत्र । आणिताधतिन दकाटल श्रुटस्कटत कारिया वाल, आबि त्यटक नाहि मिव वटन। श्रेनः क्रिमादमञ्ज চেয়ে, বলে রাণী বাঞা হয়ে,মৃত্ মৃত্ মধুর বচনে i' বাপ সৰ শুন ওরে, আজিকার মত ঘরে, রাখি যাও মোর নীলম্প। **এই यে नीलव्रक्त, मार्य घात धार धन, ध्यां १४न नव्रम्य मनि ॥** ভাবলা আন্ধের নকিঃ দরিদ্রের ধন কজি, হাপুতির পুত নন্দ-লাল। কত জন্ম জন্ম ধরি, হরলোরী পুজা করি, পেয়েছিরে ध (इन कुलाल !। भाठारिय नयून छात्रा, @ क्वारित इत्य गांताः কেমনে রচিব এই ঘরে। জনশীর মাথা খাও,আবিকার মঙ यां अ. नी नप्रशिक्ति किया किया त्याद्य ।। किथा प्राप्त कार्य क्रस्केत्र वाष्ट्रिन त्यांक, मथाधरने करहन उथन । मारतरत का-ন্দায়ে ভাই,যাইতে নাহিক চাই,আজি তোমা দৰে যাও বন জীচুৰ্যা প্ৰাাদ কয়,দেখিৰ হে দয়গময়, ভক্তবংসল ধর সাম শিশু गटव रहामा दिटन, माहि काटन समास्टर, हाफिए ना विद्व श्रेष्ट्र भागा।

**बिक्रस्थत श्रांक बिनाटमत कावकिंछ।** 

भारत । स्थानिया कृत्यन मृत्य निर्मुत वहन । विस्त हहेन मदेन यक नथानन।। आथि इन इन केरत नाहि नदेव वानी। यटिक द्रार्थान देश्न चाकून भदानी ॥ भाम। म्याकाद्य क्रक यू वि (एया शिल। ना कानि क मृत्ये का कि कि मना यहिन।। ্জোধ করিয়াছে বুঝি ভৎসনা বচনে। আর গোর্চে নাহিবাবে আমাদের সনে।। এতভাবি যতশিশু অস্থির ইইরা। কংছিতে শাগিল তবে রাণী সম্ভাষিয়া। এলাম কহিছে মাগো করি বিবেদন। স্বাকারপ্রিয় হয় ভোমারনন্দন ।। বেমন দেখালো खूमि क्र्यः थान्धन। एउमन कानित्व क्रयः नवादि खीवन।। বিশেষত রাখালের জার কেহনাই। ক্লুফেরকারণে বনে সবে तका পाই।। मूनरना कननी त्यांत त्नाभारनद्वन । तन् दूरव (अस कित्त नारि यात्र वन ।। मिश्ह वााञ्च छल्लुकानि कल्ल कछ বনে। বংগ শিশু দেখি আইসে হিংসিবার মনে। শুনিয় কা হর বেণ্ডিংশা যায় ছুরে। পুলকিত হয়ে ভারা সবে যায় किर्द्र ॥ अञ्च उपन छात्र यनि चमुन्द्र । विनुत्र निन्ति । মেঘ इस्तो छम्य ॥ छल्टन छाकिया विन्तू वित्रवृद्ध छन्। त्य কলে স্বার্জ্জ হর্গোশীতল। আব কত্ত্রণ মাগো কহিতে কি পারি। কামুরঞ্জেতে মোরা বিপদেছেতরি।। ওবে ক্ষ कृषि यनि नारे वादव वदन। कूथानत्न कास्नितः (क थाँ। हादव थार्ग।। शिर्माता इंहेरल यन फिन्द कानजन। इश्वेर्भरन दक किहरत मधुत वहन ।। तार्थाटलत खन्म किया यूहारत कानाइ । সকটে পড়িলে বল কে রাখিবেভাই।।কে বাঁচাবে বিষপানে করিয়া যতন। কে করিবে ঘোরবনে দাবামি রক্ষণ।। বকের উদরে কেবা করিবে উদ্ধার বিপদ সাগর হৈতে কে করিবে পার।। ওরে কাল তেতির ছাভি কে ঘাইবে বন। রাখালের व्यान्थन जूनि त कीवन। उदय य यत्निह कृष्ठे उदमना वहन क्कांच करिशाह वृत्वि कृषि तम कार्यन ।। कृषि विदन कार्यादमत কের। আছে আন। সেই হেডু ভাই ভোরে করি অভিনান। আগেতে জাগর দিয়া বাড়ায়েছ মান। এখন তাহাতে কেন क्य अश्मान ।। त्रांचानिया श्वाद वटलीह इहेकथा। जाशहर कारत त्वि छ। विति ह वाया।। जूनि यनि व्यक्ति क्षक नाहि याद वन। अथिन छामात काछ छ। क्ष जीवन।। वेअज्विन व्यक्ति कामात काछ छ। क्षा का व्यक्ति विवच्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति विवच्यक्ति व्यक्ति विवच्यक्ति विवच्

## नमतानी अक्रिकटक नावान।

প্রার। গোপালে লইয়া রাণী যতনে সাঞ্চায়। মরি কি सुन्तत्र माटक नवरन कांत्र ॥ धना तांनी श्रुग्तकी कृष्ण लट्स কোলে। চাঁদমুধ মুছাইয়া নেতের অঞ্চলে॥ অলকা ভিলকা দিল নাৰ্দিকা কপালে। চল্দনের বিন্দু মাধা কিবা শোভা ভালে।। নয়নে অঞ্চন মনোগাধে পরাইল। ঈবদ হেলায়েচুড়া বালি মাথে দিল।। চুড়াপরে শিবিপুদ্ধ গুঞ্জকারদিয়ে। এক চিন্ত হয়েরাণী দেখে নির্থীয়ে। কোকতে কিন্ধিণী সহ ধড়া বান্ধি দিল। অপুর্কবসন আনি পৃষ্ঠেতে আটাল।চরণেপরায়ে দিল মধুর কুপুর। হাতেতে বলয়া ভাড়মুবর্ণ কেয়ুর।।পলাতে स्रवर्ग शत कर्राटक कुछन। स्मरपटक विषती यमरेशन्यानमन इडेल (यक्तल कल कि कहित छाना। यांगीनन अन्तरमू वाक्षः कदत्र याहा ॥ धहैकद्भ नांकाहेश नत्मत्र घत्नी। हान ख्टि वानिया भारत मिटनक शावनी ।। शावनी करवटकान्या व्दल नन्मवानी। अहे द्वरण अक्वात नाइ नीनमनि। माद्यत वहरून इविनाट आववात । तम् मृद्य दिन गरव देश हम कार्त ।। एटव त्रांभी क्योतगत नवभीगहेश। श्रष्ठात अक्टल किছू বিলেন বাৰিয়া। তার পারে ক্ষেমাথে বাজেন রক্ষণ। বাম-नानि समनाम कति छेळाङ्गशामीभाषाशास्त्र। बादन काएनस्वि

करत । छ।हम पूछ । धार्मीत चत्र यारवसूरत ॥ व्यवस्थाय वाम কর অঞ্লী ধরিয়া। দভাঘাত করি রাশী দিলেক ছাভিয়া !। मारत पर्वाचां करत गारात मत्रीतः। ज्ञास जात ज्ञास पर यगाँहेटछ माद्र ॥ अहेक्टल मामाविध कविशा तकन। कानी कीं म कदत तांनी माति नातांत्रना। जात यह द्वातृक्ष तांत्रा-लिनी हिन । नवाकांत अन्धुनि कृष्यां धिनिना नवाकारत कन রাণী করিয়া বিনয়। বনেযান প্রাণকাত্ব ভাল যেন বৃদ্ধাঞ্জ कानीकीन (भाषी करता नकटन। नमा (यन भात क्ष्य थी कट्स कूमारल। ভবে यदमामछी धति दशी भारतत कटत । कदत करत बलवारम ममर्जन करत । धत वाश वणवाम णहरत कोवन মা বলিতে ঘরে আর নাহি অন্যক্ষন।দেহ হৈতে প্রাণ ভানি मिनू छोत्र चारत। रम्थर कार्टेष्ट द्वर्थ भात्र निवा नारत।। थारान कानारे त्यांत्र किছू नाहिबादन। পथअदन जूनिशादह यात्र अन्न वत्न ।। वन्त्राम कन मार्शा किছू मा ভावित ! স্বাকার প্রাণ রুক্ত নিতান্ত জানিবে। স্থির হও না ভাবিহ শুনগো জননী। সম্যাকালে স্থানি দিব ভোর নীলম্বি।। बारकक विनिष्ठा कृत्य लाइ मिथुनन। धवनी श्रामनी द्रदेव ক্রিলা গমন।। বে অবধি গোষ্পাদের ধুলা দেখা যায়। ভানি মেৰে হয়ে রাণী এক দুঝে চায়।। ভিক্ল কহে বার জত্তে ভাব ला क्रमी। विष्युत जावना कारव त्मर नीलम वि।।

### **একুফের গোর্ভে গমন।**

লঘু-ত্রিপদী। দহ শিশুগণ, নন্দের নক্ষন, গোধন গইয়া

হাই। নাচিয়ে গাইয়ে, বাঁলী বাজাইরে, আনন্দের দীমা
লাই॥ চৌদিকে রাখাল, মাঝে নন্দলাল, বলাইরের গলে
খরি। ত্রিভঙ্গ ভলিতে, নয়ন ইলিতে, চলে অতি ধীরি ধীরি
দেখিয়া দে ভাব,উঠে কভ ভাব,বে জন বেমনভাবে। আইরপে
মরি মরিং কি রূপ যাধুরিং, ভুবন ভুলালে ভাবে।। এইরপে
হরি, বংশু সক্ষে করি,গোঠ মাঝে উত্তরিলা। যথুনা পুলিনে
লায়ে স্থাপনে, আনন্দে দবে চলিলা। যতেক রাখাল, লায়ে
ধেমুপাল, খাওয়াইরা ত্র জলা। দবে করি মেশা,জারভিলা

মুক্তার কারণ স্কলেক রাধিকার নিকটে গমন।

পরার ! শ্রীক্রকের বচনেতে সুক্ল তথন। শ্রীনতীর নিক্
টেভে করিল গমন।। বিসিয়া আছেন প্যারী রত্ন সিংহাসনে
কুলা আদি সথী সহ আনন্দিত মনে।। হেনকালে সেইস্থলে
সুবল আইল। ভাহারে দেখিয়া প্যারী জিজাসা করিল।।
গোঠে ছিলে একা এলে কিসের কারণ। কোথায় কালিয়ে
সোণা সে বংশীবনন।। সুবল কহিছে ওগো শুন ক্মলিনী।
গোঠেতে বৃগিয়া আছে সে রভনমনি।। গো ভূবণ কালাচাদ মুক্তাতে করিবে।। পাঠালেন হোমার কাছে মুক্তা
দিতে হবে। একথা শুনিয়া প্যারী লাগিল হানিতে। গরুর
ভূবণ হেতু মুক্তা হবে দিতে।। অংক্ষারে শ্রীমতীর জ্বাইল
ভ্রম। বুরিতে নারিল কিছু প্রভুর বিক্রম।।পরিহাস ছলে
কত উপহাস বরে। কহিতে লাগিল তবে প্রল গোচরে।।
বছমুলা মুক্তা এত কেলিকদম নয়। কেলে মেলে হারাইলে
কতি নাই হয়।। স্থাতিজলে সমুদ্ধেতে স্কল্পর ভিতরে। বে

क्रक यत्नांनात निकरते मुख्ना व्यानित्व यान।

পরার। সুবলের মুখে শুনি এসব কাহিনী। কুপিলা অন্তরে তবে দেবচক্রপাণি।। দর্পহারি ভগবান বুঝি অহন্তার হরিতে রাধার দর্প করিয়া বিচার। সুবলে কহেনপ্রভু সান্তন বচন। শুন-ই স্থা জুনি স্থিরকর মন। কান্দারেছে কমলিনা ভোমারে যেমন। নিশ্চর জানিবে প্যার্থা কান্দিবে ভেমন।। এত বলি স্থাগণে রাখি সেই বনে। আপনি চলেন হরি যশোদা সননে।। স্লেঃমুখে সা মা বলে উত্তরিল গিরা। তাহা দেখি নন্দরাণী আইল ধাইয়া। টালমুখে চুম্বদিরা কোলেতে লাইল। বাস্ত হরে কানায়েরে জিল্পাস। কারল।। হাঁরে ক্লম্বা এক। আলি কিসেরকারণ। কোথা দাদাবলয়াম কোথা স্থা গণ।। দ্বন্দ করি বুঝি আদিয়াছ কারসনে। কে করেছে অপ মান মোর বাছাখনে।। কুম্ফ কন কার সহ লন্দ নাহি করি। যে জন্য এসেছি সাংগং নিবেদন করি।। বংসগণে সাজাইতে সাধ হৈল মনে। সেই হেজু আইলাম ভোমার সদনে। মুজ্ঞা দিরেঁ গোজুষণ করে দিব জামি। জাত্রেব জামারে মা মুক্তা দিরেঁ গোজুষণ করে দিব জামি। জাত্রেব জামারে মা মুক্তা

हिरम् जूमि। राम्या राम्या यशि इति युख्नि त्रांपन हिनम्बानी বলেবাপ এ আর কেমন।। আরেরে আবালছেলে এ কেমন থেলা। গরুর গলার দিবে মুকুচার মালা।। এক মুক্তা ব্ছ মুল্য ও নীলরতন।। নহেত গাছের ফল দিব ভতক্ষ। মৃত ঘোল নহে বাছা যক্তপার খাবে আয় ব্রহ্মবালকেরে ডাকিয়া খাঙাবে।। মায়ের কথাতে ব্যথা পাইয়া অন্থরে। কান্দিয়া कर्म कृष्ण कननी श्लाहरता। मुख्ना देशन रह्मूना व्यम्ना क्रेक्षन । नाहिनितन यनि छद्य साहै काना द्वाना। मुक्ता (इकु যমুনার পারে আমি যাব। মুক্তা লাগি পরের মারে মা বলে ডাকিব।। নতুবা অনবী এক মুক্তা দেহ তুমি। রোপণ করিয়া মক্তা রক্ষ করি আমি ॥ মুক্তা রক্ষ করি আমি মুক্তা কলাইব। যত মুক্তা চাহ মাতা তত আদি দিব।। রাণী বলে অবোধ ছেলে এতে কি রক হয়। শ্যাহীন সুক্ঠিন রক্তিবী নয়। ব্রমপুরে ঘরে ঘরে কভ ছেলে আছে। কপাল ঞ্লেত্ত विधि मन्त्रान निष्तरहा। कृषः वृदल खानि मार्गा यन महा মোরে। বান্ধেছিল চারিকজা নবনীর তরে।। তোমার যতেক স্নেহ আমা প্রতি আছে। ব্রজের মতেক লোক নয়নে प्रतिह । এठ विन वनमानी कः निष्ठ नाशिन। छा मिथिया यरणामात महा छेपिछिन ।। कर्नरेहरू अकनुका नहेंग्रा যদি নাপার করিতে। নবনীর মত পুনঃ বাবিব করেতে।। ক্লফ ভাবে জননীগেং বান্ধিবে কি তুমি। বিনং ডোরে ভোর কাছে ৰান্ধ আছি আমি।। তবে ধরি ধর যত ধ্ইয়া তথা। নাচিতে২ গেল যথা নথাগৰ । কুক কন আনিয়াছি মুকুতা রতন। ক'দিম করহ ভাই করিব রোপণ্।। শুনি গোপালের বাণী বত শিশুগণ। বসুনার ভীরে ভূমি করিল খনন। জল দিয়া কর্দিদ করিল কুজুহলে। আপনি রোপিল হরি মুক্তা সেই স্বে।। যার মারার অনিভাকে নিভাকরি মানে। মুক্তালতা কোন তুল্ছ ঘিন্দ কৰি ভনে 🖟

#### কৃষ্ণ মুক্তারক স্থলনাত্তর তৎকল ছার। গোভূষণ করেন।

भोर्च जिल्लो। मुक्लांद्रालि कर्फरमद्द्र,श्रव बदल महर्ततार অকুর ভাহাতে জমমিল।। শুনহ অপুর্ক কথা, দেখিতেই भाका, करम नहा विकटि नातिन। मात्रीधारी मात्रा देवन कर्वक मक्न रेश्न, कुछिन नजांत्र यह कुन । अस्त्राट प्रितन ব্রজ, ভূচ্ছ করি সরসিজ,লোভেতে ধাইন অলিকুন। ব্রজেতে নিবদে যার', পুষ্পাগন্ধ পেয়ে ভারা, বলে ফুল কোথার কু किटह ! किह वटन भावर्षित्म, किह वटन ब्रम्मावत्म, भूभा शक्त भारमाम करतरहा (स्था पूष्प देशन वामि, युक्पंधरत রাসিহ, ভোলে মূকা যদেক র খাল। ভধে দে চিকণকালা, আপনি গাথয়ে মালা, আর যত ব্রফের ছারাল। জীদামের ভবে ছবি; কহেন বিনয় কবি, আন রুৎস সাজান মুক্তাতে 1 শুনিয়া হারর বাণী, শত শত বংস আগনি, মূকা দিল বংসের পলেতে । বৃক্ষ পাশ্ব দেশ, মৃক্তায় করিল বেশ, প্রতি লোমে মুক্তার হালি। শৃঙ্গে আতি নাশামূলে, গেথে দিল মৃক্তা ভূলে, নাচে শিশু দিয়া করভালি।। শতচন্দ্র জিনি আভা, এক ৰক বংগ শোভা, দেখি সবে আনন্দিত মন পরে ভুলি মূকেকেল, খনে অভি কুছুচল, কুফেরে সাজান স্বৰিক্ষ । কৃষ্ণ আলেকত মনে,মুক্তা ভুলি ভছক্ষণে,স্থানৰে **प्ति मो**क्षेत्रित । यदन कामरानाः ७ (कांद्र, बारमाराम्ह नाहि ওর, শেরত নতে নাচিয়ালা। বেভি কুক বলরাম, উচ্চারিয়া হরিনাম, লাতে গায় দেয় করতালি। এতুগাপ্রানাদ কয়, बनादत यात्रकत्र, यात गर्था श्रञ्ज वनमाली ।

क्रिक्टक निकान्द्र शमन।

नेपूर्-जिलानी। पूक्छ। न ग्रां श्रिष स्टेशं सूर्य करत नट्य किन। अभन मम्ब स्था जल श्रः, ज्यान देश्न विनि दिना देशन त्यान, द्या जल श्रः, ज्यान देशन विनि दिना देशन त्यान, दिना किन्ना व्यान किन्ना विनि प्रका निला जाद्य देशन, किन्ना वह ब्रुजन। इन याहे घरतः, विना भारत्व, कहान जानि प्रकान। जात्व किहू मिल्ल

जुनिया मरक्षां , त्मर इप शृर्फ कवि । भूकुजात जोदत, मिव जननीत्त, त्रथूक खर्णत नांद्री। এতেक विनद्या, युक्छा जूनिश গাঁথিয়া সুন্দর হার। হয়ে কুতৃহলী, রুয পূর্বে ভুলি, লৈদ সবে ভার ভার।। ভবে শিশুগণ, হইরে মিলন, জাবা নিয়া উচিচঃস্বরে। মাঝেরান কাল্ল,বাজাইয়া বেণু,আনন্দে চলিল ঘরে।। বাইতে যাইতে, দেখা আচ্মিতে, এনতীর স্থীসনে দেখি সহচরী, উঠীল শীহরি, চমৎকার মানি মনে।। দেখি মুক্তাচর, হইয়া বিশার, রাধারে কহিতে গেল। হেখা নন্দলাল, লল্ল ধেনুপাল,নিজালয়ে উত্তরিল।। শুনি বেণ্ধানি, নদের ঘরণী, বাহির হইল ধেয়ে। দেখে মুক্তাময়, ভ্ইয়া বিসায়, अक मृटके द्रदर दहरता एटव नम्पतानी, लद्य नीनमान, हास-মুথে চুম্ব দিয়ে। বলে ও রতন, একি রে রতন, হেরি নাই क्रमित्र ॥ वर्त काथा शानि, अद्भ वममाली, अ (इम चयूना निधि। किवा ভোরে দয়া করে ভবজায়া, কিবা দয়া करत विवि।। श्रीष्ट्रशांधमारम, मानत आख्नारम, करह भून নন্দরাণী। কিবা ভাব বিধি, বিধাতার বিধি, তোমার এ नोलम्बि ॥

> यरभामा मुख्या मर्भाटन विष्यत इहिश श्रीकृत्यन्त्र भावीरक्ष बन्तास्थ रमस्थन।

পরার। কৃষ্ণ কন শুন মানো করি নিবেদন। তোমার প্রসাদে হৈল মুক্তার ধন।। দিয়াছিলে যেই মুক্তা করিছু রোপণ। জানাল অপুন কৃষ্ণ মুক্তালভাবন।। তাখাতে ফলিল বছ মুক্তা রাশি রাশি। আপুন চক্ষেতে মানো দেখ ভূমি আসি।। এত শুনি যশোমতী হয়ে চমকিত। চাললা কাননে তবে রোহিণী সহিত।। যমুনার তীরে দেখে অপুর্বে কানন। তার মাঝে শোভা করে মুক্তালতাবন।। বালমল করে কল অমূল্য রতন। হেরিয়া বিসায় হৈল যশোদার মন। রানী ভাবে এ কর্মাত মন্ত্রেয় নয়। পুরভাবে জনমিল কোন মহাশয়।। ভাবিছত ভাবিতে হৈল জ্ঞানের উদয়াদিব্যক্তানে দেখে রাণী হইয়া বিশ্বময়।। বিশ্বের আধার প্রভূ বিয়াট আকার। একেই লোমকুপে ব্রকাণ্ড বিস্তার।। আক্রাশ পাতাল ভূমি ক্রম্বা নাগর। নাগ নর দেবাসুর গন্ধবি খেচর।। বিধি ভব সাগর
বর্ষণ ছতাশন। অরুণ কুবের যম সোম ব্রুণনন।। কত শত
পৃথিবীতে দেখে কত আর। কতশত রুদ্দাবন মধ্যেতে
তাহার কতশত নন্দ্রোষ কত যশোমতী। কতশত ধেনুপাল
রাখাল প্রভৃতি।। কুফের শরীরে সব নিরীক্ষণ করে। জন্মিল
বিষম ভর রাণীর অন্তরে।। সাক্ষাতে পর্মন্তক্ষ পুরুষ রতন।
ভব করিবারে রাণী করিল গমন। বুঝি জননীর ভাব প্রভু
ক্রমার। আক্র্যার পুনঃ মারেরে ভুলান।। কেমুন
কুম্মের মারা আক্র্যার কথন। দেখিতে বেখিতে রাণী ইল
বিশ্বরণ। শ্রুচিল ক্রম্মর ভাব পুত্র ভাব হৈল। বদন চুয়্রিয়া
কুম্মে কোলেতে করিল।। আক্র্যার মানিয়া ভবে রোহিনী
সহিত। আপন আল্রের গেল হয়ে হর্ষিত। প্রাকুর্ণ প্রাদ

দূতী কর্তৃক প্রীয়াধার নিকটে প্রীকৃকের গংবাদ দেন।

ধুয়া। শুনশুন ওগো রাধে পিরীতের প্রশন্ন হলো। লাখের মন্দিরে বিষাদালি প্রবৈশিল।। নাহি জানি কি কারণ, কালচাঁদ হৈল হেন, আমারে হেরিয়া কেন বাঁকা আথি কিরাইল।।\*

পরার। হেখা দূতী মুক্তমালে দেখি গো ভূষণ। লোক মুখে শুনিরা যতেক বিবরণ।। ফ্রাত হরে প্রীমতীর নিকটেতে গিয়া। কহিতে লাগিল কথা বিশেষ করিয়া।। আজি গিয়া-ছিমু আমি নন্দের ভবন। পথেতে দেখিমু যাহাশুন বিবরণ আদিতে আদিতে পথে হেন জ্ঞান হয়। অকন্মাৎ পুর্বাদিকে লক্ষ চন্দ্রোদয়। স্থুকিত হইয়া আমি রহি দেইখানে। আন্চর্যা দেখিমু রাখে শুন বিদ্যামানে। গোর্চেইতে নক্ষমুত গোধন লাইয়ে।। নাচতে নাচতে আইনৈ সেই পথ দিয়ে।। মুক্তা দিয়ে মাখত করেছে ধেরপাল। মুক্তার মাখত আর যতেক রাখাল। তার মাঝে মুক্তায় মাখত রাম কামু। মৃত্ব মৃত্ব গ্রাথাল। তার মাঝে মুক্তায় মাখত রাম কামু। মৃত্ব মৃত্ব গ্রাথাল। তার মাঝে মুক্তায় মাখত রাম কামু। মৃত্ব মৃত্ব গ্রাথাল। তার মাঝে মুক্তায় মাখত রাম কামু। মৃত্ব মৃত্ব গ্রাথাল। তার মাঝে মুক্তায় মাখত রাম কামু। মৃত্ব মৃত্ব গ্রাথাল। তার মাঝে মুক্তায় মাখত রাম কামু। মৃত্ব মৃত্ব বর্ণন। আর কত ম ক্তা

ভার রুষ পৃষ্ঠে করে। লইয়াছে জননীরে ভেটিবার ভরে।। মৃক্তার আভাতে আলো হৈল চমৎকার। নিশিতে চল্ডিমা रयम हत्व जन्नकात ।। त्मर्थिया मञ्जूखिव छ हहेलाममत्म । ज्यान আনিবে মুক্তা ভোমারকারতে। আপনি করিবেহার ভোমার ভূষণ। আমরা করিব সবে স্থাখে দরশন।। কিন্তু রাধে কালা **हाँ एक एक को व का एक छि।** स्थानाद्य द्विश इति किताईल আঁথি।। শেষে শুনি লোকমুখে সববিবরণ। স্থবলে পাঠায়ে ছিল মুকুতা কারণ।। ভূমি তারে এক মুক্তা নাহি দিলে প্রারী। আর কত করেছিলে উপহাস করি।। নেই অভি-মানে মনে কোধিত হইয়া। ননদ্রাণী স্থানে মুক্তা চাহিয়া লইয়া।। যমুনার তীরে গিয়া করিয়া রোপণ। স্থান করিয়া তथा मुख्य लुखावन।। भूटन कमलिनौ टेश्ल विषश्च वनन। অবাক ইইয়া মূবে মা সরে বচন।। রাধা কন মৃক্তা জভ नाहि ভाবि छृध्ये। वृति नम्पयु अादत स्टेन देवभूथे।। शक्र ভামি কি কহিলাম স্থবলে ভগ্নিয়া। মুক্তা না দিলাম কেন ভ্রমান্ধ হইয়া।। ভুচ্ছ ধন হেভু কৃষ্ণ ধনে ভুচ্ছ করি। ধিক এ जीवरन चामि रकन व्यान धात ॥ रमाना रकतन मिलाम कि অঞ্চলেতে গিরে। প্রমন্ত ইইয়া পুন্য না চাহিন্ত কিরে॥ দোবে রোধিয়াছে ছরি আদিবে কি আর। ভবে বল এ कीयत्म कि कल आभात ॥ यन ध्रां गहाती कि कवि छ-পার। জ্রীক্রফের বিরুহেতে বুঝি প্রাণ যায়।। কি করিতে কি হুইল না বুঝি কারণ। আমারে ত্যজিলে কি হে জীমধুপদন এত বলি কপালে আঘাত করে প্যারী। দিল বলেকর্মঞ্চণ हावाहरल हति।।

ললিতা এমতীকে ভংসন। করেন।

ধ্যা। এখন কান্দিলে রাধে উপায় কি হবে আর। হারাইলে নটবর তুমি দোষে আপনার।।

, भीर्घ-जिनमी। তবেত लनिका धर्मी, करिए छ निमा वागी, अभिकोदत कांत्र मध्योधन। मुक्का वस्त्रमा कांत्र, अमना

कदित्त रति, ভाবित्न कि रहेत्व बर्थन ।। मुख्या (रज् सूर्वन এলো, না পাইয়া কিরে গেল, লোকে মুধ দেখাব কেমনে। পভিল विषय मात्र, नाहि (मिश मह्मात्र, हाताहरण वृद्धि क्रक धरन् ।। जात नापाहरव रमशं, ना जानित्व रमह मथं, क्षेत्रांन कर्तित वित्नारिमी । खक्रमाथ (काश देवन, मक्नि विक्न टेहल, वल मिर्च कि कड़िटव धनी।। ज़श्कादत इटम मस, পাবরিলে বব তত্ত্ব, জনিতা ভাবিলে মিভাধন। ধন মদে मख हिला, छेडिछ তাহার পেলে, पर्शशी श्रीमधु सूपन।। শেই যে নীলরতন**ং একার চুল**ভি ধন **ভুচ্ছ ধন হেভু ভুচ্ছ** কর। যেমন করিলে গর্কা, হইল তাহার থর্কা এখন কান্দ্র नित्र हत ।। श्वनि लिल्धित वांगी, क्यांन्य कटर क्यांनिमी अख-द्वार शहिया यांचना। क्रात्केव विवृद्द खात, मना पिर मर्क করে, আর তাতে কর না লাঞ্ছনা।। স্মরিলে কালার কথা। হাদয়েতে পাই ব্যথা, প্রাণ সদা কান্দি কান্দি উঠে। দে कालाग्न करल मतिः पिलनारका मश्हतीः काछ। यास नवरनद ছিটে।। হয়ে আছি শ্বাকা:,শবের উপরে আরু, অন্তাঘতি করিলে কি হবে। একবে উপায় কর, মিলাইয়া নটবর। - द्रांशाद्र किनिया दार्थ मटवा तामहत्त्र भूद श्रम, बिहुर्शः । ध्यनाम नाम, खनरहरू ভाবि वनमानि । त्रविशा जिलमी एक, भाँ। हानी कतियां वन्त, श्रन्थ करत मुख्यवनी।।

#### স্থীগণের মন্ত্রণা া

পরার। রাধাকে কাতরা দেখি যত স্থীপন। মন্ত্রনা কররে ক্ষ মিলন কারন।। কুদা কহে ললিতা গো শুনহ বচন। গত অনুসূচনাতে নাহি প্রয়োজন। কুফের বিরহানন হইয়া প্রবল শুকাইল রাধিকার শ্রীমুখকমল। আর তাহে বাক্য অসুচিত তার। এক্ষণে মিলন হেতু ভাবহ উপার। এমন উপার তার করহ এখন। রাধার সন্মান খাকে শিলে কৃষ্ণ ধন।। কালি প্রাতে উঠি জল আনিবার হলে।। চল সবে ঘাই মোরা যমুনার জলে।। জলের হলেতে গিরা মুকুতার বন। যত মুক্তা লহা পাতা করিব হরণ।। মূল সহ

একেবারে করিব ধে চুরি। তার অন্তেবণে বাস্ত হবে নর
হরি।। বাস্ত হরে কালাচাদ ভামিবে যখন। আমরা কহিব
তবে ইঞ্চিত বচন।।কমলিনী লইয়াছে মুকুতা হরিয়া।তাহা
ভানি ভ্যাকেশ আমিবে রুষিরা।।রোধে ভউক তোঘে হউক
আইলে এখানে করিতে পায়িব তবে মিলন বিধানে।। গৃহে
এলে নটবরে নানা কথা কব। উল্টিয়া রাধাকান্তে রাধারে
সাধাব।। এতেক মন্ত্রণা করি রজনী বঞ্চয়ে। প্রভাতে যমুন
নার যায় সকলে মিলিয়ে।। শ্রীতৃর্গাপ্রদাদ কহে শুন স্থীগণে
চোরের বিষয় চুরি করিবে কেমনে।। কটাক্ষেতে মন চুরি
করেছে যে জন। কেমনে করিবে চুরি সে চোরের ধন।।

बुक्तांवन तकरा श्रीनामान नियुक्त ।

দীর্গ-ব্রিপদী। এখানেতে নারায়ণ, জানিয়া স্থার মন, প্রাভঃকালে উঠি স্থরা করি। হয়ে অভি জ্ঞভমন, গঙ্গে লয়ে স্থাগণ,গোর্চেতে চলিল নরহরি। বিলা শুগমলী রবে,ধের বংশু লয়ে তবে, উপনীত যথা মৃত্তাবন। দেখিয়া অপুর্বা মতি, হরিষ হইয়া অভি, প্রীণামের প্রতি হরি কন।। শুন মথা মোর বোল, নাভি হও উতরোল, বৎ সের চারণ আমি করি। হয়ে অভি সাবিধান, বক্ষা কর মৃত্তা বন, কেহ যেন নাহি করে চুরি।। এতবলি জনাদিন, সমপিরা জানে, শিশুর নিবীজ্ বনে, গোলা হয়ি বং সের চারণে।। এইরপ নক্ষরতে মনে ভাবে করু মত, লীলা করে কছু কব তার। আনাদি অনন্ত বিলু, অনাথের নাথ প্রেলু, যার লীলা ব্রহ্মাণ্ড বিস্তার।। প্রীর্গাপ্রসাদ বলে, শীক্ষাকের পদতলে, দয়া কর ভক্তবংসল শিশুর পুরাও আশা, কর প্রভু নিজদান, অতে দিয়া চরণ ক্ষান।

नथीतरात स्कावत्न गमन ७ श्रीमारमत मर्ग।

্পুরা। আজি ধরা গেল ভাল মনচোরা নারী। ভাঞ্চিল গুসান এবে যদ,ভারিভুরি॥ প্রকাশিয়া ভারিভুরি, ক্ষুধ্ন কর চুরি, নাজান গে নরহরি, যেই ভলে ভারি॥

भग्नात । जन जानिवात हटल एक मधीनन । छेनेनी क देशन গিয়া যথা মক্তাবন।। দেখিয়া মুক্তার শোভা অতি মুশে।ভন बक हिछ इत्य गत्व कर्द्र निवीक्षण।। अवाक इहेग्रा गभी कि-किर तरिता भीति भीति मुख्यावत्न क्षत्विमन निता ।। मुक्छ। হরণ হেতু করিয়া মনন। চমকিত হয়ে সবে করেন জমণ।। হেনক। লে রাথালের। দেখিয়া সত্তর। কের ফের বলি শব্দ করে যোরতর ।। অসি ঢাল খাড়া টাঙ্গী হত্তেতে লাইল। অতিবেদে দেইদিকে ধাইয়া আইল ॥চৌদিকে ঘেরিয়ে সবে করে মহা সোর। কেন্ন বলে দেখে। রেন না প্রায় চোর।। কেহ ঢাল খাড়া বাাপে কেহ যে। ছে ভীর। দন্ত কটমট করে কম্পিত শরীর।। কাট কাট মার মাব বলে কোনজন।কেহ বলে করে করে করহ বন্ধন ।। কেহ বলে সাব্ধানে ধ্র cetat নারী।খাজির করিব লয়ে কংস বরাবরি।।এইক্পে রক্ষকেরা করে যে ভক্তন। মহাভয়কর স্থান হৈল মুক্তাবন।। দেখিয়া স্থীর মনে উপজিল ভয়। ২েটমাথা করি সবে শুকা হয়ে রয়।। তবেত জ্রীদাম কছে কোপেতে ক্র্যিয়া। জ্রীমতীর দূতী गथी इन्लोद्य क्राहिशा । नाती हरत क्रूबिकर्य कत नित्रस्त । আজি ধর। পড়িয়াছ শিখাব সত্তর।। আমাদের সর্বধন নন্দের নন্দন। চোরা প্যারী কটাক্ষে হয়েছে ভার মন। চিরকাল আমানের ধনে ভোরা বৈরি। পুনরপি আসি সবে মুক্তা কর চুরি। নারী শ হউলে কল পাইতে তৎপরে। অংপনার মান লকে পলাও নত্তরে। সুবল কহিছে পুনঃ পূর্বে রাগ স্মার। কোন বুলে পার্লি ভোরা মৃক্তা করিস চুরি।। এক মুক্তা माभिता ने मह कुछ कथा। एमं कथा स्मित्र छ देश्टन महन भाहे ব্যথা।। প্রস্তুও পলাও সবে কর নিজ কায়। নারী হয়ে চুরি কর্ত্তে লাক বাস লাজ।। মনে ভাবিয়াছ বুঝি পাবে ক্ঞ-निधि। भारे मिटन रा वागना घुन्। हाटह विधि ।। जात मा পাইবে कृष खनगाँदांक'त । व्यापनात मान लात वाह निका পার।। এতেক শুনিয়া বাণী যত স্থীগণে। বাং করে ঝুরে বারি কমল নরনে।। রাখালের স্থানেতে পাইরা অপনান। কালিতে কান্দিতে সবে করিল পদান।। মনে ভাবে কোন

ভাবে পাব কৃষ্ণধনে। তিজ বলে কৃষ্ণৰূপ সদা ভাব সনে।। ভজের পরাণ কৃষ্ণ ভভেত্র জীবন। ভজিতে ভাবনা কর পাবে কৃষ্ণধন।।

🛍 কুক মিলনাশে গোপীগণের উপার চেন্টা। श्रांत । তবে मथीना किं वियोगिक मदन । मिनि विनन् সুবে আপন ভবনে।। কোনমতে কুক পাব করেন ভাবনা। পুনরপি বৃন্ধ। ছতী কবিলা মন্ত্রণ।। কালি পুনঃ যমুনার वानियादा कल। कृषीय अश्वकारन मकरनए जनारिकारन विभीत इति खिमत्व यथन । व्राधा लद्य त्मरे भर्ष कतिव शमम ।। अपमारी वाधिका श्रकाणि निष्कुण । वन्ति कविदिक সেই জ্রীগরির মন।। প্রথমেতে রজোঞ্চণ করিয়া দঞ্জ।করিব ক্রকের মনে রসেরউদয়া। তাহাতে কটাক্ষ বাণকরিয়া সন্ধান বিক্সিয়া অধিনবে পাারী একুফের প্রাণ।তাহে যদি বশীভূত হয় নরহরি। পুনরপি তমোগুণ প্রকাশিত করি।। জাঁখি ঘোরতর করি বাড়াইল মান। ধরিয়া ধরির মন করিবে থ-য়াৰ!। সে ভাবেতে যদি নাহি ভূলে জীনিবান। ভবে আছে সম্বর্ত্তণ করিবে প্রকাশ ।। ভক্তিডোর দিয়ে বন্দি করি নারা-য়ণে। তথনি আসিবে সংয় আপন তবনে । সম্ব তত্ত্বময় সেই প্রভূ নারায়ণ। না পারিবে ভ**ব্দি ডোর করিতে ছে**দন।। বা ক্সিয়া আনিবছরি কি ভাবনাতার। তিনি গুণমরীমায়া গুণেতে রাধার।। এতেক মন্ত্রণা করি সে দিন থাকিয়া। পরদিন গৃহ কর্ম সব সমপি রা। ভোজনাত্তে একতে মিলিয়াস্থীগণ। জল আনিবার ছলে চলিল ছখন।।

### ব্দিফের মনোহন ৰূপ ধারণ।

পরার। এখানেতে শ্রীনিবাস জানিলা অন্তরে। আসি-তেছে গোপীগণ ভুলাবার তরে। কটাক্ষ করিয়া চাইং আমা ভুলাইতে। ইংরি উচিত কল শীদ্র হবে দিতে।। এত ভাবি নারারণ হৈল মনোহন। ছেরিলে হইবে মোহ গোপীকারমন মারীধারী মারা করে অপুর্ব্ধ কথন। যাহার মারার মূর্ণ ও ন ভুবন।। যে মারাতে মোহ প্রাপ্ত বিধি শুক্রাণি। নেই

হরি ব্রহ্ম কর্প ধরিলা আপেনি।। নিকটেতে বসি যত ব্রজনিশু ছিল। দেখিতে দেখিতে ভারা চতুতু জ হৈল। মৃগ করি অশ্ব আর শলকী। অমরা কোকিল শিখি চতুতু জ দেখি।। অম্য পক্ষ শলভাদি চতুতু জ সবে। তৃণ গুল্মালতা রক্ষ সবে ব্রহ্ম-ভাবে।। কত দুরে হর্ণ অট্টালিকা নির্মাইলা। শভ লক্ষ পুরী হরি তথার করিলা। কিবা সে পুরের শোভা কে বনিতে পারে। অপুর্ব পতাকা উড়ে গুলের উপরে। হানেহ মাণিকা বেদিকা শোভা পায়। কাঞ্চনে নোপান বদ্ধ উজ্জল ভাহায়। শেষ কক্ষে রভু মিংহাসনের উপরি। বাসলেন রাধাকান্ত লক্ষা সজে করি। প্রভিদ্ধারে এক এক রাধার প্রহরী।। লাজভাবিশাখা আদি সজে সহলরী। কি কব যে রাধারপ বুঝ অনুভাবে। ব্রভাতু নন্দিনী হেরিরা মোহ যাবে। এই ব্রেপে চক্র করে রহে চক্রপানি। হেনকালে স্থী সহ আইল ক্মালনী।।

#### **এ**। প্রাথার লোকে গমন।

লম্ ত্রিপদী। হেথা কমলিনী, লইয়া সঞ্জনী উপনীত গোষ্ঠ মাঝে। না দেখিয়ে কালাঃ হইল বিকলা, হান্য সরসী রাজে।। না দেখি গোধন, নাহি স্থাগণঃ নাহি কিছু পুর্ব ভাব। নাহি বন্তর, ময়ুব চকোর, কোকিল ভ্রমর রব।। সে সব আকারঃ নাহি কিছু আর; নহে যেন রন্দাবন। বৈকুণ্ড স্মান,হেরি লে স্থান,চমকিত হৈল মন। যে দিকে নেহারে সেইদিকে ভারে, দেখে চতুতু ধ্বময়। নব জলধর, রূপ মনো হর, শভাত্ত শোভা হয়।। দেখিয়া সে রূপ, ভতি অপরাপ, রাধার জন্মিল ভয়। হইল অবাক, নাহি সরে বাক, মনেতে জন্মে বিন্ময়।। হার একি দায়, শলাম হেথায়,এ স্থান বিষম দেখি। আমারে ত্যজিয়ে, নির্চুর কালিয়ে, কোথা গোল বল দেখি।। করেছিয় গর্ল, ইল সে থর্বা, বল কি উপায় করি। কালার বিরহে, সদ। মন দহে, বুঝিগো প্রাণেতে মরি। বলিতে কলিভে, হৈল আচ্ছিতে,যেন পাললিনীপ্রায়। কুক্তে ভার্যিয়ে, বেজায় ভ্রমিয়ে, বিজবর ভার্যা গায়।।

### প্রীরাধিকার শ্রীকৃষ্ণ বিরহ।

धुत्रा। नात्थत विष्ठ्रित नथी वृत्व भागिनी इहै। कि हरेन छाउद (मात वृत्वि छ ना भार्ति गरे। आमि ला कवना वाना, ना मदह विद्रह काना, विद्रम मि किन काना, कम्मान कीवदन दुरे।

পয়ার। जीकृष বিচেত্দে মুগধা হয়ে কমলিনী। জমণ করেন তথা যেন পাগলিনী।। সন্মুখেষতেক দেখে রুক্লতা ফুর্ল। জিজ্ঞানা করয়ে রাধে ১ইরা ব্যাকুল।। মাধবী লতার প্রতি কহিছে কিশোরী। তুমি কি দেখেছ মোর প্রাণ কাল হরি।। এই যে আছিল তব নিকটে ব্যিয়া। স্থাগণে সাজা ইন তব কুল দিয়া।। আম রে দেখিয়া নাথ অদেখা হইল। কহ কহ মাধ্বী গো কোথা লুকাইল।। নাথের বিরহে মোর বিদরিচে হিয়ে। ভুমি গোমাধবী বট মাধবের প্রিয়ে ।। তবে কেন মোর বোলে উত্তর না দিলে। স্থপত্নী বলিয়া বুঝি বিব দ সাধিলে।। পরে ধনী ধেরে যায় যথা রুক্তকেলি॥ কহিতে লাগিল কিছু করে ক্রুজ্ঞাল।। ক্লঞ্জের নামেতে তব नाम जामाभून। अवना जानश जूबि कृरकः वाञ्चन। कनस्य কহিছে ধনী করিবা মিনতি। সর্বাল তোমার মুলে নাথের বসভি।। পদচিহ্ন পড়ে আছে নেখি ভব হেখা। কহ কছ कमञ्च (इकुक्क (तल (काथा।। अटमाटक व्यथित्री भारती गांत ত্বরা করি। জালিঙ্গন করে গিয়া অশোকেরে ধরি। বলে ধনী তব নাম জানিহে অংশ:ক। তোমারে ধরিয়াকেন বাড়ে মোর শোক।। অন্তত্ত্ব করি পূর্বে আছিল অশোক। नारथत वितरह वृत्वि श्राह्म गरमाक ।। न बूबा चरमा क दकन ভোরে দিয়া কোল। বন্ধুর বিচ্ছেদ খুল হইল প্রবল।। এই बर्ल वरमवरम कत्ररम्खमा। (रमकाटन मिर्थयं हिष्कू ब्रान জ্ঞত হয়ে ওখা গিয়া জিজাসয়ে কথা। ভোমরা দেখেছ সোর প্রাণকান্ত কোখা।। অভিন ক্লফের বপু দেখি ভোমা দবে। अञ्चेद वृत्रि (य क्रूर्कात किर श्रम ॥ अध्या निर्वाम कर्त्र महान्य । कृत्कत विवदर त्यात महित्य खनम् ॥ मोतीकारि ना वृश्चित्रा करहे हिस शर्स। त्र शर्स णामांत करव रहे ता हि थर्स। करता ना स्थरत शाहे किया त्र क्रणास । जत्य जामार श्वामा वाल हे हिर्दे भास ॥ यहा शि क्षामा शा का मानर महाना । वल किया जामार श्वामा । वल विकास कर्मामा । वल विकास कर्मामा । क्षामा विकास कर्मामा । क्षामा । क्षामा विकास कर्मामा । क्षामा । क्षा

#### জীরাধার মোহন।

ধুয়া। কোথা হে কালিয়ে দোণ রাধিক। মনোরঞ্জন।। ভাধিনীরে দয়া করি দেহ দরশন।। ভামি বানি ভামি রাধা, ভোমার অক্ষের ভাধা, এবে হেরি রাধা, এ ভার কেমন।।

প্রার। কান্দিতে কান্দিতে প্যারী ভ্রমে সেইবন। প্রীক্ ক্ষের মায়া প্রী হৈল দরশন।। কহে কমলিনী শুন রন্দা সহ চরী। এই পুরী মধ্যে গিয়া লুকায়েছে হরি।। ঢল চল শীঘ্র যাব পুরীরভিতরে। অবল্য পাইব মোরা সেইনটবরে।। এত বলি স্থী সঙ্গে চলে কমলিনী। ছৌবিরিকা দেখে ছারে অ পুরুকাহিনী স্থবর্ণের ছড়ি হাতে সঙ্গেহচরী। বিদয়া আছেন ছারে হইয়া প্রহরী।। আপন আকার প্যারী দেখে সমুদয়। আপনার স্থী সম দেখে স্থীতর। কিন্তু কল আপনা হইতে সমুর্জল। নানাবিধ অলম্বারে করে বলমল।। দেখিয়া কি-লোরী মনে হইল বিশায়। নির্ব হইয়া ধনী একদৃষ্টে রম মু তাহা দেখি ভৌবারিকা জিল্লাসা করিলা। কে ভূমি কোথায় থাক কি হেতু আইলা।। বার বার রাধিকার করিছে নমনে। ছৃহ্থিনী স্মান ক্রিম ভ্রমিতেছ বনে।। শুনি ক্ষলিনী ক্ছে खन को वारिनो। कृत्युत श्रियांन नाम त्रांचा विदनानिनी !! ব্রুলেতে বসভী রুষ ভাক্র কুমরী। কাভরা হয়ে ছী হারাইয়া বংশীধারী। অহঙ্কার করেছিল নাথের উপরে। সেই হেডু প্রাণকান্ত ছাডিয়াছে মোরে॥ তার অস্বেবণে আমি জমি তেছি বৰে। দেই হেতৃ আইলাম তোমার সদৰে।। অনুপঃ করি পুরে আছে নরংরি। যদি দ্বার ছাড় ভরে দরশন করি। নাথের বিচেছদে মোর প্রাণ বাহিরায়। দরাকরে জৌবা-तिनी प्रथा**ड** ভाष्टाइ।। भूनि छोतातिका दाधा कटह दांधा প্রতি। রাধা নাম ধর কোন ত্রছেতে বসতি। এথানে কমলা কান্ত কমলা শইয়া। বিহারকরেন সদা বিরলে বসিয়া।। শত ভারে শত রাধা আছে ভৌবারিণী। আখার আছেয়ে যাধা व्यवर्ग ना स्थान ।। रकान मधी जामि श्रीम के रमशी अरव । **(मर्थ (मर्थ व्यानिश्चारक दाथा नाम धरत ।) (कमन कूरक**े माहा কে বুঝিতে পারে। আর কি আছমে রাধা ব্রক্তাপ্ত ভিতরে অবাক হইয়া সবে করে উপহাস। তাং। দেখি কিশোরীর व्यक्षिक क्रुडाम ।। उटव क्वोवादिनी व्र'वा कटर मग्राक्ति । यांड যাও পুরী মধ্যে দেখ পিয়া হরি। কিন্ত এইমত আছে শতেক তুয়ার। শতেক প্রংরী বাধা আছয়েতাহার॥ স্বাকার নিক টেতে হবে কুডাঞ্জলি। তবে সে দেখিতে পারে প্রভু বনমালী এই কথ শুনি পারী চলে তৰক্ষণ। অক্সভারে গিয়া তবে দিল দর্শন। সেখানেতে এইকপ পরিচয় দিলা। ক্রমেই শত ভাবে প্রবেশ করিলা।। প্রতিভাবে পূর্বমন্ত উপহাস করে ৰেখিয়া শিক্ষাধ হৈল রাধার অন্তরে। মনে ভাবে গর্ক আমি করেছি যেমন । ভাহার উচিতফল পেলাম্ তেমন। অনাথের नाथ हित अन्य ननारन। याहात है छात्र इत ध रिन पूरन।। রাধা স্তি করা তাঁর কোন বড় ভার। না বুরিয়া নিজ মনে করি অহস্কার।। এত ভাবি রজ তম গুণ তেরা নিল। সম্বঞ্জণ कानि काल फेनशक्रेन ।। एटव करकटन द्रारे अटबिनश भूदत স আৰু পরমত্রত্ম দরশন করে। ত্রতার্কারপে বিরাজিত কমল-लिहिन। कंगला क्रबन विमिह्न (मनन । औत्राष्ट्र बच्चांश्व পুन दे करि परमान । यु छ्छ इहेशा भून दे भए ए एन हैका। कि

ক্ষিৎ বিলয়ে ধনী চৈতন্য পাইলা। ক্লান্তেব্যন্তে নারায়ণে স্তৃতি আর্ডিলা। শ্রিড়গা প্রদান বলে শ্রিক্ট চরণে। পুর'ও শিশুর আশা প্রস্তু নিজগুনে।।

### জীরাধা কর্তৃ চ জীক্ষের স্তব।

দীর্ঘ-ত্রিপদী। ব্রহ্মরূপ হেরি ছবি,কর্যোড় করি প্যারী স্কৃতি করে অনেক প্রকার। তুমি ব্রহ্ম ভূমি শিব, তুমি শেহ ভুমি জীব,ভোমা হৈতে এতিন সংগার।। স্থাবর জন্ম জল, ভুমি শৃত্য ভুমি স্থল, চারচর ভূচর খেচর। ভূমি নাগ ভূমি পক্ষা ভুমি যক্ষ ভুমি রক্ষা, দেব সুর গল্পর্য কিন্নর !। ভুমি গুলা ভূমিলতা, ভূমি রক্ষ ভূমি পাহা, ভূমি নর্ম জীবের জীবন।। ভূমি শ্কন ভূমি স্থল, জুমি অগ্র ভূমি মূল, ভোমা হৈতে ত্রক্ষাপ্ত হুজন।। তুমি তন্ত্র তুমি মন্ত্র, তুমি বিভাগ তুমি যন্ত্র, বান্তকর আপনি কুমারী। ভুমি ব্রিজগত কর্ত্তা, ভূমি নারী তুমি ভর্তা, আমি নারী কি বলিতে পারি।। তুমি স্বর্ধ্য তেজো রাশি, নক্তেতে তুমি শশী, শাম বেদ তুমি গদাধর ইন্দ্রির ম্ন ভূমি, ভূমেতে চৈতক্ত গামি, একাদশ রুদ্রেতে শঙ্কর।। বসুর পোবক কয়, পর্বতেতে হিমালয়, পুরোহিত ভুষি বৃহস্পতি। দেশপতি ক্ষক্ষমানি, নদিতে সাগর জানি, মহর্ষিতে ভুগু মহামতি।। সিদ্ধিতে ক'পল কয়, অশ্বে উচৈ প্রবং হয়, রুক্ষে হয় ভাষণ্য গণন। হন্তী মধ্যে ঐরাবত, পদ र्व्हाट हिन्द्रवर्शनविश्वाचि नावन उपाधन । कांग्रह्माट विद्या-ৰূপ, নৃপ মধ্যে ভূমি ভূপ, কাম্ধেকু ধেকুতে বাথানি। मर्लिट वासूर्क इंड, नार्शिट अन्छ कड, वक्राविष्ठ यानव काश्वि। अञ्चरत श्रक्ताम कू म, मृत्र निश्ह कामि कामि, পক্ষতিত গৃত্বভূ ধর নাম। বিদ্যুতে অধ্যাত্ম যেই, স্তোতবা জাহুবা সেই, শস্ত্রপাণি ভূমি হে জীরাম।। জপ যক্ত সমদন, ভুমি সে নিয়ম ধম, তব তাণ ত্রিঞ্প অভীত। আছহ গৃইবি व्याप्त्रः निश्च नर कान क्ष्मः निज्ञाकां नकां व विष्ठि॥ ক্লাথের নাথ প্রস্কু, ফবিল ব্রন্ধাণ্ড বিস্কু, গুণাভিত তুমি গুণ

ধাম । আমি জতি মৃত্যতি, না জানি ভকতি স্তাহি, তৃঃথিজনে
না ইউও বাম।। কুলনীল তেয়ারিয়ে, তোমার শরণ লৈয়ে,
নাম ৈল রুখা কলজিনী। তোমা বিনে নাহি জানি, মোরা
যত জাহিরিনী সর্যক্র ওবে যায়মনি।। পঞ্চ মুখে পঞ্চাননে
ক্ষণ্ডণ নাহি জানে, বেদ মুখে বিধি না হি পায়। হড়মুখে
যড়ানন, তার জন্ত নাহি পান, এক মুখে কি করি উপায়।।
মুদিয়ে যুগল আখি, স্তুতি করে বিধুমুখী, দয়া উপজিল
মনে। আপনি উঠিয় হরি, শ্রীমভীর করে ধরি সাস্ত বরে
জনিয়া বচবে।। শ্রীত্র্গা প্রসাদ বলে, শ্রীক্ষের পদতলে,
সদা কর ভকত বৎসল। শিশুর পুরাও আশা কর প্রভু নিজদাস অন্তে দিও চরণ কমল।।

#### অথ একুষ্ণ রাধ'র প্রতি সদর।

পश्रत । खटवट इहेश कुके क्षक्र नाशायन । मत्याहन कान ভবে করি সম্বরণ। দূরেগেল মায়াপুরী ছারী চতুছু জ। পুর্ব মত হৈল প্রভু সুন্দর ভিভূজ। ভাপনি উটিয়া তবে জীমধু-सूपन। ब्लीमजीत करतथित करःन वहन। स्थित्र अर्थाविद्य কেন এত স্তৃতি। তবলাবে বদ্ধ আমি আছি গুণবভী। তো-मात्र आमात्र कञ्च नाहिक अथाएन। कि कांद्ररा क्यानिनी अख क्त र्थन ।। श्रीकृष्ठ कार्यत्र कांधा त्रांधा विदर्भानिनी । कांश्रम নিগমে বেদে এই কথা শুনি।। ভোষার অধীন আমি আছি চিরকাশ। তোমার কারণে এজে ২ই নন্দ্রশাল। স্থিরহও ভয় ভ্যাক্ত চাহ একরার। সন্মুখে দাড়ায়ে দেখ 🕮 কুক্ত ভোষার এতেক বলিলা যদি কোমললোচন। আত্তে ব্যক্তে কমলিনী मिलिना नहन ।। जारि (मटन (करिश धनी श्रुवंबल नाहे। সন্মধে দাড়ায়ে আছে নন্দের কানাই।। জীগাম কুবল জাদি दृश्यि युक्तिवन। व्यम्। दृश्यात्नद्वा मत्व हताय्रताधन । नाहिक শে সুব ছারী নাহি সেই পুর। ছেখিলেন ক্মলিনী নিজ ব্লুজ ভবে স্থীগণ কছে রাখারে চাহিয়া। হায় হায় কি र्ह्यत्रमात्र दकरेनल हित्रा॥ जहहतीनटनत दम्बिश दक्कान বৈষ্ণবী নায়াতে ছবি তথ্যিত্বান। ছুৱেৰেল পুৰ্বভাবহ ইল

खनाव। करतर्वधित्रां कृष्ण वाषाद्यां छातः। তবে द्वि शिवां कर्र द्वि श्रम् छातः। य द्वि शिवां कर्र द्वि श्रम् छातः। य द्वि श्रम् करिता क्ष्मा निक्रमानी वर्षाः। क्षियां निक्षमानी वर्षाः। क्ष्मिता निक्षमानी वर्षाः। क्ष्मिता निक्षमाना । व्याप्त । व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त । विक्षमान्य व्याप्त । विक्षमान्य व्याप्त । विक्षमान्य व्याप्त व्याप्त । विक्षमान्य व्याप्त व्याप्त

ख्य जीताथात मधीनन महिल कुछवरन नमन।

পরার। গৌরমুখ কন পুনঃ করিয়া মিনভি। যে কহিলা कुक कीला अथुर्व जांत्रो ॥ जम्खद्र कि स्ट्रैल कर महामन्। भूमिए श्रुतात कथा वष व छ रव ॥ गामान कन भूम अभूम ज्दाधन। **बिक्स वहत्म जुकी ह**द्य नथी ग्रन। जालन क्रवत्म ভবে আইল কিশোরী ৷৷ ক্রমে ক্রমে রবি অভ্যে প্রবেশে শর্করী।। কুষ্ণের সংহতে কাল হৈল আগমন। দেখি রাধা गृहकर्मा करत ममालन । मधी मरक कदि लाती लाल। कुछ-बदन। कत्रदा वामत मच्छा यन मधीनरन।। कुकुरल जुरल সবে ফুল নানা জাতি। মলিকা মানতী জাতি যুখি কেয়া-পাতি। টগর ভাগর কৃষ্কেলি রামকেলি।। আট পাঙ্কল (यन बकून निखेन।। जारमांक क्ल्भिक वक याथवी तक्षा। ভক্লতা সুষ্যমুখী পদাদ কাঞ্চন! গোলাপ অপরাজিতা পরি পাটি কত। গুলঞ্চ কবরী গানদা তুলে শত শভ।। তুলিলা অনেক ফুল গল্পে আমোদিত। যার গঙ্গে অলিকুল সদত মোহিত। এই ৰূপে নানা ফুল তুলিয়া যতনে। গাঁথিল অপুৰ भागा कृत्कत्र कांत्रर्गः। छात शत वह्यकूर्ण कुछ गांकारेन। কুলের করিয়া শ্যা। মুখ্যেতে রাখিল।। তদন্তরে স্থী সবে আনিনিক্ত মনে। 🕮 মতীকে ফুল দিয়া বাজায় যতনে।। এইরপ গোপিগণ বাসর সাজায়ে। রুক্তের আখানে রছে পथ निवृत्थित ॥ दहमकारन कमनिनी मधिशदन क्य । अना व

জনীতে হরি জাসিবে নিশ্চয়। কিন্তু বড় অভিমানে ররেছে अलुद्ध । विना स्मार्थ अभयान करवरहन स्मारत । यमि वन ভাইস্কারে করেছিল গর্ম। নেই হেতু কালাচাদ করেছেন খর্ম किन्छ त्म गद्रदित मुन मकनि त्म कन। विवादनात्व द्याबी भारत देकना किकांतन ।। वृक्ष माकी बटल बाटक नदाकात्र" ঘটে। যথন ঘটায় যাহা ভাই আদিরটে।। দোবঞা যত বল সকলি তাহার।তবে কেন অপমান করিল আমার।। এই (क्छू मत्न वक्ष क्य कांचमाना कि किए कतिवनशी हेशांव वि-धान ।। श्रथरमण्ड नहेवत् र पथा नाहि पित । श्रकात श्रवत्ह्व সবে সন্মুখে রহিবা। ভোমরাত অউদখী আমি একজন।নয় करन धकरेजरा रहेशा यिनन।। नवनावी यिरण हव अशुर्य কুঞ্জর। কুঞ্জর কপেতে রব কুঞ্জের ভিতর।। তাহা দেখি কা-লাচাদ কি করে দেখিব। পরেতে মনের কাধ সবে, পুরাইব করিবাপে প্রাণকাতে পুর্ষ্ঠেতে করিয়া। ব্রঞ্জের বিপিন মাঝে বেভাব বুরিয়া । শুনিয়া রাধার বাণী সবে দিল যায় । মুক্তা লভাবলী গ্রন্থ ভিজৰর গায়।।

অথ নবনারীরর কুঞ্চর রূপ ধারণ।

প্রার। তবে রক্ষে স্থা সঙ্গে মিলিয়া শ্রীমতী। হইল নিকুঞ্জে এক অপুন্দ মরতি।। আদাশক্তি ময়ী রাধা শক্তি বিশু।
রিলা। রুন্দ আদি চারি স্থা উঠি দাণ্ডাইলা হয়ে ভাগমত।।
তার হইয়া মিলিত। ছই দিকে দাড়াইলা হয়ে ভাগমত।।
উভয়ে উভয় পদ একত্রকরিয়া। নীলায়ুরে গুল্ফাবির রাখিল
ঢাকিয়া।। এমনিভিদ্ধতে রাখিলেক পদ ফের। অভিন হইল
থেন পদ কুঞ্জরের।। পরে ভিন স্থা উঠে মধ্যভাগে রয় ।
পরস্পারে গলেহ সকলে ধরয়।। গলা ভাবলয়নেতে করিয়া
নিভ র। যোগাসন করি পদ তুলিন সম্বর।। পদেহ তিনলনে
সংযোগ রহিল। পাশ্র স্থা ধরি তাহে কিঞ্জিৎ তুলিল।।
কক্ষভলে রাখিল পদের যোগাসন। তিন মাথা উঠি হৈল
কিঞ্জিৎ তথন।। তিনজনে সমতাগে এমতিরহিল। মাতক্ষের
বক্ষজা ক্রমে জানাইল।। তার পর শুন আর অপুর্ব রগম।

সন্ম ভাগেতেছিল সধী ষেইজন। তাহার মন্তকে উঠিলেন अके धनी। माथामाथि करत् (सार्ट् तहिला अमनि।। कतीत সমান তুও মুণ্ডেতে করিয়া। ওও হেতু বাম পদ দিল ব্লা-हैश्री। मिक्तित्व कालू त्महे मधी वटक थुदत्र। वाथिन मौकन পদ বিশ্বিম করিয়ে।। মাতক বদ্নসম হইল ভাহাতে। ভবেত नम्भूथ मधी ভाविला मटनटा। विहाबिमा विनमिनी वाष्ट्रांस ছুহাত। অভিন হইণ ছটি কুঞ্জরের দাঁত।। পাশাপাশি করি क्ष्यु द्वारथ स्विनत्न। इंखिनीत नम क्ष्यु (मथात नम्हामा। कर्नेत्र क्रांतरन ভरव मरम विहातिहा । नीमाञ्चत अक्षम नित्नक সুরাইরা।। ছই পার্দ্ধে হেন ভাব হইল তাহাতে। করীরকর্ণের সম লাগিল ঝুলিতে। শুওমুও চফু কর্ণ দন্ত আদি করি। मिथिए इडेल यम सूक्तत कुक्षती ॥ उत्व ताथा विमिनिनी छे-क्रिया उथन । महहती जनमार्थ देवन कार्याहन ॥ मूडेन जीम की তথানানাভঙ্গি করি। কত ভঙ্গি জানে নিজে ত্রিসঙ্গের नाही।। असन विक्रम इत्त त्रिन छथात्र । कुक्षद्रत शृक्षेत्रम इहेल छोड़ाया। उदय धनी निक दिनी धलाहेया दिल। कड़ीत পুচেছর সম ঝুলিতে লাগিল।। অঙ্কের উজ্জল আভা লুকা-বার ভরে। সকলসখীর অঙ্গ ঢাকে নীলাম্বরে।। হইল অপুক করী সুন্দর আকার। তবে কম্লিনী মনে করিয়া বিচার।। জাপনার পৃঠ দেশে পাতিয়া অঞ্চল। বিচিত্র আসন সম रहेल **उच्छ**ल ।। जानन রাখিল মনে এই নাধ করি। উঠিয়া दिति व हिए। व्यानकां इति। धहेकाल नवनाती मिनिया यह दन इर्देश कुञ्जत क्षेत्र कुञ्जंवरम ॥ अधिक्री श्रमान वरण छन मुर्तिकृत । नवनाती कुक्षदत्र अहे विवत् ।। अक विष इदम स्टि बहे कथा छटन। विक कट्ट एांत छत्र ना शांदक भागत्न।। कथ क्रिक्तकत कुछन्दन भगन।

পরার। এখানেতে শ্রিক করে খুন বিবরণ। গোর্চ হতে আইলেন আপন ভবন। রজনী যোগেতে হরি করিয়া ভোলকন। জননীর নিকটেতে করিলা শয়ন।। কিন্তু নেত্রেনিতা লাই সদত বিমন। কতক্ষণে নিত্তিভংইৰে প্রজন।। তিন্দিন রাধাসহ নাহি সহবাস। উদয় হইল মনে বিরহ ছুতাস।। তবে

কতক্ষণে ঘুমাইল পুরজন। আল্ডে বাস্তে ব্রজনাথ উঠিয়া তথন। ধরিয়া মোহন বেশ গোপোকার পতি। চলিলেন কুপ্রবনে মৃত্যুন্দ গতি। রজনী হইল ঘেণর করে ঝিল্লিরব।
কোন দিকে মসুষ্যের নাহি অন্তর্ভব।। আকাশে উদর মেঘ্
গভীর গজ্জন। বিশ্বু বিশ্বু হু তেছে জল বরিষণ।। ঘোরতর
অন্ধকার দৃষ্টি নাহি চলে। ক্ষণেহ গগণেতে দৌদামিনী জলে
তাহাতে কেবল মাত্র পথ দেশা ধায়। তাহা অনুসারি হরি
চলিলা ঘ্রায়।। পথে যাইতে কত আছুয়ে উৎপাত। তাহাতে কমলাকান্ত না করেন দিকপাত।। রাধার ভাবেতে
কৃষ্ণ হয়ে উত্তরোল। রাধাবিনে মুখে আর নাহি অন্য বোল
হা রাধা কোথার রাধা কতক্ষণে পাব। কৃতক্ষণে কুঞ্জে গিয়া
রাধারে হেরিব।। এইবাপ রাধাকান্ত করিয়া গমন। ছয়
দণ্ডে উত্তরিল মথা কুঞ্জবন।। বিল্ল কহে খুন সবে এক মন
হৈয়া। কুঞ্জবনে রাধাকান্ত প্রবিশিল গিয়া।।

অধ এক্লের এমতার কুঞ্চে বিরহাবস্থা।

मीर्च जिला । बहैकाल ब्रायाकान, ब्राया ভাবে হয়ে ভান্ত, পনীত উহৈল ক্রমেই। কুঞ্চের ছয়ারে থাকি, রাধাই বলে ডাকি, উত্তর না পান কোনজনে।। শেবেতে কুঞ্জের মাঝ, **धार्या**मशा खब्रताब, हार्तिकिक कृति मित्रीक्रण। माहि भारी गरहती, खवा चाटह गांतिर कूक्षवत्म कति मत्रमन। होनिद्क সাজান জুল, গুঞ্জিছে অলিকুল: মধ্যে ফুল শয্য। আ**ছে** ভায়। দ্রব্য আছে ভিন্ন ভিন্নগোপীকার পদচিক্ চারিদিকে प्रियादत शास !! किल गशीशन नाहे, नाहि कर्माननी ताहे; पिथि यत्न नागिल छ्डांग। विवद व्याकृण विडेश माहि मादन হিতাহিত রাধা বলি ছাড়েন নিম্বাস। পরে করি অকুমান, ছিল প্যারী এই স্থান, মোরে দেখি কোথা লুকাইল। এত ভাবি গুণমণি, অস্তেবিয়া প্রেমানিনী, চারিনিকে ভ্রমিতে नांशिन । उदय कून बदन शिद्य, दिशेषिदक दम्दर्थन हाइद्यूर भारत कान क्यारन इवटन । क्यां मानाद नाती, क्रव यान নরছরি,শাল ভাল পিয়াল কাননে ৷৷ দেখানে না দেখাপান, পরে শ্যাম কুঞ্জে যান, রাধাকুঞ্জে তাহার নি । তার

পরে অন্য বনং করি হরি অস্বেদ্ওকোন স্থানে না পান বে-থিতে।। রাধা ভাবে হয়ে ভোর, ভাবনায় নাহি এর, ভাব-ষ্করে হইয়া অস্থির। বাাকুল হইয়া মনে, ফুললভা রুক্ষগণে, জিজ্ঞাসা করেন যত্থীর ।। শুন্ত রক্ষণণ, করি সবে নিবেদন, दिर्थां कि कि कि मोदी आयात । यमानि त्मिश्रा थाक, वतन नित्रा धानवार्थ, कत गरवक्षक छेपकात्।। यनि वल वक्षक्रन, करम थांदक अहे वन, किटमावीदक स्माता नाहि किन। भूनह छा-কার কই, মপেতে তিলোক জগ়ী, অঞ্চ আভা জিনি গৌ-দামিনী ।। বনন নির্মাণ শশি, তাহাতে ঈষৎ হাসি, বিশ্বকণ জিনি ওঠাধর। বচন অমিগ্রভাষা, তিলু ফুল জিনি নালা, অথবা জিনিয়া ধরণবর । ধঞ্জন গঞ্জন আঁথিংগুবিনী জিনিয়া एकि, खावरनत सूर्यात्रेम रहा कोघरकभी मधाक्तिना, वहरमर**उ** ञ्चनविनाः, कम्य जिनिया कूठवस् ।। मृशाल जिनिया जूजः कत् পদ সরসীজ, নিভয়ের না যার বর্ণন। নথ শশধর জ্যোতি, मृह्र मन्दर्शाल, किनिया ता मद्रांत बावन ॥ अहे काल राहे ধনী, আসার হাণয়মনি, কেহ কি দেখেছ সেই জন। হয়েছি বিষম আর্ত্তা, বলিয়া ভাহার বার্ত্তা; কিনে রাথ জীনন্দ নন্দন এতেক মিনতি করি, বারে> নরহরি, রাধার করেন অত্থেদ্ব खंब्रा प्रकल वन, नर्हि शान न्यूगन, खर्याय छन विवत्न শিতুর্বা প্রসাদ বলে, শীকুষ্ণের পদততে, দরা কর ভকত বৎ-সল ।। শিশুর পুরাও আশা কর প্রভু নিজ দাস, অত্তে দিয়ে **हिब्दे क्राल** ॥

ख्य **ब्रो**क्टक्षत नवनात्री कुक्षत प्रभान ।

পরার। তবে কৃষ্ণ বনে আদুর করিয়া। কোন স্থানে জীমতীর দেখা না পাইয়া। বিরহে ব্যাকুল হয়ে বিষাদিত মনে
পুনরপি আইলেন নিকুঞ্জকাননে।। পুনরপি কুঞ্জেতে করেন
অস্বেদণ যেখানে আছে স্থান স্থগোপন।। হেনকালে
দেখিলেন অশোকের কাছে। গ্রস্তুত মাত্র এক দাডাইয়া
আছে।। রাধার বিরহে একে দহিছে জনয়। কুঞ্জর হেরিয়া
হরি পাইলেন ভরা। করী হেরি কালাচাদ গণিয়া ছতাশ।
এই করি কিশোরীকে করেছেবিনাশ।। সর্ব্ধ অন্তর্গামি যেই

প্ৰভু ভগৰান। পিথীতি প্ৰভাবে তেঁই হারাইয়া ভান।। না বুবিতে পারি কিছু ইলার প্রভেদ। কি ভাব ক্রফের করে নাহি জানে বেদ।। ভাগিলা করুণাময়, শোকসিকু জলে। হা রাধা বলিয়া হরি পড়েন ভুমিতলে ।। হায় প্রিয়ে সোর जारन जानि कुछातन। कतीत हाटजटल तृत्वि हाताल जीवन কোথ। গেল কমলিনী আমারে ছাড়িয়া। ভোমার বিচ্ছেদে প্রাণ যায় বিদ্রিয়া।। হায়বে দারুণ বিধি কি দোষ পাইয়া ष्यामात ब्यार्वत थिएम नहेनि हर्षित्रा ।। ७८६ ब्यिट्स बकवात (मह मत्रभन। (छामा वित्न एक्ष (मात्र इटल्ट्ड कोवन ।) तथा ध चाक्र काथा कारन नर्वकरन। चक्रकीन इरा अस्य इहिय क्रियत ।। कि माय शाहेश कृति हाकित कामाता। करेशंधा হয়েছি আমি না দেখে ভোমারে। অনুমান করি ভূমি আ-মার লাগিয়ে। পিরাছিলে গোর্ধমাঝে ব্যাকুল ২ইয়ে।। তাহাতে এদেছ মনে পেয়ে অপমান। সেই অপমানে বুঝি ছাড় নিজ প্রাণ।। অতেব উচিত নহে ওহে কমলিনী। একে বাবেএঅধিনে ছাড়িলে অমনি।।তাহে যদি অভিমান হয়েছে তোমার। মানিনী হইয়া দেখা দেহ একবার। পুর্বাযত সাধি তব চরণেতে ধরি। তোমার বিচ্ছেদ আমি সহিতে নাপারি अधिका आभाव मिट ब्रापिका कीवन। अधिका विवट नाहि रेथरी। यात्व यन ।। दाधा यपि ছाफ्डि शिन बहे द्रमावन । उत् আর কি কারণ ধরিব জীবন। ওচে করি বিনাশিলে মোর व्यानिव्यास । भूनतिन वध कत जामादि जानिता। कृत्सकत কাতর দেখি অভ্যি কিশোরী। মনে ভাবে করা ৰূপ পরি-ভ্যাপ করি।। আবার ভাবেন মনে আছে বড়ুসাধ। করীপক পৃষ্ঠেতে করিব কালাচাদে।। এত ভাবি হরি প্রিয়ে করীরূপ वन । वांधाकां हु वांधा भारक करवम (वांपन ॥ सर्वा (प्रवर्गन दिश्च मार्टन (भाक लाख। वहल गाँउर किंवा ब्लिक्टक्ट कार শোকেতে অবৈষ্য হৈল ত্রিজগতপতি। ভাহা দেখিখুন্য থাকি বলেন ভারতি।। ওহে হরি ত্যজ শোক শুনহ বচন। একবার করি পৃষ্ঠে কর আরোহণ।। ভবে সে পাইবে ভব রাধা বিনো <u> निनो । छन्दनावात्रव अञ्चल काहिनो ।। अध्यनि आकारमञ्ज</u>

देश देशवंदा विशेष्ट निया स्वाहित कि इति एत है के भागि । वार्ध स्टा स्वित के दिस है।

অথ এরাধাকুষের নিকুঞ্জ বনে বিলাস।

**্পরার। হরিপুর্চেকরি তবে নব**নারী করি। কুঞ্জুবনে নানা ञ्चारन ज्ञार किति ।। राथारन राथारन ज्ञार मारह मरनाइत छःन इतिद्व महेशा सूर्य महे सात्न गाना नातीत भत्न भारत 🕮 হরি তখন। মলয়া মারুতে হৈল উল্লাগত মন।। মনেহ ভাবে রুক্ত এ আর কেমন। করি পৃষ্ঠ সম এত নহে কণাচন অনেক কঠিন হয় কুঞ্জরের অঞ্চ। করি পূর্ত সম এ যে দেখি क्छ बक्षा अटकारि बाधानाथ अङ्ग पृत्ये हान । किल्माविब क्मनाकि मिथिवादत शांन ॥ ७८व क्रिके नामिटलम १८३ छन्ड তর। অধিলম্বে ধরিলেন এমিতির কর।। তবে রাধা দখীগনে ইপিত করিলা। ভিন্ন ভিন্ন হয়ে ক্রমে সবে দাণ্ডাইলা। বুচিল কুঞ্জর জ্বপ হৈল নবনারী। দেখি ধরা ধরা তবে করেন মুরারি ॥ হাম কি দেখিতুরূপ আহা মরিছ। জননিয়ে দেখি माहे नवनाति कति।। माती इत्य कुछा इहेल नव कतन। হিচনিতে নারিমু আমি হেরিয়া নয়নে।। আদ্যাশকি মধী মায়া ভুমি কমলিনি ৷ মায়া বলে ভুলাইলে বিধি খুলপাণী মারাতীত হই আমি তথাপী প্রিম্নী। তোমার মারায় বন্ধ আছি দিবানিশি। রাধা কন রাধাকান্ত তব পদমরে। ২ইয়া ছিলাম বনে নবনারী করী।। সাধছিল তোমারে লইব পুর্ষে করি। সেই সাধ পূর্ণ এবে হইল জীগরি।। তবে রাধ-কান্ত অতি আনন্দিত মনে। একাদনে বসিলেন নিকুঞ্জ কাননে। স্থীয়ণ চারি দিকে চামর চুলায়। কেছ আনি प्रभागा पिटल्ट्ह भनात्र॥ जटगोत हन्पन व्यानि द्वार दर्गन জন। সুবাসিত জল আনে সুবিষ্ট ওবন।। কোন স্থী তামুগ विशिष्ठ कर्ता करित । कानत्म रहेश प्रश्च यक महत्ती ॥ এই क्रिश द्राधा गर् श्रष्ट्र बनगानि । क्राइन क्क्रवामत् नाना द्रा

(किना। एटवं इति कहिएहम त्रांथा कटत थति। जुमि कि করেছ মান আমারে কিশোরী।। গোষ্ঠ মাঝে গিয়া ভুমি हरतिहिल पुश्चि । तिहै १० जु खिरत जुनि जाह मान मुथी।। এত যদি কহিলেন প্রভু নারায়ণ। করণুট হয়ে প্যারী করে নিবেদন।। তুমি ত্রিজগৎ কর্তা ত্রন্ধা স্নাতন। তাচিতা অব্যক্ত রূপ প্রাভূ নিরঞ্জন।। তোমার হাইতে সৃষ্টি স্থিতি হয় লয়। কটাকেতে আমা সম কত রাধা হয়।। গোষ্ঠ মধ্যে শত রাধা স্তি কর ভূমি। তাহে কি কারণে রুঞ্ ছঃথ हर खामि ॥ ७८व रय काइद्रा नाथ प्रश्चिकाहि मरन। निर्द দ্র করি প্রস্কু ভোমার চরণে।। প্রমাত্মা প্রাৎপর ভূমি নারায়ণ। ভোমারে ভলিতে লোক হয় সাধুজন।। বিধিতব বাদৰ বৰুণ ভুগাশন। তোমার ভজনা করে যত দেবগণ।। ट्यामात जनन। कति जद्दत ज्यानी। भन्न देवस्थ्वी नाम ধরিলা অংপনি।। তোমারে মদত সেরী লক্ষী সরস্বতী। <u> जिडूदन 'लाक मार्ख १८४८ हन मठौ।। जात्र 'कृपिटरन नत-</u> নারী কভজন। ভোমারে ভজিয়া পাপে হতেছে মোচন।। অংশ্যা দ্রৌপদী কুম্বী নন্দোদরী ভারা। ভোমার ভঙ্গন ক্রনে সতী হৈল তারা।। কেবল তোমারে ভলে আমি অভাগিনী उषमात्वा नाम देश्ल वाथा कल्हिने।। खंड बद भारत उद नाहि मना लगा अहे दश्कू इड्ड मना चानि ऋषीत्कम ॥ শুনি রাধিকার বাণী রাধাকান্ত কন। এই ছেডু প্রিরে ভূমি তাহ তুঃখ মন।। তোমার সমান সতী কেবা আছে নারী অংনিশি জামি যার আছি আজাকারি ৷৷ বালি হৈতে রুদাবনে যত গোপীগণ। সভীক্ষণে বলিবে ভোমারে সর্ব-জন।। অভএব কমলিনি বড় সুখ পাবে। কানি হৈতে কল-किंगी नाम एव गांदा।। এই जुल कथांदा काटहन क्वीरकम **६ नकारल त्रम्यो १३ल अवरमय।। उदय त्राधांकां उक्ति** রাধারে সাম্ভন। জাপন আলেয়ে শীন্ত করিল। গমন।। मधीनन कमलिनि दन्ना निक् धाम । किन कट्ट सूर्व गृर्थ वन इति नाम।।

## व्य क्लक स्क्रमाद्य।

नीयांत । भोतम् थे कम भून ह एन महाभाग । कि कर्मा करिता कृष चानि निकालश । व्यान कन चार्छ न जीमधुसूनन জননীর নিকটেতে করিল শয়ন।। ধালক সমাম ছরি যুমাইরারয়। হেনকালে সুখের রজনী গত হয়।। শশি অন্ত:চলে গেল পোগইল নিশি। ভাতুর উদয় হৈল প্রকা-শিল দিশি। বায়দ বিহল পিক করে কলরব। ক্রমে ক্রমে পুরবানি জাগিলেক সব।। যশোদা রোহিণী উঠি গৃহ কর্ম সারি। মনের আনন্দে জাগাইল নরংরি॥ শ্যা হৈতে উঠি তবে এমধুসুদৰ। সুবাসিত জলে করেন মুখ প্রকালন।। ক্ষীরসর নবনীতোলইয়া যততে। আননেদ দিলেন রাণী क्रस्थित वन्ता। भटक कुछः धका वाक्ति विभा कति निन। मत्मत श्रामत्म द्वारी क्रयः मध्याहेल।। शाहिन करवटक দিয়া বলে নক্ষরাণী। এই বেশে একবার নাচ নিল্মণি ।। মায়ের বচনে ধরি নাচিতে লাগিল। দে নৃত্য দেখিয়া সবে भाव्यि इ**हेल ।। किन्छ मत्न काशि**एउट्ह ब्रांबिकांत वांनी । कि बार्ल चुरु व नाम द्राधाकलकिनी।। विवक्त दर रहनाम न्यद्रित পাপ হার। কলক যুচানো তার কোন বড় দার।।

## व्य क्रिक्ट स्ट मुक्ति।

পয়ার! রাধার কারণে হরি চিন্তিত অন্তর। কির্নুপে কলফ ভার ইইবে অন্তর।। মায়ার আধার প্রভু অনন্ত মহিনা।
গুণাভিত বটে কিন্তু গুণে শহি সীমা।। মনে মনে নারায়ণ
করিয়া বিচার। পাতিশা বিষম মায়া কে বৃঝিবে ভার।।
মায়ের নিকটেসুখে নাচে নন্দলাল। নাচিতে২ কিছু ঘামিল
কপাল।। ক্রমে ক্রমে দর্শব অক্লে ব্যাপিলেক ঘাম। অকন্যাৎ
মুক্তা হয়ে পড়ে ঘনশ্যাম।। পদ্মপলায় চকু উর্ক্তেও উঠিল
অমল কমল মুখ ক্রমে শুখাইল।। নন্দরাণী দেখে কুফ
ভূমেতে পড়িল। শীঘ্রগতি আদি সভী কোলেতে ভূলিল।।
কি হৈল কি হৈল বলে করে কলরব। ধাইয়া আইল ভরষ
গোপীগণ সব।। মুশীভলজন মুখে দের কোনজন। আপনি
রোহিণী অক্লে কর্মে ব্যাজন।। অথাপি শাহিক স্পাত্ত-না

সরে নিশ্বাস। দেখি যশোমতী অতি গণিল ছতাশ। তবে ব্রজ পুরবাদী যত গোপগণ। ও নির্নিষ্ঠ ক্রফের সুচ্ছা আইল স্ক্রজন। আর রুদ্ধা রুদ্ধা যত গোপীগণ ছিল। ক্রক অম-ক্ল শুনি সকলে ধাইল। তবে চন্দ্রাবলী গিয়ে রাধার গোচরে। কুষে র মৃচ্ছার কথা কহিলা সহরে।। চন্দ্রা বলে ওগো রাধে করি নিবেদন। আচম্বিতে মুচ্ছাগত জীনন্দনন্দন কতজন কন্ত মত ঔষধ কবিল।। তথালি কিঞ্চিৎ ভার চেতন নহিল। রাধা বলে চন্দ্রাবলী একি অকন্মাৎ। বিনা মেঘে ব্ৰহ্নপুরে হৈল বজ্ঞাঘাত। কৃষ্ণ যদি ছাড়ি যান এ ব্ৰহ্ম ভূবন। তবে আরু কি কারণে ধরিব জীবন।। চল২ নন্দা-লয়ে সবে ঘাই চল। যদ্যপি কুঞ্জের ভাল দেখি তবে ভাল।। নভুবা যমুনা জলে জীবুন ভাজিব। পুনর্কার আর ঘরে ফিরে ना जानिय।। ८७ विन कर्मल भी लट्य मधी गटन। छेलनी छ হৈল সবে নন্দের ভবনে h দেখে ব্রজবাসী যত বিষয় হইয়া মাথে হাত দিয়া সবে আছে দাড়াইয়া। মুচ্ছাগত বনমালী রাণীর কোলেতে। দেখিগা শ্রীমতিসভী ভাসিল শোকেতে।। লোকের গঞ্জনা হেতু নাকান্দে ফুকুরে। বিন্দুং বারিধারা नशरन एक वादत्।। अक भारमा किमानी तिहन। माँक्रा । পরে শুন যেইৰপ একিঞ্জলইয়ে।। বছজনে বছমত শাল্ডি क्दाहेन। कानमटा श्रीकृत्यद हेहएना महिन।। ए। हा तिथि नम्मश्री चित्रात ভাবিয়া। चित्र कट्ट काटम नडी ভूমि (नाछोड्या ।

#### काथ यदमीमात्र (त्रापन।

দীর্ঘ-ত্রিপদী। বছমত করি শান্তি, কুংশুর নহিল ভ্রান্তি, তাতে ভাল্তি হৈল সর্বাহ্মন। অসার ভাবিরা রাণী, তাতে করাছাত হানি, উঠেঃ হরে কররে নোদন।। সে রোদন বর্ণি বারে, কার সাধ্য কেবা পারে, বানি যিনি আপনি স্থাকিত লিখিতে তাহার অন্ত, ব্যানের লিখন কান্ত, এই হেডু বর্ণন রহিত।। রাণীর ক্রন্দন ছান্দে, যত পুর্বাসী কান্দে, কৃষ্ণ শোকে হয়ে নিরান্দ। উঠিল ক্রন্দন ধনি, ব্যাপিল ভুবন খানি, গ্যেতে থাকি খুনিলেন নুদ্ধ। তবে অতি ব্যস্ত হয়ে,

छेशनम गत्क नत्त्र, उडितिना काशन खरन।। श्रादिन श्रुवीत म का, दनत्थन विसम करि, ज्रकमा ए क्रम ज्राट जन।। जाना দেখি প্রাণ উড়ে, আছাড় খাইয়া পড়ে, ছিল্লমুন তরুবর প্রায়। উপন্ন কাছে ছিল, করেতে ধরি জুলিল, বিধিমতে नकारत त्वाध । कि हिन छे भनन, भून २ ६ द नका, निवा मन्म अत्व यू कि नश्न । दिश्व कि इंडेल द्वारा,कत्र छव्य वारा, যে ব্রপেতে রোগ মুক্ত হয় ।। বিচিন্তিয়া বিজ্ঞজনে, বিবেচনা कर्त्र मान, विপारण ना करत भावन। विश्वि विश्विता ভারে করে বছু প্রতিকার, যাতে হয় বিপদ্মেচন।। এই ৰূপে বছুমত, নন্দেরে বুঝান যত, প্রবোধ কি মানে মনে ভার। এ বছ বিষম কার্য্য, কেমনে ধরিব ধৈর্য্য, অচৈতন্য कुरु পুত্র যার।। হ' कृष्ण विनया नन्त, हस्य অতি नियानम, कांग्मिर कृष्य कोट्ड याय। मिथियो क्रायन छ। व, जीनत्मन . कानाच्येन, देश्म (धन अप्तिटलद श्राप्ता।। (माक मिल्टिलएड ভাসি, धीरवर कांट्र आणि, উঠ বলি ডাকে উভবার। কহে कवि विजयत, त्म छाव (पश्चित्न भएउ) भाषान विनातिशा यात्र ।।

## ज्य मत्मत्र जादम् ।

রাগিনী নোহিনী পরজ। তাল আড়া।

ধুয়া। গাঁ ভোলো গাঁ ভোলো; ও নীলকমল গোকুল নিবাসি আকুল হলো।।

লঘু ত্রিপদী। কাদি সন্দ কন, উঠ বাছাধন, অচেতন কেন রও। বিধ্যু খণিনি, আধ আধ ভাদি, সুধা দিনি কথা কওা। পিতা বলি মোরে, ধেয়ে এশো ওরে, দুবাল ধরেরে শিরে। ভোরে কোলে করি, সুংখদিকু ভরি, ভাদিব আনন্দ নীরে। ভোমা বিনা আর, কে অংছে আমার, বলরে এ বজ পুরে। দিনকর করে, দথ কলেবরে, পদে কভ কুশান্ধুরে।। উঠি দ্বরাকরি, ওরে গিরিধারি, বংধা জল ঝারি দেহ। হেরি ভোর মুখ, ছুরে মায় ছুঃখ, যুডাক ভাপিত দেহ।। এই বৃদ্ধ কাল, ওরে নন্দ্রাল, আর ছুঃখ নাহি সয়। ভোমা বিনেমোর বাবেক দেখবে চেয়ে। পিতা নন্দ তোর, কান্দিয়া কাতর, म्माक्ट विनद्य हिता। टाउ व जननी, इता भागनिनी, মণিহারা কনি প্রায়। তোমার লাগিয়া, ব্যাকুল ইইয়া, ভূমে পড়াণড়ি যায়।। হের স্থাগণ, শোকে অচেতন, ধেরবংস আদি করে। তোর মূখ হেরে, ভাসি ভাঁখি নীরে, কেই না ধৈরজ ধরে ॥ উঠ ওরে বাল, যুচাও সন্তাপ,চাঁ। মুখে বাপ বল ecत्र निनमित्र यूड़ाक श्रतानि, स्टान ट्वात स्था दिवन ।। धहे कर्ष नम, कतिशे धवन, छाकिएक छ छ हरत। भागन সমান, দেহে নাহি জ্ঞান, আকুল হইয়া ঘরে ॥ ক্ষণে মোহ ষায়, ভূমেতে লোটায়, কণে কৰে উঠি ধায়।কণে চমকিয়ে উঠে শিহররে ক্লকের নিকট যায়।। ছবাত পদারি, একু-ক্ষেরে ধরি, কোলো করে ততক্ষণ। ছেরি মুখ শশী, আঁথি कटल ভाति, घन कत्रदश्च हुम्रन।। कटन औरिश धदत, तार्थ क मि भटत, कटल करत हात्र । कटन कारन इटल तारिया कृत्माक, अक्षृत्के हात्र ब्रह्म ॥ द्वाचित्तक्र भूम्ह कार्हाह्म एक, আছাড় খাইয়া পড়ে। স্পৃদ্ধীন রহে,নিশ্বাস না বহে, যেন দেহে প্রাণ ছাড়ে। পুনঃ চমকিয়া, হা কুঞা বলিয়া, উর্দ্ধানে छेठि धारा। करन कार्न्स शारम, करन कछ छारम, रशमन পাগল প্রায়।। এরপ হইয়া, বিলাপ করিয়া, 🗐 ন 🖚 রুশাঙ্গ অতি। শক্তি খীন প্রায়, বসিয়া তথায়, মুখে না স্বরে ভারতী ব্যাপ্র চিত্ত হয়ে, জ্ঞীদানে ডাকিরে, কহে অতি মৃত্তাবে। তুমি কুঞ প্রিয়, কুঞ তোর ফিয়, অতিশয় ভাল বাদে।। মোর কথা রাখ, ভূমি ক্লফে ভাক, ভোর কথা ক্লফ রাখে। শুনি নন্দ বোল, শোকে উত্তরোল, প্রীদ্রগা কুফেরে ডাকে।। ख्य **खी**रामानित कांडक्रिका

পরার। জীদাম শুনিয়া তবে জীনন্দের বোল। অধিক শোকেতৈ ময় হইল বিজ্বল।। ছই চক্ষে শতধারা বহিতে লাগিল। আত্তেব্যান্তে জীক্ষের নিক্টেচলিল।। স্থবলাদি করি যত শিশু নঙ্গে লৈয়ে। দাভাইল চারি দিকে ক্ষেত্রের ঘেরিয়ে।। তবেত জীদাম ভাকে করিয়া মিনতি। উঠউঠ ওরে ভাই রাখানের পতি।। ভুমি বিনে রাখানের আর কেহ নাই Ť

উঠবেহ ওরে প্রাণের কানাই।। কি কারণে ওরেকাল হইলে ध्यम । তোষার শোকেতে, মজে মুখ রুদ্ধাবন ।। এই এঞে ৰসতি করয়ে যত জন। স্বাকার প্রাণ্ধন ভূমি দে জীবন।। आह यनि कनकान ज्ञिना छेठित्व। मकत्न जाकित्व थान নিশ্চর জানিবে।। ওরে কান্তু ভোর মনে এই কি আছিল। भोक निकू मनिरमेट जायार्य त्ताकृत। अं यि कामा-हैं दिन रहात मरन। इस द्कीकारन हर्द वै। हाईरन करन বামহাতে ধরি কেন গিরি গোর্ফন। রক্ষা কর ওরে ভাই बह ब्रमायम ॥ किकांत्रम विष्णात्म वाहारम वाश्वाम । वरकत् ্উদরে কেন বাঁচালে গোপাল। দাণাগ্র করিয়া পান রাথ श्रीभश्रत्। 'भिखाद क्रिल तका मर्श्व प्रश्नाम। वद्भव আ্লয় হৈতে আন সেই জনে। তোর শোকে প্রাণ ছ'ভে না एवं नश्रदनं ।। **जननी कनक भरत भरत (शामीशन । अरत इति ध्येटल (कन ना कह तकने। धवली मार्गमनी कानि (धन्न** বংবেগ। তৃণ জল ভারাকিছু নাকরে ভক্ষণ।। এক দুষ্টে তে'র মুখ নিরীক্ষিয়া আছে ৷ অনিবার বারিধারা मंत्रत्म शनिष्क ।। क्षेत्रं कांच्यु नह त्वर् हम त्वार्ष्ठ याहे । त्यच्य व्यम नर्य मर्व कानरन हर्ष है।। मर्व भिनि कुकृश्ल (४-लाकति छाई । द'र्थाटलत द्राष्ट्रा एट्स रेवमर कानारे ।। रहन-মতে শ্রীণামাদি যত শিশুগণে। আক্ষেপ করিয়া বহু ডাকে करन करना। किছু ত नहिल यकि क्रस्था (हरून) एरउर ভাধৈৰ্যা হৈল যত লোপনাৰ।। নিশ্চয় কানিয়া মৃত্যু কান্দে छेकिञ्चतः। कांत्र माधा त्र द्वापन वर्षिवादः भादः।। छद बल्दानव (मिश्र विश्वाय हरेला। दिश्य मद्र कि कि क्रिया विश्व कि क নহিল। আপনি অনন্ত অন্ত ভাবিয়া পান। কি কারবে কুষ্ণ চন্দ্ৰ হারাইল জাব।। স্বর্গ মত্য পাতাল ভাবিয়া বি-ৰভুবন কোন স্থানে কিছু নাহি পান অন্বেষণ ।। আৰ্ফ্র্য মানিয়া মনে রোহিণী নক্ষণ ত্রৈলোক্য বিজয়ীকিলা করিয়া भारत । । । । । । । । वादन वलदम्य तदनम ७थम । किছू कान कार ক্র সকলে রোদন।। শিঙ্গাস্বরে ডাকি আমি করে উচ্চৈ श्वनि । प्रति प्रि किन द्रम देश नीलम् वि ॥ अञ्चिति विल्

कारन करिया नाखना। दिल रतन दलाई मिल निकारक दिस्यगा।

### खाथ वलदमरवं व्यादक्षा

भीर्च-जिल्ही। वनशाम निकार्धात, मध्य कुरकांत्र कृति: বিজ্ঞা স্বরে ভাকেন তথ্ন। বলার বিজ্ঞার শানে, ব্যাপিলেক ত্রিভ্রনে, চমকিত যত পুরজন। অতন সুখল তল, বিতলাদি রুশভল, ক্রমে স্থু পাতাল ভেদিল। তথায় বস্তি কত,নাগ कुर्या कोनि यक, नकटन एक वाँ शिएक नाशित ।। मशु स्वर्भ सूत् र्गन, मत्त हमकि उमन, देकनारम कामिना शका सम। सका লোকে ত্রন্ধা শুনি, কন্পিত হয়ে অমনি, সঙ্গে লয়ে যত দেব গণা আকাশ বিমানে আদি, দেখে যত প্রজ্বাদি, কুষ শোকে লোটায় ধরণী। অটেডনা ভগবান, ভূষে গড়াগড়ি यान, द्रिशंखक विधि भूल्यानि ।। काम्पर्यः, मानिया मदनः লয়ে যত দেবগণে, বিধাতা ভাবেন সর্ব স্থান। কোথা প্রভু नादाधन, कि कांद्रदन खाइलन, किह किहू ना शान मक्सान।। মায়ার আধার হবি, বিধি ভব আদি করি, শোকায়িতে नकरन छ। यिल । अर्थ रन निकाद तारल, त्कन क्रुक्श्सन इरल् ব্রজপুর শোকেতে মজিল।। উঠ ওরে বনমালি, সথা সঞ্চে কর কেলি, ডাকে তোর দাদা বলরাম। তিলেক যে খেলা বিনেং নাহি থাক কে ন দিনে, এবে কেন করিছ বিশ্রাম।। ভিলেক আমারে ছাভি, নাহি বাও কারু বাড়ি, কি ছোবে ছাজ্লে একবংরে। উঠ কুষ্ণ উঠ ওবে,কথা কছ গলে ধরে, ভোষা বিলে देधवन ना धरंत ।। जननी सनक ভোর, শোকে हा। मनाउद्ग, जूम लुप्ति कान्ति ह कानाहै। जुमित्व मर्स**स्** ধন, মা বাণের প্রাণধন, ভোলা বিনে অংর কেই নাই।। ভোমায় পাঠায়ে বনে, চেয়ে আকি এক খনে, কজকণে আসিবে ঘবেতে। শুনিলে বেগুর ধর্নে, হয় যেন পাগলিনি, ध्या या न कदान को लिएक क्रिना शहरक बरन मारमूत আরুতি বিনে, নাহি যাও কথন গোণাল। এখন কাটীয়ে मात्री, अदक्रवादत छ। जि नित्रा, देकाशा त्तरल मादात छूलाल

মারের রোদন হরি, সহিতে নাহিক পারি, এই হেতু বলি বাবে বার। উঠরেন ভাই, জার ছঃখ দিও নাই, ত্রজপুর খুয়াবে ভোমার।। আর যদি ক্ষণকাল নাহি উঠ নন্দলাল, তবে প্রাণ ভালিবে নকলে। আমিও ভোমার শোকে, মুখ ুলা দেখাব লোকে, প্রবেশিব ধয়ুনার জলে ।। এই ৰূপে খেদ कदत, वलदमव शिक्राश्वदन, ऐटेक्टबदन छोदकन वानाहै। তথাপি নহিল প্রাণ, দেখি লোকে হতজ্ঞান, শিক্ষা কেলি বিদিল বলাই।। বলগাম অকের আভি, রজত প্রত নিভা, ভাতে প্রভা হইল এমন। তুই চক্ষে বহে ধার', যেন গঙ্গা শভ ধারা, গিরি হতে হতেছে পতন।। বলরাম শোকে ভাষে দেখি গোপগণ হাদে, নিতান্ত জানিল কুষ্ণ নাই। हा कृष् বলিয়া ভবে, করি হাহাকার ববে,রুফ্ শোকে কান্দয়ে সবাই নবে বলে আর কেন, যমুনায় তাজি প্রাণ, ক্লফ যদি হাড়িল শরীর।। এতে বলি গোপকুল, হয়ে শোকে সমাকুল, মরণ, মন্ত্রণা কৈল ভ্রি। এসব দেখিরা ছরি, মনেতে বিচার করি, রোপ গোপী ছঃখ বিনাশন। রাধার কলক যায়, সকলেতে সুখ পায়, উপায় ভাবিলা নারাহণ। জীত্রা প্রমাদ বলে, আফুমের পদতলে, দয়া কর ভকত বংগল। শিশুর পুরাও পোশ, কর প্রভু নিজ দাস, অত্তে নিয়ে চরণ কমল।।

#### व्यथ देवरमात्र काशमन।

পারে। গোলকুল আকুল দেখিয়া নর হরি। মনেতে ভাবেন তবে উপার কি কবি। ধেদেখি শোকেতে মগ্র জল বাসিরণ। কণেক বিলয়ে সবে তাজিবে জীবন।। অতএব বিলয়েতে অনুচিত হর। তুরায় কবিতে হৈল ইহার উপায় করিতে হইবেদুর কলক রাধার। ব্রজ্বাসী সুখীহবে চেতনে আমার।। হেনমতে করিতে হইবে সুবিদ'ত' কত ভাবি চিন্তামিন হৈল চিন্তাবা না। ভাবিতে ভাবিতে ছফ্ল কপ হৈল হরি। শুনহ আল চক্র আপুকা সংগ্রহা। পুক্রিলে মশোদার কোকেতে রহিল। দেহ হৈতে আন্যা রপেরাহিহ হইল।। সে কাপ দেগিতে কেহ না পায় নারনে। অলকিতে গ্রেলা হরি নগর জানণে। কি কব সে অপুকা কাপের বর্ণ ন

অভিন্ন ১ইন যেন ভিষক নকান। কুফোর অঞ্জ কুষ্ণ সম্ কলেবর। ইহাতে বুঝা কাপ কি কা বিশুর। ঔষ্ধি পূর্ণিত স্বৰ্ণ কৌটা করতলে। অধিকন্ত জ্যোতি:যর পুঁথি কক্ষ স্থলে শিখ চুলদীর্ঘ কোঁটা নাদিকা কপালে। রোগী অত্মনকরি खमर्ग र्लाकृत्न ॥ (इनकात्न नगरीत लाक दकान धन । পথেতে পাইল সেই বৈদ্য দরশন। জ্রুত নিয়া প্রাথান করিয়া देवनावदत। कतरपाष कति किছू निरंदनन करत्।। व्ययुख्य করি বৈদ্য হবে মহাশয়। কোথার নিধাদতব গমন কোথায় অক্সাৎ গোকুলে হৈল অগেমন ভাগ্য হেতৃ পাইলাম ভব দরশন।। বৈদ্যাবলে এত কেন করিছ মিনতি। চিকিৎগা করিয়া ভ্রমি আমি বৈদ্য জাতি।। অনুমান করি রোগী থাকিবে জাগারে। নতুবা এতেতকেনবিনয় আমারে॥ করে कुछ क्षिति हरा (महे कन कया। ए कथा कहिला महा वर्षि মহাশ্র ।। শুনিরাছ নন্দেয়ের ব্রজের রাজন। অককাং মূচ্ছাগত ভাহার নন্দন।। কভ কত চিকিৎসা করিল কৎজন কোন মতে না পারিল করিতে চেতন।। নন্দমুত শোকে মুখ যত গোপকুল। বৈদিন করিছে সবে হইয়া ব্যাকুল। ভূমি যদি রুপা করি দেখ একবার। ভবে বুঝি প্রাণ পার नत्मत्र कुमात् । भूनि देवना वत्त त्रांभी प्रिथित नगरम। সাধ্য কি অসাধ্য রোগ বলিব কথনে।। সাধ্য হইলে মহেন-यि कर्तित्न भिवन । व्यवश्र स्ट्रेट्ड शास्त्र द्वार्रात्त्र त्यांकन ॥ किन्तु भागि नःहि याहे दिना आदाष्ट्रता। (कमरन शहित दल्य পधिक वहरन ॥ १८८३ পथिक स्त्रांभ करह नक्करने । कर्वक দাঁড়াও এই রক্ষ সন্নিধানে।। আমি পিয়া সমাচার কহিব ভথায়। ভাপনি আদিয়া নন্দ লইবে ভোমায়।। এতবলি देवगावदत ताथि । न**रे फान। नरमा**दत कहिल शिक्षा देवरमात्र আখ্যান।। শুনি নন্দ দেই খানে অঃসিয়া ছারত। হেরিয়া रेवटनात्र काल इहेला स्मिहिन ।। क्रूटिकत मेमान वर्ष रहित्रहा তাহার। অন্তবের মধ্যে যেহ বাজিল অপার। বিনয়ে ককেন নন্দ এস মহাশ্র। কুপা করি রক্ষা কর আমার তনম नत्मत्र कांस्वादन देवना इत्रविष्ठ इत्य । जनितन भीत्र भीत्र

নম্বের আলয়ে ।। তবে নন্দ কর পুনঃ মধুর এচনে। বাজি তেছে কুশাঙ্কুর চলিতে চরণে। কুপাকরি মোর কোলে কর कारताइन। करनरक् नहेशः लागि कतिव अमन।। रेवम् कन পিতৃ তুলা তুমি মহাশয়। করহ উচিত তব যেবা ইচ্ছা হয়।। ভবে নন্দ বৈদ্যবরে কোলেতে করিয়া। পুলকে পুরিল জঞ্ উঠে শীংরিরা।। আপনি সে বৈদ্যরূপ জীনকানকান। এই (इक् ब्रीनटमत वेलानिक मन।। कुरम्बत कित्र कर्नात देश सूर्य एक। देवत्ना दि कतिया कारल देवल (मह मका। महमन् खब्दाक् भारतम एथान । हेशायक कहेशा मन देश धनन ॥ **এहेक्न रेश्ट**७ वृद्धि शाहेद एनग्र। नजुदा दिशर एकन আৰম্ঘ উদয়।। এত ভাবি যান নক্ষ লয়ে জ্বতত্ত্ব। আপন আলয়ে গিয়ে উত্তরে সত্তর। বৈদ্যদেখি সর্বাজন ইইল হর্ষিত রোদন ত্যক্ষি। রাণী উঠিল ছবিত।। সমাদরে বৈদ্য বরে ৰসারে তথার। কর্যোভ করি রাণী বিনয়তে কয়।। প্রাণ দান দেহ ভূমি আমার নন্দনে। ত্রকেবারে বিকাইব ভোমার हत्त्व । देवना वटन दहन भारता असूहिल वट । कननी সমান ভূমি আমার যে হও।আমা হৈতে বাঁচে যদি ভোমার कांबाहै। पुजकारत क्या द्वारथा कात्र बारि हाहै।। जित इंड कमनी (ता मा इंड छेडला। (मिथि कारत किंदा (वारत कुरक्रद्र (यदिना ।। अटवर्षि कार्ड वा एख क्रुक्ष कार्ट शिहा नांगिका. कभान वरक (मर्थ रुख मिश्रा ।। क्रियर मर्क अन कतियां म्लाना व्यवस्थित रख श्रीत स्थित लक्षा रख ছাড়ি হেট মাথে ব্যিয়া কি'ঞ্চ। ব্লিতে লাগিল তবে ববার বিভিত। ধাতু নাহি পাওলা যায় জল হিমময়।। মৃত্যু সম বটে বিল্ক কলে মৃহুৰ নয়। ভাব প্ৰকাশেতে আমি যে पिथि लक्ष्या अञ्चयान कति । पर आइटब कीवन । विक्रु ख द्रोरशत किছू ना भारे निर्नेत । **अंग्रे एक्ट्र** चाविट्टि**ह** विषय সংশ্র। শ্ভবলি হেট মাথে ব্লিয় তথ্য। দোখার স্বার স্ব टेश्न छेठा छेन ।। यदव बदन सश्यात्र कि श्दव हेशात । द्वेवना বলে স্থির হও দেখি আছবার।। এত বলি ভারতিষ খুলিয়া ভতক্ষণ। খড়ি পাতি আর্ডিনা কারতে গণন।। ভিন্ন কছে

ক্রক পদে করি পরিহার। কে বুঝিতে পারে প্রভু মহিমা ভোমার।।

## काथ रेवरमात अवना।

দীর্ঘঞিপদী। জ্যোতিষ খুলিরা বৈদ্য, ভূমে খড়ি পাতি সদ্যারাখে অক্করিয়া পাতন। অন্য একরাখি পরে, অক্টেড भुवन करत, धूनः चस्क कतरत इत्।। बहेन्द्र श्रं छ पति, হরণ পূরণ করি, ক্ষণকাশ করিয়া গণন ৷ রেখণের করিয়া স্থিত কহিতে লাগিল ধীর,যেই বাপে চইবে মোচন । বৈদ্য গণনায় কৃষ, রোগ হৈল ধনিক্র, কিন্তু বড় বিষম ঘটিল ৷ ए एक्टि अर्थ (यात्र, निमादनत अव्यव्हात्र, क्लांकित्वत মতেতে মিলিল। অধিক কিকব আর, অমুপান পাওয়া ভার এই ং ভু ভাবিতেছি মনে। শুনে উপানন্দ কয়, যা কহিছে মহাশয়, ভাহা আনি মিলাব যতনে ৷৷ চেক্টার অসাধ্য নাই, চেফীয় চুল্ল । পাই,এই কথা দৰ্ম লোকে কয়। ভাত এব চেফী। করি; অবশ্য মিলাতে পারি, কহ দেখি শুনি মহাশয়। বৈদ্য কছে শুন ভবে, যে ওখধে বোগ যাবে, ওব্ধি আছয়ে মোর ৰ্মা। প্ৰিব্ৰভা হবে যেই,ওদ্ধি বাটিবে সেই,এই মত সভী মারা চাই।। পতিব্রতা সতা নারী, ককে করি হেম ঝারি. यवून। देश्ट जन जानि। त्म जतन अयम क्रात्न, क्रूकेवूरथ नित्व তলে, রোগ মুক্ত হইবে তথনি। শুনি উপানন্দ হাসি, কংহন মধুর ভাষি, এই হেডু কিলের ভাবনা। নগর এ বৃন্ধাবনে, मठी अहर बहुकत्म, देवना बत्त कथात्व स्टब्सा। मूर्याद যে সভী কয়, ভাহাতে প্রভাৱ নথ পরীকা করিতে হবে তার পরীক্ষায় উহবিলে, জবেদে সভীর জনে, হইতে পারিবে উপকার। গে নিয়ম পরিক্ষার, কহি শুন শুবিশুর, কেশ তুলি মন্তক হইতে। গ্রন্থ দিয়ে দীর্ঘ করেং গিয়া যমুনার তীরে, দেতু এক হবে নিশাইতে।। পাশ্ব ভাবে কিছু ভায়, ना थाकिटर त्यान जात, बक क्ट्रिंग (मजूनी यीकात । जाहां ज যমুনা পার, হইবেক ভিনবার সেই নারী সভী সারোলার।। উপানদ কন পুন: কভু কি সম্ভবে হেন, এমন সেতুতে হওরা । বিপুট্রদ্য বলে সভী বেবা ভাষার অসাধ্য কিবা, প্রবারে

প্রমাণ পুন ভার। অযোধ্যাতে রঘুপতি ভার জারা সীত। गणी, जारन इतिया सहस छात्र। तसूनार्थ काल करि, मन्दरम् রাবণ মারি, দীতা উদ্ধারিল পুনরায়।। কিন্তু দেই রযুপতি, জ্ঞানিয়া সীতায় সতী, তবু করেন পরীকা বিধান। যতেক বাৰর মিলে, কাষ্ট অননি অগ্নি জালে, অগ্নি হৈল পর্বত व्यमान ।। मछी व्यत्वामन खात्रः मृद्य करत छात्र हाहः मरन ভাবে कानकी मात्रन। गडी नाती धर इस, जात कि कानल **७त, ज्लामार्ड मोउन २३ न ॥ अधि मार्ड गीडा प्रदी,** শীরামের পদ ভাবিঃ আনক্ষেতে বসিয়া রহিল।, অগ্নি হৈল ক্সনির্বাণ, পরে উঠি সেই স্থান, পতি পদে আসি প্রণমিল। ध्यनन देश व व अ श्रीका न दश मण, दे दथ दकन जाविह गःभार । भून खन कहि मात्र, कृशी क्रिक क्रम बाद्र, हित्रकः ल, विधि भत्रीकात ।। এত यकि देवना कन, गदव हमकि मन, छेशांस्य हान नन्त्र शांत्र ॥ नय कन छाव (करन, किछान अभगीतरन, नाती मर्च नाती जान खारन । छान्धा नरमन वागी, नातीग्रन कानाकानि, वटन अकि दर्शय मर्वनाम। कि घटिट कि देश, कानकाशी देवना आहेन नाती कुछ् कतिरा धकाना। अष्ठतीनाम वटन, बीक्रामत नण्डल, मही কর ভকতবংল। শিশুর পুরাও আশ, কর প্রভু নিজ দাস তাতে বিয়ে চরণ কমল।।

উপনন্দ কর্তৃক নারীগণের আহ্বান ও নারীগণের পরস্পার জন্দ করণ।

পরার। নদের বচনে উপনন্দ হয়ে ধার। মধুর নিস্ত্রে কৃথে বচন গভার। শুন শুন ব্রজ্বাদী নারী যতজন। স্থকর্দে শুনিলে সবে বৈদ্যের বচন।। যে হস্ত পরমা সতী এ ব্রজ্ব মগুলে। পরীক্ষা করিয়া বারি আন কুতৃহলে।। ত্রিভুবনে যত কীর্ত্তি রবে চিরকাল। অধিবস্তু প্রাণ পাবে নন্দের তুলাল।। পর উপকার হবে বাড়িবেক মান। ইহার অধিক কর্ম কিবা আহে আন। অভশ্ব উঠ শীপ্র সতী যেই জ্বা। নন্দ্রেশ্রে বাচাইরা রাখাং ঘোষণা। এত যদি বার বার কচে উপনন্দে। কোন নারী কিছু নাহি জালে ভাল মনদা। হেট মাথে রহে

मत्व मौरि कृत्व (वान । जालमा जालीनि लात कृत्व ते श्रु-त्तान ॥ शतुम्भद्र व छेशदत वटन वात वात - कूम्म गांध्वी সভী বট হও আন্তস'র।। শুনিয়া তাহার কথা কবে আর-জন। ভূমিত প্রধানা বট সভীতে গণন।। চির্হাল সভী বলি হাত।নাড়া দাও। এবে কেন আর জনে বল ভূমি যাও ननमिनी राहे इत्र भारे । रंग हला । खाक्रशु श्राक्ति वाका हैशा भना।। जुनिरंडा आंहर मडी आमारमत घरतं। भन्नीका করিয়া জল আনহ সন্তরে।। পতির কাছেতে সদা সতীত্ব জানাও। পত্র অবশিষ্ট ভার পদোদক খাও।। একদিন পতি यनि छानास्टरत तम्र ! रन निम উপनि थाक आशत ना इस्।। ঘরে পাইলে পাবে ধেয়ে নিয়া ততক্ষণ। সুবাসিত জল দিয়া (धारां ह हत्।। এই कार्ण छाटे मित्र बर्ण वाधियां ह। जामा দের একবারে পর করিয়াছ।। সতীব জানাতে পোড়া মুখে পড়ে জ্ল। থবে কেন অধেমুথে রহিলিতা বল। শুনি নন। দির বাণী অস্তরেতে জলে। জ্দেবিষভরা মুখে মধুম্বরে বলে वाका गुर्थ (हाथा कथा नाहि वात्रा नाख। त्व शाद्ध (म জন গিয়া করুক এ কাজ।। দেখিবারে পতিভক্তি না পার আমার। ওদ্যাবধি মোর কর্মে ভুমি লহভার।। কহিল যে তোমারে করেছি আমি পর। অদ্যাবধি ভাই লয়ে সুখে কর ঘর।। এই রূপ কথার কৌশ্রে নারীর্নণ। প্রস্পুর क्लिमन केंद्र गर्ककन। छाहां (मधि नन्मतानी इहें। ভাবিত। রোহিণীর প্রতি চাহি করেন ইঙ্গিত।।ইঞ্চিত ৰচনে রাণী কছেন তথন। রমণীগণের দ্বন্দ করাও ভঞ্জন।। मडी गास्ति निकटिए याहे शतिशति। विक वटन व्यान तिक গোপালে এবার ॥

श्राविशी कर्कृक नातीन्तरात हम्म निवातन।
भागत। तानीत वहत्न उत्त उक्ति ताहिनी। नवन्तर्वत कन दिनी सम्भूत वानि।। विभटन वित्ताम कता अंडि समकन दिनी सम्भूत वानि।। विभटन वित्ताम कता अंडि समकन दिनानात्त क्षणा किति हास ता किनमान।। मञ्जीत कर्णा किति सम्भूति। क्रिके वाहाई तार्थ ताक्रिल दिना क्षणा कर्णा कर्णा कर्णा वाहाँ वार्थ ताक्रिल दिना क्षणा कर्णा कर्णा कर्णा वाहाँ वार्थ ताक्रिक वाहाँ वित्रकान

ভার मञ्जू इंटर क्रियाधन ।। विद्रश्यक नामरचार्य क्रियामा द्रिशीको । एत कार्ष्ट दिना मुल्या विकाद अमिन। आहमक विनदहर् द्यारियों करिया द्विमानित्व हम्स करमर् यूहिन किन्छ क्ट्रेश्य इं भारत मा क्ट्र सीकात। अवटन छेटाटत छूमि হও আঞ্চার। হেনমতে কত নারি করে কানাকানি। गकल्य वरम जूमि महो कानि ॥ धहे बरल शबुल्ला विवाह সবই।। ভার মাঝে দাছাইয়া কমলিনী রাই। ভাহারে চাছিয়া কেং নাহি কিছু ने । कुछ वनक्रिमी वनि कानरा নিশ্চর। ভাষা দেখি জীমতীর বাঙ্কে অভিমান। নরনের कटन ভारित कमन नशान। निश्वान हो जिले ने भागति है कुक বলিয়া। অসতী হয়েছি নাথ তে মারে ছজিয় ।। সেই ছেতু ঘুণা করে নাহি কহে কথা। ভাহাতে হাদয়ে বিছু নাহি শোর ব্যাথা। যদ্যপি দৈখিতে পাই ভোমার চেতন। তবেত এরুধ মোর : ইবে মোরন। নতুবা ত্যক্তিব দেহ যমুনা জীবনে অত্তে रयम शाहे छान छ ताछ। हत्। । अख्वलि गाथि कल छात्म কর্মলিনী। এখানেতে দতী চাহি জ্ঞান রোহিনী। সকলের काद्य दनवी याद्य शतिशत । कान नाति व्यान ख्या नाकदत श्वीकांद्र ॥ जांश दिश्व देन्स वह दम्य मिक्कादि । इन्सावन মাঝেতে কি माহি गতी न हो । धिक धिक शोक्न वागिनी নারীগণে। একজন সভী নারী নাহি এই ভাবে। সে कथाञ्च नक्का (পर्य यह मादीशन । कर्षाबुट्य तरह मर्द मा टिडोटल वणम ।। टिकामकम किछू यनि छेखत ना मिले। उट्टिड द्वाहिनी दमनी निरुष्ठ रहेन ॥ दर्गाश्या यट्नामा दानी कदरन রৌদন। মোর ভালো সভী খুনা হৈল রুদাবন।। ধনিষ্ঠা मार्गिट्ड मधी गत्नामात हिल । जानीत कर्नत काट्ड कहिट्ड नाशिन।। अगिना कृपिना हुई जन रक नहीं। वित्रवान व গোকুলে আছমে থেয়াতি।। কিন্তু ভারা ক্ষা পক্ষে বিপক্ষ मगाई। जातित्व कि मा जानित्वकेहिटक छताहै ॥ तानी बदन ভान मान कहिरन कमनी। करिना निकटि हन याहेव जा-পनि।। ज्वेश कानिव ठाँद्र क्तिहा मिन्छ। खिल पटन भोब्रहन बद्धा यत्भामित ॥

अथ किनात निकटि यदेगामात अभन्।

लघू-जिल्मी। उद्य मन्त्रांनी, यम लानिनी किंगा ভবনে यात्र। नाहि किছू श्रुटि, চলে শীপ্রগতি, মঞ্জিরা क्रीक्षात्र । धुनात्र धुवत, नर्वक्ष्णवत, बुक्कत्वन ज्ञानब्रे । সক্ষে চারি স্থা, ধনিষ্ঠা সমূখী,শ্রলা শক্তেত তৃত্থী ।। এই ब्राली हावी, मदमद् मिनी, खंडिना छाटन विशा । काथा त्या कृष्टिनां, विन छाक पिना, कृष्टिना चाहेल धाहेशा । पिथि नमत्रागी अधिना जाशनि, जामन जानि त्यां गात्र । देवन देनि হয়ে কুত:ঞ্লি, বিবরণ জিজাসয়। ভানেছে সকল, তবু করে ছল, एम किছू माहि कारम।। क्रिया विमय, कुमन स्थाय, यरणामाक्रिविमामारम् ।। वदल यरणामछी, कि कव छात्रछी, কুশলায় বিবরণ। আঞি দিব ক.ল, কেটেছে কপাল, হারা-য়েছি কৃষ্ণধন ।। শুনি চম কিয়া, উঠে শীংরিয়া, বলে একি সর্মনাশ। হাদি হাউভরা,মুখে সকাতরা, করে কত হা ছংশা किहर किहिल, कि कथा किहरल, श्रीस्टा विकास हिस्स। **बिक जक्यां**ए, नित्त रक्क घाट, कर मिश्र विस्थायित ॥ धानी वटल आव, कि करिव छात, आमात दशाएं। केशाना। नाहित्व नाहित्व, शद्य वाहिश्चत्व, मुक्ति (शन नन्द्रतान ।। (क्लम कार्न,कर्व क्ल स्मा, (य र्यमम व्यव स्नारम । कार्न क्ल कन, देवना विक्रकन, विवध ध्यांथ कारन ॥ करि वह्नम, ना थित्र क्रम, अविध विकल इहेल। देना बक्क म, देवामा द्रम मान जिक्रमात्य छ अतिन ।। প्रत्थ (मथा भाहेरम, ভाशांत फाकिस वानित्यम बिज्ञ कि। (म जन कामिसं, शाशात्म किथ्रा, करिला खहु ड अखिना विद्रालक भट्टे, मछी माड़ी (यहे, यम्-नात कल कीन अवध खनिदा, पिटले था अग्राहेदा, करव वाटन नील्मित्।। मशीय श्रेट्यं अवीका कवित्व, यसमात शिद्व রিয়ে। যমুনার পার, হবে ভিনবার, এক কেশ সেভু দিরে।। তবে कानि गंडी, शास्ती स्क्रमडी, काशी श्रव हरन छ ताथ कथा खरान, यक नाती अर्न , रकन ना करत सीकात ॥ अर्मि अधिन धनी, शिक्तिश्वाश्वी, एवं नमा (वह नाहे। एकि नशी कति, आने यमि ताति, एटवर्ड आशास्त्र शहे।। भूमिश

किता, केवन शामिना, वर्ता भी कान जात । यह नाय जिर्स क्ष्म में के निर्देश, शांत रख्या जिनवात ॥ में जात वर्षत, रूट शांति शांत, किन्त चार्ट्स किन्नू कथा ॥ जामांत्र य केना, में निर्देश गर्मा, सन्। माना। यथा छथा ॥ जामांत्र य केना, में निर्देश गर्मा। जामांत्र जिल्लामि, किन्ति जामि, यदा रुप्त स्वान ॥ जामांत्र जिल्लामि, किन्ति जिल्ला किन्ति यान ॥ जामांत्र जामि, कृष्टिना किन्द्र विवाद ॥ कृष्टिना क्षमिना, को-शिक्ष क्षित्र किन्न किन्द्र विवाद ॥।

অথ তটিলার কুটালার কথোপকখন।

পরার। শুনিরা মাথের কথা ক্র্যিয়া কুটলা। কর্কণ বচনে कारण कहिएक मानिना।। छान देश्न महिन तम नत्स्रत कुमात युष्टिन शतम भक्त काशान मानात ।। यात काना घटत शहर লজ্জা সদা পাই। সেজন মরিলে ভাল আর কিবা চাই।। যার মুভা হেতৃ পূজা মানি দেবস্থানে। তাহারে বাচাতে যুতুপাব িকি কারণে!।ভোমার কুলের থেটে। দিল ঘেইজন। ভূমি ভার হিত হেতু করিছ যতন।। যে বল সেবল মাণে ভাহা না চইবে বাচাইতে সম্পত্তে ঘাইতে নারিবে। আর কে এমন সতী व्याह्न तृष्पावत्न । वन व्यक्ति व हाहेदव नत्म नम्पत्न ॥ व्यक এব ভূমি আমি না গেলে তথায় ভাষণা মা,বে শক্ত একথা ি নিশ্চয়।শুনি কৃটিলার ব:ণী প্রবিনা জটিলা। প্রবোধ বচনে তারে বুঝাতে লাগিলা।। यে क'हमा मध्यदे मक्ति क्षमान किन्तु जालमांव मना हाहि यममामा। एमसूट वाहाहेट माहि स्मातं मन। एटव (य याहेटक हाहि यटमत कावन।। (य कर्मा कतिद्र मा भाविल माविभए। मा कमा कविदल की छि बटर <u> जिङ्ग्दर ॥ १५वानिम १२३ किछि घृषिद्य नवाहे। क्रिन</u> কুটিশা সমান দতী কেহ নাই। বিশেষভঃ সভিত্তপে জানেস্ক क्रम । मार्टशाल विलिट्स उद्य था किरस कारण । जमनी बनिया श्रीह यू विदव ने वाहे। अहे दश्कु अहेक में क विवाद हाहे ॥ अख यमि क्रिना विनिन्। तुवाहेता । कृषिना उपिना उप कत्विक रहेश ।। बार्ट्यगुट्ड डेठि छत्व वानिम उ मदन । बाहेला छ-मिना मर यदमाना मनदन ।। कृषिना यदनामा नदन कदत व्याप-

পেত। আশীর্কাদ করে রাণী শিরে দিয়া হাত। তবেতজটিলা বলে শুন বশোমতি। জল আনি বাচাইব ভোমার সন্ততি।। এতেক শুনিয়া বাণী রাণী হরবিত। জটিলাকুটালা লয়ে চ-লিলা ত্বিত।। আপন আলয়ে গিয়া উপনীত হইয়ে। কহি-লেন নন্দরাণী বৈদ্যেরে চাহিয়ে।। এই আমি আনিয়াছি সভী ছইজন। যে হয় করিতে কর্মা বলহ এখন।। ভিজু বলে বৈদ্যার্শী দেব ভগবান। চলিলেন কেশ সেতু ক্রিতে নির্মাণ অথ বৈদ্যের কেশ সেতু নির্মাণ।

দীর্ঘাত্রপদি। সভী দেখি বৈদাব্য, হয়ে অতি অষ্টান্তর, সম্বরেতে ময়ুনায় যান। মাথা হৈতে তুলি কেশ, লইলেন অবশেষ, কেশ দেজু করিতে শির্মাণ ।। যমুনার ভটে গিয়া কেশে২ প্রাস্থ দিয়া,শতধন্ত দীর্ঘে বাড়াইয়া যমূনা উভয়কুলে তুইলাল রক্ষুলে, টানা দিয়া রাখিল বাক্ষিয়া। পার্মভালে যোগ তার। থাকিল কিছু আয়। নিম্নতারে রহে শুন্যময়। ভার নিয়ে সুগভীর, অতলম্পশ্নীর, দেপিয়া মনেতে লাগে ভর ॥ এই রূপে সেতু করি, নন্দের মন্দিরে হরি, বৈদ্যরাজ আদি অরা করে। কহিলেন যাও ভবে, সহী সঙ্গে লয়ে সবে পার হয়ে আনি দেহ বারি। তবেত জটীলা ধনা।,নারী মধ্যে অগ্রগণা, নিজ কন্যা, অগ্রেতে কবিরে। সভামখ্যে দর্প কবি, ককে লয়ে হেমঝারি, উঠিলেন অগ্রসারী হয়ে। ভবে ব্ৰহ্মবাসীগণ, সঙ্গেচলে অগণন, জটীলার সভিত্ব দেখিতে ৷ वान तृक्ता युवा करा, छो भूक्ष हत्न खुता, व्हरम गत्व हतन হর্ষিতে ॥ রাধিকার সহচরী, রুদা চিত্র। আদি করি, ষাভ্শ गर्छ अक्रेजन। किंक्स्ड नादी गड, এक गुर्थ कर कछ, नकरलटण किंदिए गमन ॥ (इनमरण खंबनाती, हिलटलन माति সারি,নাহি হর ভাহার গণন।। সবে মাত্র রুদ্ধাবনে, রহিলেন পঞ্জনে শুন ভার কুছি বিবরণ। ছাটেভন্য বজনীধর, চি-किंदनक देवणावद, क्रकमीला यटणांदा द्वाहिनी। उन कृटक व्यक्तिया , अहे (इक् नाहि निया । अधिकक्ष ताथा स्वननी ॥ क्रक कनत्क्रत स्टार नाटम नरम्थी हरह, नाहि गान कि इक्षे मन । बहै इक् शक्तकत्न, इहिन्तन इक्षावदन

আর সবে করিলা গমন। ইহা ভিন্ন অন্য প্রাম, কতেক কহিব নাম, যত দুর শুনে সমাচার। তথাকার লোক যতঃ ধার সবে অবিরত, দেখিতে অন্তির্ঘা ব্যবহার।। এই রূপে কুতুহলে, যমুমার জলে স্থলে, রতহ লোক অসংখা গণন। কেছ নৌকা করি ভর, কেছ উঠে রুক্ষোপর, অব্দে গজে রুথে কোমজন।। যমুনা উভয় কুলে, পদত্তকে ভূমিতলে, রহে কভ না হয় বর্ণন। স্বর্গে থাকি দেবগণে, করিবারে দরশনে, আকাশেতে করে জাগমন।। আপন আপন জানে, রহিয়া ভাকিশে মানে, কৌতুক দেখেন সকলেন। ভিজ সবে সেই স্থলে, রহে সবে কুভ্গলে, পরে শুন কহি বিববণ।।

অথ জটীলার কেশসেভূ পার হওন।

পরার। এই ৰূপ সর্বজন ষমূনার কুলে। কৌতুক দেখিতে সহব রহে কুভুহলে।। হেনকালে জটীলা আইল সেইস্থানে। मने कवि करण्यमी मना विमामारम ॥ मञीर खुत वरण जिल्लान ভুচ্ছ করি। কেশ সেভু দেখিয়া কি আমি মরি ডরি।। এই কেশদেকু পার কোন বড় ভার। ভিনবার পার কেন হব শভ বার।। এই দেখ অনায়সে পরিংরে যাই। অসতী কুলটার মূথেতে দিয় ছাই।।হেনমতে বহুদর্পকরিরা জটীলা। হেমঝারি কক্ষে করিসভুরেচলিলা। অহস্কারে মন্ত হরে বেগেতে চলিল কেশ দেতু উপরেতে পদ ভূলি দিল।। যেই মাত্র পদা র্পণ করে দেইস্তলে। কেশ সেতৃ ছিড়িয়া ফটীলা পড়ে ভলে জলেতেপজিয়াধনীভাগিয়া চলিল।তাংগদেখি সর্বজন হাগিতে লাগিল। বিপক্ষ গণেতে বলে ভাল বটে সভী। সেতু পার হয়ে জল আনিছে মন্প্রি।। এইবাপে বিপক্ষেতে টীটকারি रमग्री कविला পভिन्ना जल्म **कानिया दिकाश ।। द**ोका काद्रा হিগাণে যত দেখিতে আইল। দেখিয়া ছদিশা ভারা নৌকাতে ্ভুলিন।। নৌকার আনিয়া তথ্য কুলেতে উঠায়। কটানা मा रहारन पूथ भनिम नक्कांशाः बहिश्वांत छेलशान करत नर्स-্জন। তাহা দেখি কুটীবার অরুণ নয়ণ। মারেরে নিন্দ্র। কহে মুগভীর বাণী। থাকিবে কিঞ্চিত পাপ মনে অনুমানি (मांव আছে जान योग जानात मदन। छद्य लाक शता-

অথ কুটীলার দেতু পার হওন।

नघु जिलने। कृणिना स्वन्ततो, छठि इता कति, द्रिम्यांति कत्क नहा गरामा वर्तन, विस्त नहान, रेड्ड कि निरोक्त प्रांथ महामा वर्तन, विस्त नहान, रेड्ड कि निरोक्त प्रांथ महामा वर्तन, विस्त नहान के कि निर्मा कि कानि कि घरि, कनक वा तरि, कनक विशेन होत्या। मति छहे रचात, प्रांथ महार्कात, हत्न कर्म कार्य। मति छात, नहान कि वार्य, मडोक्त कानाह छात्य। धत्र कि कि कि हिल् हिल हिल हिल के कानाह छात्य। धत्र कि कि हिल हिल हिल हिल हिल के कार्य कार्य। कि कार्य हिल के कि हिल कर्म हिल कार्य कार्य

अट्रक बिना। इटलटण जिल्ला, गटलक तम्भीनटन । मन्त क्रिंदित, श्रमार्थन करत, घटान गाँकिंछ गर्म। सममहत् क्रिन जनन, दरम मिलू उपदिर जमिन हिडिन, कृतिना शिक्त, तार्थ (नाक नकत्तरेष्ठ । वित्रकालकति, कृपिना सून्तरी, बादित यह बदल हिल। त्यदित छोत्रा बान, यद दछादन नाम, याः र्य मदन व्योद्धित ।। टाक्षांत्र मिलनी, यटक तकिनी, दमझ कछ করতালি। বলে সতী ভাল,ভাল ভাল ভাল,সভীত্ব ভাল জা-नोहिनि। किर छेलु (मेह, किर्दा रामग्न, थन थेल बत केति। क्ष्म भाषा शूरत, त्कर खेरेळचरत, घन त्मत्र गिरेकाति। अकत्भ नकत्नामश कानाहरल,निम्मा करत कृषिनाद्य । कृषिनाद्यात क्षांमिश (बक्षांस, यस्ना भकीत नीत्व। शक्तिं। जत्रक, बदनत कां छत्न, काञ्चित देशन काछ। जानित वनन, देशन विवनन, ना रिक जरकत धृष्टि॥ जनः (थाय जात, भिष्ठे देश जात, ना भारत निट्ड माञात। स्मात थान यात्र, कि करत नष्टात्र, करत धनी द्दाराकात्र।। जादि जादि करव, छाटक छेरेक्डरतः प्रवाञ् ভালিয়া দৰে। বলে মার মার, লয়ে আদি তরী,উদ্ধার করত **छट्य । (यह प्र**ग्रवान, इंड कालवान, श्रांनमान (पर त्मर्टत । हैं कथा भूनिया, गथीता शांगिया, वटन नाहि टर्गन अट्टा ।। अ পাপ কারিণী, কুল কলক্ষিণী, এখন গাঁচিতে সাধ। ঢাকি নি জ বাদ, করিয়া বিধাদ, লোকে দেও অপবাদ। বিধি ভতুকুল আজি নে আকুল, প্রকাশ করিয়াছিল। কোন মুখে আর ও मुश्र (डामात, लाटकरत रम्यारवन्त । धिक धिक धिक, किकव व्यक्ति, इताति शालिनी कारता। हि हि नाव नाहे. (शाहा मृत्ये हारे,(जामातमत्र जान ।। खबाद्य जाशादत्व रामवादर मिर्ल यक त्रवीत्रन्। त्र कथा एक मुत्न, छाटक श्रान्त्रपत्न, द्राचिएक क्ष्मिन जासन ।। एमधि जांत मना, अपनक बहुमा, जीत লইয়ে যাইল। ধরি ভার কর, ভুলি নৌকাপর, বসন পরিতে पिता। एटवर कृतिमा, खार्टारङ वाहिना, बाहेना कृतिना भारम । छाहा रमिश्र भून, शांस ग्रन्सवन, कट्ट कछ क्रोबार्य कृतिना एथन, मा ट्लाटन वर्षन, बट्ट द्रके साथा कृति। अथा-स्टि नक, विकित्तानक, मा मिलिल गठी नाही।। विकरि

উপার, ভারিরা না পার, প্রমাদ গণিরা মনো আপিন ভবনে বৈদার সদনে, উত্তরিল ততক্ষণে। যতেক ভারতা, বৈদ্য ভারতার, করাইরা ব্রজরার শোকেতে মোণিয়া, হা ক্লক বলিয়া, ভূমেতে নক্ষ লোটার।। করে ভিজনর ওচে বৈদ্যার তব পদে পরিহার। যে হয় উপার,করহ ভূরায়, ক্লক শোকে বাঁচা ভার।।

व्यापामारक कल वानित्क देवदेनात नित्यथ। भवांत । मेडी यन ना मिलिल गरव निवानम । क्रकारणारक मुक्ष इत्य क्रांनिम्ट्इम नन्त्र ॥ ज्वां यर्गामा यानी वानिम উঠিয়া। কহিতে লাগিল কিছু বৈদ্যেরে চাহিয়া। খুনং বৈদ্য वत करि निर्देशन। जल का निराद कामि करिय शमन।। পঞ্চবর্ষ কালে মোরে পিতা করে দান। ভদব্ধি আছি আমি পতি সরিধান।। সেই কালাবধি মোর হইতেছে মনে কিছুই না জানি আমি পতির বিহনে।। ভাতএব আমারে আর্ত্তি কর ভূমি। পরিকা করিয়া জল আমি দিব আদি।। এত यनि नम्पतानी वनिन बहन। देवतमात मत्मरण देशन जावना एथन।। यत्भामा यम्माल कन कानिवादत यान। ना भारित ক্রিছে মারের অপমান।। পরিকা ক্রিয়া জল মাতা যদি তানে। রাধার কলক্ষ ভবে ঘুচিবে কেমনে।। এভেক বিচার देवना कृति मटन मन । यस्मानीदत मिछेवादका कदत्रन वात्रव বৈদাৰলে মাভা তুমি পারিবে আনিতে। কিন্তু উপকার কিছু मो इत्व जाहोरल ।। मारवरण छेषधि नित्न मोहि धरव कमा इथा किन व्यापनि करिटव शतिकाम । वाज केन देवमाकाण श्रेष्ठ मात्रात्त । अदार्थ छाङ्गेत वाका ना इत्र थेखन ॥ उन्दर्शि मखादन अवस्थि निर्म मात्र । नी इस (तारशत मासि क्यांनिर्द खेशात्र । यहणामी वृद्धम वाश खंदर कि इहेर्द्र। मिछा **छ** कि मीलमनि প्रार्ट्ड महिरव ॥ देवन कन जननिः ना हित कत्र मिछ । अनमा कतियो सिथ खटक दक्यो मिछ।। श्रम्ब কুপার স্থার জ্যোভিষের গুলে। চর্টারে যতেক আনিতে পারি शर्गा अन्तर्ग शन्दिक वर्गन देवगुरत । विष करह किया वाद्य छव घटनाहरू।।

# जय देवटमात भागा।

भाषात । योष् मृद्यः देवमानत कृष्ट्न तहन । शक्षम द्र्यत भिष्ण कान बक कन्।। ठाव इट्ड थिए मिव क्वन कविशे। খড়ি ধরি সেইশিশুর হিবে বলিয়া।। মন্ত্রজন করি আমি ঈ-শ্বরৈ ভাবিতে। উঠিবে সতীর নাম শিশুর থভিতে।। এতেক শুনিরা তবে যত গোপর্ব। প্রমুব বাহীর শিশু আনে এক জন।। তার হত্তে খাড় তবে দিয়া ততক্ষণ। বৈদ্যৰূপী নার্ अव कर्ण नावायन।। अयारम निकृत शास्त्र थिए धन वृत्त। প্রথমেতের জক্ষর খড়িতে লিখিলে। আগ্রাকর উঠিন বলিল বৈদ্যবর। ভাষা ধরি নাম সতে কচে পরস্পর।। কেহ ৰলে রমাবতী কেহ বলে রতি। ঃঞ্চবিলাদিনী রসমঞ্জরী যুবতি इस्नमाल व्यवकार्यान वस्नाम लग्ना देवनावत्न देशव मास्यादक কৈছ নয়।। পুনর্কারজপেতে বসিল মহাকায় । শিশুর খড়িতে খাসি অংকারযোগায়। রকারে আকার মিলে রা শব্দ ছইল रेवमावरम ज्यामाक्षव अवाव मिनिल ॥ छटव मटव हा जाटमाट यूष्ठ मात्र कारन । वाथा विदन त्रव नामवद्ग देवना ज्ञादन ॥यनि ৰল রাধা,নাম কেন দিল বাদ ।ক্রম্ফ কলফিনী বুলি আছেতার वीम ॥ भेरे रुख द्रांधा मांग्रांकर मोहि कहा। रेवनावलियेशव मध्यार्ड (कर नरा। अर्ड विन मञ्ज कर्म हरत अर्क मना ध अस वाशिश देश्ल श्रीष्ट्रिक शाक्तम ।। ताथा भक्त देश्ल यनि धकरक भिन्न । रेवमा वदन अहेवाव देशनिक्षण्न ।। ब्रुश्वावदन িকোন নারী রাধা নাম ধরে।ভাষার রূপেতে রুদাবন আলো করে।। চল্ডিমান্য হালা দৃশ্য বিশ্ব বিমোহিনী। দীহঁকেশ মধ্যদেশ তুক্ষ নিত্যিনী। খঞ্জন গঞ্জন আখি চক্ষীযুক্ত छोत्र । कृष्टिक स्थाटक बंदर विश्वास्त्र नात्र ।। अहेक्ट्य (यहे मात्री (मह माध्योगरी। दिन्गरमञ्जू भात रेश्टें को शांत्र मक्कि म वसनी क्रमा कति जानि एत्र वादि। एटव नेपाय एक स्रोत वाहाइट अर्ति। अब मिन रेवनांत्र विनन वहन। मूर्नि हम-किछ देशत नवाकांत्र मन ।। माधु लादक मकरन वनद्य जान बी भी। कृष्टीन लाटकदळ गृह्य करते कार्नाकारी विक्रक

श्वना ।। कणिना कृणिनी हिन द्रेष्ठे मोश्री कति । वार्यामाम भूनि धनी छेठिन निश्ति। जन्दत्त मत्धा छात अधिक स्विल द्यांध खद्र देवमावदत कहिटल नातिन ।। काना दान देवमावत कौन उर्व छन। अवसरम् अच्छार्न इरस्ट निशृत्।। ना कानि বাচিলে কত বাড়িবেক আর । শিথিয়াছ যার কাছে ভারে नेनक'त्। 'रामि पात्र पाटक महि ध कथा छनिया। तारिका ইইল সভী খড়িতে গণিয়া।। ব্ৰহ্মাঝে নারী মধ্যে কল-किनी (यहे। ट्यामात नगरन आकि मड़ो देश (महे।। दरन मा देवां यान निरम वह इत । क्षेत्र श्रीत्रा देवना करत्न উত্তর।। কেন গো কুটিলা ভূমি ছলে কটু গাও। মিছা বাদ করি কেন কোন্দল বাড়াও।। আমিতো অবোধ বৈণ্য গুণে হীন অভ। আপনিতো গোকুলেতে আছ বয় দতী।। कानिशास्त्र मक्टलर्ड रहामात् रहकार। वाका मूट्य कथा कह नाहि वान लोख।। अञ यान देवमावत कृषिनादत वरन। শুনিয়া ভাহার বাণি তুলা কোধে জলে।। ধুনা গন্ধ পেয়ে त्यन भनमा भाष्ट्रिम। शक नाष्ट्रा निता देवत्मा शानि चात्रिज পাড়য়ে অসংখ্য গালি মুখে যত আসে। শুনিরা সভাস্থ लाक नकटलटा इंटिन ॥ उटवंड यटमानावानी वियम मिथवा কটিলার হাতে ধরি জাপনি উঠিয়া।। রাণী বলে কটিলা গো ক্ষমা কর মোরে। আমার মাথার কিরা সদত তোমারে विপদেত इस क्या ना इस छ हिंह। भी नम्बि बादक सादक কর তার হিত । রাধিকা হইলে সতী ক্ষতি কিবা তায়। তোমার ঘরের বধু অন্যতো দে নয়।। ছিল বলে কুটিলারে नित्र करिया। त्राधिका निकटि वानी हिना शहेंया।

ভাষ জীমতীকে যশোমতীর বিনয়।

দীর্ঘ-ত্রিপদী। রাধিকা যণ্যাপি সতী হর্ষত বংশাসভী ক্রতগতি রাধা কাছে গিরা। ছটী কর করে দিয়ে, করেন কাতরা হয়ে, উঠ ওগো র্যভাসু বিরা। ভূমি ধন্য পুণ্যবভী ব্রজমাবে আছ সভী বৈশ্রাক গণিয়া বিশ্লা স্কর্নেতা শুনিরাছ, ভবে কেন বসিয়াছ, কুপাক্রি উঠিতে ইইল।। ক্রিয়া সেতু প্রীকা, দেখাও সভীত্ব দীকা, শিকা কর্মক

बामन वर्गीत । बाह्य कुर्यन थान, व विशास कृत जान, बादशा मादना बिझनटक, था। कि ॥ कहेंबल नमहानि, बार्षि कारत कर तानि भूनि तांचा लोगांक मंत्रीत। श्रास्टत रहेन छत्र, मूर्य योका ना क्युत्र प्रहे हर्ष धन वरह नित्र । मरनर द्राधा गादि, यदन कि कविरल द्वि, ध्विक खाद घडे दिल माञ्चा एव त्यादक स्थान यात्र, माद्रात छल्दत्र मात्र, हेट्य काचि कि कात्र प्रभाव ।। একে कलिइनी यहन, जार्ह यान विदा करन, मिडू शांत रहेटल मा शांति।। अधिक क्लक्ष श्हेटन, लांदक प्रथं मा (मथिदन) दकमदम वाहित छटन इति। जूमि প্রস্থু বিশ্বকর্তাঃবিশ্বের বিপদে হর্তা,বিশ্বত্রাতা বিধাতা ঈশব তৰ পদ খেই স্মরে, ভাইার বিপদ হরে, বিপত্য ভঞ্জন নাম ধর। হা রুক কর্মণানিষ্ণ, জগতের প্রাণবন্ধ, রা ধরা জ্বা हेन्सू भागम । एव हवन विहतन, नाहि क्षानि कमा करने, उदय কেন বাড়ুয়ে তুর্নাম।। এইরুপে বাধা দ্ভী, ভাবিরা আকুল ছাতি,চুই চক্ষে বারি ধারা বয়।। হেনকালে কমলিনি, শুনি लिम रेमव्यामि आंत किश्मृनिष्ठ मा शांत्र । कि काइएव ভাষ রাধা, ভূমি ক্লুঞ অক্ল আধা, আদ্যাশক্তি মগ্রী সনাতনা কেন তব এত ভুল, ভুমি সকলের মুল, সভী সাধ্বী পতি পরার্থন । উঠ উঠ ওলো প্যারি, দেভুর পরিকা কবি, যমুনা হইতে আৰু বারি। দে জলে ওবাধ কলে, খাওয়াইয়া কুতু-হলে, চৈতন করাও তব হরি।। এরপ আকাশ বাণি, আপন কর্ণেতে শুনি, আনুষ্পিত কিঞ্জিত হালয়। তথাপি সভয় মন ভাবে রাধা অনুকণ, কি ঘটিতে কি জানি কি হয়।।ভাবিয়া किष्ठिश थनि, श्राप ভावि इक्लानि, यामामाद्रकन मृह्यदे । ভোমার হিতের হেড়, পঞ্জিল লইব দেতু, শেষে মম ভাগেয় याश करत । भून त्या त्यामारत करे, शत्रोकारक क्षी १र्ड बोहर यनि द्रष्टा मात्र मन्मन । उदय द्रम आतित किद्र मञ्जूर। यम्मा किरत, त्मर्किंग कालिव कियम।। क्षीप्रशासनाम क्य, क्रम तार्थ काव क्या, क्रिविटक क्रिएक एक्टरम । ess कि चुल्ला भारति, यथम अविभि हित्र, वार्भ धतारब्रह निय छत्।।

श्रिम और देन प्रतिक श्रीकार अ ग्रामाय भ्रामायका । পরার। अभेर कर्त्रन यहि পরিকা छोका। यहनानात कान कार्त नाहि भाराभात ।। करत्र अधियो तानी करतन বিনয়। উঠমালো শীব্র করি বিলয় না সয়।। ভবেত রাধিকা সতী রাণী আশ্বাসিয়া। আপনার সথী সবে কহেন ভাকিয়া खिनिया गिन्निनेशेश व्यानिष्ण समाद्रम् कट्ट विन्द्युट नाहि প্রয়োজন। রাই বলে সঙ্গে চল যত সংচরি। পরিকা করিব আমি কুষ্ণ নাম স্মরি।। তাহা যদি ভগবান করেন রক্ষণ। ভবে সে আমারে পুনঃ পাবে দরশন।। নত্ত যমুনা জলে তেয়াগিব প্রাণ। বিদায় হই ই আজি ডোমা সবা স্থান।। রুদ্দ। কহে কম'লনী ভাব ভকারণ। যাত্রাকালে স্মুর তুমি জীমধসুদন।। কৃষ্ণ নাম বলে ভবণিশু হবে পার। য**ু**না হইতে পার কি ভাবনা তার। রুন্দার বচনে রাধা হঃবিত ২ইয়া। উঠিলেন জ্বতগতি জীংরি স্মরিয়া।। শুরুজন চরথে करतंन धानिभाष । द्रमकारम कृषिना छेत्रीश धरत हाउ ॥ কোখা যাহ কমলিনী নাম হাসাইতে। আমি হেন্ স্তা ঠেকিয়াছি পরিকাতে।। यनि বল কবিরাজ করেছে গ্রম। मकिन चनिक छछ रेबरमात् यहन । रेबमा नरह धुई रबहे। কলক্ষের ডালি। আসিয়াছে নোপকুলে দিভে চুন কালি॥ কে কোথায় প্রভায়করে ভণ্ডের বচনে। জাপনার হাদি কথা আপুপনি দে আনে।। ভূমি শাঃম কল স্কণী জানত মানসে। পরীকা করিতেখাহ কেমনগাংগে পরীক্ষাতে ঠেকিলে ছইবে বিপরীত। ভূবন ভরিয়া হবে কলস্ক বিদিত।। একে ভোর मार्ग लाटकमूथ ना मिथाहै। देवन २ श्रीका कृतिहा कायनाई अञ राष्ट्र कृष्टिया कहिला वात वात । अधितांशांत श्राम अपना नारि गरंद्र कार । कृष्टिलांद्र कूद्रुद्दन शाहेश (दरम । विगटनम कर्माननी रुद्ध युक्तमन ।। नश्टक नद्दां क श्रुवि व्यक्तिम श्रीत जिलमान त्मार क्यार हरक वटहे नी बार्काहा जिल हमा पृष्टि ভাষরে রুবিয়া। কুটিলার প্রতি কোপে কহিছে ভগ্নিয়া।। अनत्ता कृषिना जूमि यक वृक्तिमंति। दिवस्ता भाननारत क रेहरक मही। द्रापा कन किनी क्रिय गासा পरिज्ञ । अव-

(भाष धक भारत कविला विश्वाला ।। (गामन मधी ब्रुभमा इडेन বিদিত। তথাপি কহিতে কথা নাহও লজ্জিত।। আপ্ত ছিত্র ঢাকি শাখ পর ছিত্র খেও। প্রাহাস হেতু এচ পবি, छोপ প ও।। রাধারে ষাইতে মানা কর্কি কার্বে। যে জন यमन गड़ी क्रांत निक मत्न। अवश्र श्रीमनेतान मडी সারে জার। ন'ংলে প্রীকা কেন কবিবে স্থীকার।। এত यमि ब्रम्स। वटन कविनादिव १०८४ । छेठिन कविनाधनी चारनक জনিরে। ক্রোধে রুদানং দ্বন্দ করিতে লানিল। ভাই। দেখি नमतानी श्रमानगानला। कठीना निकट्ठे निया कट्टनपातानी माखना कत्रा छेठि ट्यामात मन्मिनी ॥ याम वाय भारत তবে ইথে কিবা ক্তি। ভোমার ঘরের বধু ভোমার সুখা।তি यानामात्र अञ्चलारम किनि छितिया। वनाहेन कृष्टिनादत হাতেতে ধরিয়া। জনুমতি দেও তুমি ডাকিয়া রাধায় ब्रन्माद्व यरणामाक्षांनी व्यान्ति वनाव ॥ क्ल व्यानि वै। हाहेटल ্জাপন ভনয়। এই ৰূপে উভয়ের হন্দ নিবারয়।। ভটীল ব্রাধার প্রতি করে ভন্নতি। পরীকা করিয়া জল আনলো শ্রীমতি ।। একথা অনিয়া প্যারী হর্ষিতা চইয়া। উঠিলেন পুনরায় এছরি সারিয়া।। আবেতে প্রণান করি জটিলার পার। তার পরে প্রণমিল রাণী যশে দায়।। তদন্তরে প্রণাম ক্রি ছত গুরুজন। সমযোগ্য জনে কন বিনয় বচন। কুটি-লার হাতে ধরি করেন মিনতি। সবাকার কাছেতে যাচেন क्रयूर्याल ।। मक्टन मरस्याव् विष्यु करत्र कामीकान । क्वन कृष्ठी ना हिटल भन्छ वियान । छन्टात मर्सा छात त्रदर श्लार्श মৌখিক বচনে তথা পড়য়ে মঙ্গল। এক কালে সকলেতে करत कंत्रध्यनि । उरवज् करनट उत्त त्राधा कर्माननी ।। उत्त লেখি বৈদ্য পুনঃ যমুনায় গিয়া। পুনকার কেশ সেভু নির্মাণ করিয়া। আইলেন ক্রত যথা য়াছত মুরারি। জল তেতু करन हरन छात्रत कुमाति॥

আমতীর যমুনায় গমন।

প্রার। একে২ সকলের অসমতি চাইয়ে। চলিলেন হরি প্রিয়া হরিকে সরিয়ে।। গজেন্ত গমনেগতি কলে হেনরীরি

ह्यू फिरक हक कति वर्त मःहित्।। इहेन अश्रुक्त रमांखा कण ভাব হয়। চল্ডের মঞ্জ যেন ভূমেতে উদয়।। @ मতীর মুখ-हिला निका भगवत । नेथीनन सूथ छाइक हिलात (नाचत्।) একতে जिल्टा एक देश्त हसुमत्। इहित्रा नकन लाक सनि भिक इत्रा अभट अभिको मडी हत्तम उथन। श्यमध्य इत्र কত শুভ দরশন ।। দক্ষিণে গো মৃগ ভিজ অতি শুভকারী। वामकार्त पूर्वकुछ करण कृत बाही।। नना तथ मरहा अमुशी হেঁবেন সত্ত্র। খঞ্জন বিহার করে কমল উপর।। কভ মত শুভপ্রে দেখে কত জার। একে২ নাম কত লইব তাছার।। শুভ দুষ্টে অতিশয় হর্ষিত মন। মনেৎ স্মরে রাধে 🕮 হরি চর্ব।। टেनমতে স্থীসহ যান ধীরে ধীরে। কভক্ষণে উত্তরিল যমুনার তীরে । পুর্বাবধি যতলোক আছিল তথায়। হেরিয়া, রাধার ৰূপ দবে মোহ যায়।। এক দৃষ্টে দকলেতে নিরীক্ষণ করি। অস্থান করে সভী হবে এ মুনদরী। এই জন ২ই ত পারিবে সেতুপার। কেহ বলে যে হর দেখিব এইবার॥ এইরপে পরস্পর করে কান।কানি। তেথা স্থী সহ কথা कन कर्मानने। वृष्ण द्व हार्हिया शाहि बद्धन मञ्जू । एनर প্রিয় সখি আমার উত্তর।। পরীক্ষ' করিব আমি কি জানি क रिध । यनि भवीकात । ठिकि मधिव निम्न्य ॥ भृङ्गकात्न দেখানা হলৈ কৃষ্ণ সনে। অভশব স্থী আমি ভালিয়াছি সনে নান করি পুজিব সে ইরুক চরণ। ছবে অমি পরীকার क्रितिय श्रम ।। इन्नः। वटल अत्भात्रं त्यं ভाव क्रकाद्रमः। क्रूमि कुक कक ताथा कराउ कात्र । धार कुक तारे वाथा है एथ नाहि कान। केवर छेडिक एटर एक्ट्रेस विलीन।। शबीकात्र Cetaica Co कि हेटल आदा। क्यांत मध्यांत सार्व हरू भीन नाहुत ।। अञ्चल । ज्ञान नामि सम्माशः सान क्रि विभिन्न हरितत्रभूकाश मानत्मद्र यथा विभिक्तिश शूकना, ক্রপ সাত্র করে পরে করেন শুরুন। এমতী করেন স্তৃতি এ। कुष्ण हत्रत्य । बिह्नी श्रीमान वटन सून मस्वादन ।।

# था मिन्डी मिक्टक र छिन करतन।

भीर्य जिल्ली। कार्ट्यात किल्ती क्य, क्था क्रक क्ला भान खेत कर्या, ग्लंघटि जूनि सोतामन ॥ छद्य (कन दश्मस्राव ভাবিষা লা পাই ভাব, তব ভাব ভাবনা ভাৰীত। ভূমি হে रैक्टनाबल, किमानन्म किर्यबल, किमाण्य किमाण निम्छ। পর ম প্রবিতা বিভু, প্রভিত্তর পরে প্রভু, পরমাতা প্রভু নিরা-রার ালোলা তেতু অবতনী, প্রকৃতি আশ্রয় করি, হইয়াছ আপৰি সাকার । নিভ্যানন তুমি শ্যাম, নিভা দেহ নিভা নাম, নিত্য তব ধাম রুদ্ধাবন। নিত্যরাধা করি মেটেরং নি-छाबा श्रिम एछारत, निना छारत करतह वस्त्रम ॥ निनावाका নরহরি, বলেছ নিশ্চয় করি, রাধা ছাড়া না হও কখন। নিতা द्रिय इंग्लोरन, नारि हाक अक कन, उदर किन १हेटल अनन। द्रशं मात्र विष्कृष वाटन, विषक्ष इटल्ट्स खाटन, विहिष्ठ वृत्रिटल किছू नाति। विश्वामिश देवव वांगी, विषय शत्रीका मानि, का नियाहि लहेबाद वर्षत ॥ विद्यु मदन कति छए, कि घिएछ কিবা হয়, কলেবর বাঁপে ভাবনার। কুটারা পরম দোষী, काना कलिकत्वत काँकी, मना ध्यत्र आभात्र शनाय। तम त्यात्र क्लक नम, करमा करमा (यन तम, काला शतिवास निष्) लाटकः कालात हत्रत्व धन तरह रान श्राष्टिकन, कान का तरह धना ভাবে ৷ শুন ওচে কালাচাঁদ, শিরে ধরি ভর বাদ্য তাহে किছू वह नाहि मदन । शहीकांत्र टिक यमि, ल दक करत अभवामी, अभवाधि इव बीहतरगा धेरे (इकू निर्वमन, छव शाम महितासन, यान जीन्यान महित्र बदन । उर क्रिश कोनेनान कांता कटन खरस विनि, पना प्रकृषका करते। जांका कर कार्विकादन, गाई वामि त्यकु शादन, अहवदन करिया अनाम। পারকার উভরিলা, যম্নার জল লৈয়া, ভোমাকে চেত্র করি भागम में आखि आखा कर रहि। विलय हरेटल मित्रि, दिस्कृत-एएट क्षेत्र वाहितात्र। **अहेक्ट्रा ताथान्छि, क्रंट्य**े **क**टवर्न खिंछ, क्रम्प्रिय छन्त्र स्थात्र ॥ क्रिक्स क्ष्मान सत्र, त्रांशक्रम

जिल्ला नत्, अक उन्न अक त्म जीवन । कीना (इन्नू अवडात, नीना करत अनिवात, जाव ग्रुत्थ यूनन हत्ने।।

অথ এমতীর শীক্ষের ছায়াৰপ দর্শন। লমু-ত্রিপদি। এমতির স্থৃতি, জানিয়া প্রাপতি, উঠিরা গাণ ছলে। অলক্তিতে রয় । কেই না বেখায়, ছায়া লাগে कामि करने ।। यथात्र किल्माविश्यानाममे कति, खर्याज्यनम यम । তাহার উপার, রহিলা জীহরি, ছায়া হৈল দর্শন।। দেখিয়া দে ছারা। নন্দপ্ত জারা, প্রেমভাবে সমাকুল। ব্যা-দের রচন, ছালার বর্ণন, কালা ছালা সমতুল। কিবা মনো-इत. भागमल सुम्बद्ध, नवीन भीतन निका। नित्त नितार भन, চরণ যুগল। নীরেতে অধিক শোভা ।। কটি বেড়া ধড়া, শিরে শোভে চুড়া, মাথায় সমুর পাখা। কিবা দে উজ্জলা, কিবা বানে হেলা, রাধা নাম তাহে লেখা ॥ জীমুধ মণ্ডল, চন্দ্র নির मल, ग्रंथारत सूर्याकरते। तायात न्यान, हरकात भूमान; অনিবার গান করে।। ভালে শোভে ভাল্ ভিল্ক উচ্ছন্ গভমতি কাণে দোলে। কিবা সে কিরণ, ভড়িত যেমন, থেলিছে মেঘের কোলে।। গলে পুষ্পহার,কি শোভা ভাহার। কৌস্তভ সহ বিরাজে। ব্লয় কেউর, রভন মুপুর, কর পদে कान नाटक ।। किता (न वहन, ब्रमनी हमन, करहर प्यार्म वाँची। य क्षण रहिवा, नकल छा किशो, खेलक्रमी देवल क्षेत्री ভাবের ভঙ্গিতে, नश्चन देखिटट, द्वादादत वर्ग दिश ह दम । छत्रक खब्राल, भवन हिल्लाटन, एक्टन प्लाटन किया छोटन । दक्षिया किटमाती, ভारबट्ड भागति यति धति मदन करते। धतिबारत होत, एखरतरक थात्र, कुउन्न नर्शत करते। धारैकरण खोरन, कटन करिष्क व्यादन, कटन कट्य स्टूब शक्ति। कड छाटन देशेटन यमुना मुनित्न, वाका महत्राधां अधि। एटवं कल्कद्व, वाधार्शिदव कोटन, ভाटनन व क्या श्रवित । होशा बदल रहिंग काति प्रशी कति, आमादक दन्या दर्ग निर्मा। क्रांवि क्यानिनी, रदर्ग द्या छ शाबी क्षेत्राम कराम छत्व। इति । समिश्च जारिकोटत क्यु, भटनावाका निक्ति हर्द । निक्ति नृतिया, का खारम प्रतिया, পুনঃ করি প্রবিপান। চলিলা ছবিতে পরীকা করিতে রন্দার

ধরিরা হাত। বিজ বর ভালে, মনের উলাদে প্রমণীর পদ রক্ষো বিশয় করে। মাত্র চন্দ্রাননা, রুফ্লোকে প্রজমলে।। অথ প্রমণীর সেতু পার হওন।

श्रदेश मधी करत थित लगांत जिल्ला (महेन्सारमा हित्रो স্থাশ্রম্য নেতু চমৎকার মানো। কেশনেতু বিদ্যানে কেশ্র र्जाविमी। क्वरपाष कर्ति किছू करूम का इमी ॥ भूमन अरह দেভু ভুমি ধর্মায়। তব পরিকাতে পাপ পুণা,প্রকাশয়।। ভোষার মহিমা আমি কিকহিতে পারি।নহজে অবলা জাতি ভাইে গোপনারী। এই নিবেদন করি ভোমার বিদিত। যদি মোর পাপথাকে দিবে সমুচিত।। আর জদি পতি পদে থাকে রভি মতি। কোন পাপ নাহি থাকে যদি হই সভী।। তবে ভূমি কেশবেভ বজ্ঞ সম হও। আপন মহাত্ম তব অংপনি কেখাও। এতবলি কমলিনি সেতু প্রথমিয়া। স্বর্ণের হেম वाति करण एक लहेशा।। भरकत्य मिन्मिक व्यक्ति थिएव थीरत গতি। দেজুর উপরে পদ ভূলে দিলা নতী।। প্রথমেতে নাম পদ যেমন জুলিল। এক দুষ্টে লোক সব চাহিয়া রহিল।। সভী দরশনে দেভু বজ্ঞদম কায়। ক্রমেতে দক্ষিণ পদ অণরো পিলা ভায়।। কেশসেত বহিঃ। চলিল চন্দ্রাননী। চনৎকার মানি সবে করে জয়ধানি।। হেরিয়া ভাদুভ কর্মা করে दिनानार्नाक्य क्य मृत्य स्य महा छेखदर्गना जानत्य इहेया (छोत्र दोधाः क्रांशत ! (कश्मारह (कश्हारम देकश्वा वाकाम। ভবলমাদল থোলকবুতাল কাঁশী। শিক্ষা ভেরিভুরি শথাঘণ্ট। दीना वामी।। अधिक अधिक वाना एक करत्र भगन। एएक्टल व्यानम् उथा व्यवस्था दर्गमा। श्रदर्शत् इन्दू छ वामा करव तम्य গণা। এমতীর শিরে করে পুষ্পাব্রিষণ্। আকাশ হইতে পড়ে অনিবার কুর। ফুলেভে হইলপুর্ণ মনুনার কুল।। পারি काछ माला भएए द्राधिकात जला। विविध सूत्रिक कुन भएए वाहबूदन । बिछ मानले मादन देशन भोली इन। हत्रन क्रमत्त भरक क्रमन क्रमन । रम्जूश्वरत सम्मूरत दाविका द्या खिन । कम्म कानंदन रचन कमला छिठिना हक्षत हरदन्था दि চলে অনিষয়। যুদ্ধ ইইলা পার একশত বার । ভিন্নার

नात हिन देवमानत वानी । भडतात देवमात द्वांशक कृतानी करवे रमक् टैन्टक द्वांथा मोगिया चित्रक । सहता सहमा अन शू विद्या बाबिट्ड।। कटक कवि त्यह बाबि हानना सुमुद्री । हावि कितक दर्शिया क नित गरकेती । जानत्महरू देखाँदन नट्सक छत्त। (मधि धमारे भय करत नर्यक्रम ।। प्रठाखरत जन कार्य महत्व बाह्मा प्रकारनी बढि किम मिछू लात यात्र है। स्मर्ट क मरङ कि हू नाहि छाद आन। गठीच शहीका मांब छेड्य. नभीन ।। योन वन इट्रेमड एन ये नाखमाड । किवा नडा किवा মিখ্যা বুঝিব কিমতে।। উভয়ত সভা সৰ মিখ্যা কিছু নর। करणा करणा अधाक्तक अवडावस्त्र । द्यं करणा द्यमन बर्ग त्तरथ नातामन । रगारतर कानिया नारख रलरेश श्रावितन हा অতএব ঝবি বাকা কভুমিথ্য নয়। একণে শুনহ পুনঃ যে क्रश देनत्र । तथा गठी वटन मटव कटत समकाव । इन्हरिद्रम व्यथानम मही नाहि जाते। ताथा कनकियी मना विनिष्ठ सान হ'রা। সভী বলে জাসিয়া প্রথম করে ভারা।। সেই হৈছে। বুচে গেল কল স্কৰী নাম। তার কি কলম্ব থাকে হালে যার मामि ।। वाशावणी वटन देशन शाकूरन धार्मा दिन वटन শুন সবে আহ'র চেতনা 🗈

ख्य **ब**क्तिका (इटन।

कानक स्वत्रा निश्नारक स्ट्रेंस जोती निक स्टात क्षण । निक निक बेसूवर्ग निकटेंसे सहित्या क्रकान्स हुई करत हुकू करी-निप्रा । जारका वार्ट्स क्षिट्स हिमिटक होश्रिम । जीपूर्ता अनीर क्रका शरह सार्ट्ड गांत । निस् क्षांबिरक्षत्र काद्य होस् अक्बात ।।

काश बर्त्भागात रकारमञ्ज विनिहा क्षित्र । भारती रकासना

প्रश्नेत । क्रिया विमन एकि नत्यत उनत । नक नकता वी মৃত্যেহে প্রাণ পায়।। তবে যশোমতি অতি ছবিতেউটি:।। क्षांचादत कतरत्र क्षांटन कुटकट्ट हास्त्रिता। तांचा टेस्टड यरमाना नाहेन कुरुधन । वां फिन अधिक (सर ताथारत उर्धन । कीय गत स्वनील नानाविध लामि। यल्टन तीधात कटत दमन मन्त्रवानी ॥ थां थ' अवलिया निवा दमस ताथाय । ताथा जादन अ कानात शिंग कि मात्र॥ कृत्कत क्षत्राम नटर अह নরনীত। আহার করিতে আগে না হয় উচিত। রাধার জানিয়া মন ত্রীহরি তথন। পাতিলা অপুর্য মায়। তপুর্ব कथ्या एन एन हटक रहि हार्तिमटक हार्व। अनमीत काटन क्षांचा प्रशिवादित शाम । वालत्कत श्रष्टांव अधिमा नत्रहात । चार्डाक शहेश शहेक चालमान कति ॥ मारत्रत दकारमण्ड दंशीय कटमात्र मकाम । द्वापन कतिया क्रम गंकाशांक मामा।। डांडा देश मामदानी जानिया इताया। मिन करणांड ड्रॉन सहिता एनम । यात्र कटक द्रांशा त्यांटक मक्किटन किरति। यटमा सात कारन किया बुलन माधुरी।। एमछद्र मूनर रवि करितना (यम्ब । दाधा कर्त्त नवनीं कर्ति नवमन्। क्वार्यक्रत बावा विश्वा काष्ट्रिया गर्देल । कार्यमात दम्दन एक है शास्त्र पिनारिक क्षेत्र के के के म बर्ज नमहानी। का जिस महिटन रकन ताराह न्बरी ।।।अथ रेश्टेंड (ठाइंड मान्स भागाहि (कारन । अड कर्न मीनभाग हिटल दकान चटल । किছू शंच किছू एनड आबादत कामात । ट्यांगादत सरनी कानि नियदत कामाता। बारियत बहरत रहि क्रियर क्रांतिता । सूटब रेट्ट विना किहू THE STREET OF STREET STREET, S

शांकि दावानको लहेल ज्यम । कृत्यन्त अमार समा का सिद क्मारम। द्रिकेष्ट्रं कमिनो नित्यन वन्द्रमा यदमानात का दल दावा कृद्यन्त (का स्मा । स्पर्ध थाकि दमा क्दत स्वत्य भना। विधि वद्य कुछ पूर्ण यदमामा द हिन। त्रहे दश्क दावा कुछ द्रिकेष्ट्रं स्था मुन वा दिन्द वदन।।

# व्यथ देवना विनाश ।

भीर्व जिल्मी। जीशक्षि कुकूर्टन, थाकि यरमापाद कोटन, নৰ্মীত ক্রিয়াভোজন। তদন্তরে রাধান্যতীগ্রাণ্য মিরা শো-भड़ी, मिलगृहर कृतिना शंमन् ।। छत्वछ यहनामा त्रांनी, दकातन कर्ति भीनमान, रेवना काटह छेलमीछ इन । करवन प्रिनंत युरे त्म कथा काहर कछ, कत्र (यां क मजल नवन ।। अयोदनटा नम्म धाव, देवग कविटल मत्साव, मान खवा जाविया नी शान । क्रूट्फ প্রাণ দিল যেই, তারে কোন দ্রব্য (দই,ত্রিভূবনে কিবা **ट्रन मान।। ভाবিয়া চিস্তিয়া ধীর, উপায় না পায় স্থির, কিনে** ब्रंटर देवरमात्रं मन्यान । ভাগু।त जानिया धन, जारन त्रञ्ज जाज-तन, खर्भ खर्म नर्के अभान ॥ यठ हिल परत छात, जारन नव जादत जाद, अधिमित्र नीमा मिटल नाहै। तथ यान रह हार्कि, कानिया विविध कार्कि, नक नक बारन इक्षवजी जारे बिहिन वनन चार, चानिया विविधाकार, खटल खटल दाविन श्रुट्य । तम्मद्याय धम आदम, नम्मतानी आदम मदम, आमि किया निय अहे करन ।। खजदान धनतान, निट्र वह धन मान,नांदी कां कि देवा था भाव पना रचहे किल प्रविकान, कारत किया पिन श्रीम,किया कामि कवित अथन शि अकथा काहादत कर महरत क्रमध्य द्व, देवन कर बननी भाषानी । बक्र दिन नेव्हतांगी क्र कटक लटक शानि, विकामाना आकृत लड़ाती।। करव करू करन थान, मानटक केशाल गानि, त्यारक करने थीना कारमा कर कृष पूर्व हाता, हत्यत जराति नामा, चित्र गई वयनि माथन। माम तक करा पूर्व, स्थापन स्थान कृत, मार न अंगो वर कि राज्य वार्यक वर्गान वात्र कर करान

भाव श्रीहात प्रथात ।। (रमग्रंट वह्नक्, जीशांतित सन्। वरे, करितायन कटन बन्द्र का का वा छाट्य बानी देवमाबाव, कुला करित किছ थार अस्य देशत नकन क्यांत्रा । दर्शकता वानीत स्था नाजिन देवत्मान जात, मत्म मदम यात्राम कालान भना समा क नि ला भाग दा दान समित्राम भार छ दे स्टाइ समित वकारता सम्मामा माहे, उर खटनव नीमा माहे, स्मृह सादव किसिना ज मांत्र । यम अम रह जात, कट्या कत्या वात वात, दबन शाहे अनेनी (क्षांमात्रा। देवना अञ्चादव विन, इसकीटन नाम कार्मि, कत्रद्यादेण करत निट्यम्म । विमारप्रदेश कमा करा, अने अने महानस, आधि मिने देन क्छाबनेश महद्व लाइका कांडि, नाहि कानि छाँउ नाउ, कि कदिव लामोत पुलन। তে मात्र महिमा यह, धक्यूद्ध कव कठ, यनि देइठ महत्य यहन कृमि मिला कुक धन, जामादत कि पिव धन, द्रन धन आह कि सामात । कतिया य छे शकात, छाटा कि करित करित শুৰিতে নারিব তব ধার ॥ তবে যে কিঞ্চিত হয়,তব উপযুক্ত नहीं नेपार्थ जानिएंड जानि एति। जरिनह रुग्ने कारने, श्रुभी के किया मर्गन रेनर्ड इटव अनुमान कवि ।। देवशावरन बहान्तर के के व मित्र कार्मि एवं भूट देशमान । आनियाह न्य धन, वस् भूना बहुछन, बड खुवा नरह कल्लाकान ॥ उरव दर द्याम दर्ज करे। धरनव विश्वन्त मंडे, द्या माळ दिश्य भूळ कादन। आमि विश्वकृत बादन, य क्रम स्य छ दर जीदन, बीत कुड थाकि छात्र छाद्रव ॥ धन किए नाहि छ।है । यश छात्र छशा शाक, जाव छट्ड लिम छाटत छाटत । त्यकन अकाव कटत,नाहि ষাই ভার গরে,ভাববিনে নাপায় লামারে। তুমি লাভ ভাত मण्डिक विक परणाम वि, स्मर ভारवहर प्रक्रिय स्था की प देशन यत, आसि छव माहि शत, है थ विकू माहि कार त्यांच त्यक्ति वन्तवादी, जानिशह कीवनमो, त्रेश किहू कशिक क्ष्मक । बिट्रवान देवभाव ।, बारका कृषि अध्यक्ष भी । भव केंद्रिन रकार्क । कर्ष रेश्न ब्राह्मण ब्र.टक्ड में राष्ट्रिय नीन क्रक करक क्रांक विकासिक । जार बरन क्रिकेश, क्रेन्सरके enter can annica dur mitan il canach rivista.

রাধার কলম্ব শাস্ত, ভাবহেলে করিলা তথায়। প্রিছ্র্সাপ্রাণ গার, কলম্ব ভঞ্জন গায়, মল মন রাধাক্তক পায়।। ভাষ কলম্ব ভঞ্জনাত্তে প্রীকৃত্তের জীমতীর কুঞ্জে গমন।

भन्नात्। अथादमण्ड अभिजीत कलक मूहादत्र। चाद्रम व्यानम् यत्र व्यामिक इत्य । सूर्या (भव व्यक्ताइत्न व्याहेन तबनी । दिश्य इत्रविख देश्य क्षाज्य मिन ।। निकार्शिय भूत বাদী নিশি ঘোরতর। নিকুঞ্জ কাননে কুঞ্চ চলিল সম্বর।। বানর সাজালে বলি রাধা বিলোদিনী। হেনকালে উপনীত হৈল। চক্রপাণি । কুচ্ছে দেখি ক্রমালনী উঠিয়া সম্বরে। সমা-দরে বসাইল সিংহাসনোপরে ॥ নানাবিধ মিষ্ট অনু কবি আমেব্রাজন। একুকেবে বছরণ করানভোজন।। ভোজনাক্তে ভামুল যোগায় দখীগণ। মুখ শুদ্ধি করি হরি বলিলা তথন वाम ভাগে विगटनन द्रांधा वित्नामिनी। भाष्टिक इड्ना एस्त Cमर्ए तोवाभिनी।। ভाष्टा-मधि मशोनन वानिक्छ रहा। दांधा রুষ্ণে সাঞাইল নামা ফুল দিরে।। চারিদিকে সহচরি চামর ঢুলায়। ভাহাতে আনন্দ বড পাইয়া দোহায়।। ভবে হরি 🗐 मञ्रीदक कटहमबद्दम । आफि रेहरू रेहल তव कलऋ भारत বতেক রমণী করে ভ্রক্তে বস্তিাসকলের মধ্যে ধন্যাভূমি রাধা সভী।। কহ কহ প্রিয়ে মোরে স্বৰূপ বচন। একণেতে गरस्वाय स्टाइट्ड छव यन ॥ भूनित्रा कृत्यात्र वानी करवनव्यापारी ভার কি ভ.বনা নাথ ভুমি যার পতি।। ভূমিত্রজা ভূমি বিষ্ণু তুমি, মহেশুর। তব দেহে নিবদরে যত চরাচর। তোমার माञ्चाद्य सूक्ष अ किन नश्नांत्र। छव एशं विटन दक्ष ना स्त केकां द्र।। कर एक्नि दोशांकाख चन्न न वहन । कि कदिरन शोह **७८व ७ द्रोका हरून ।। कवि कटर व्ययक्ष**र यनि ७व रहा। क्यांन **७च** कर किছू रहेश मध्य ।।

काश भाषाट्यांत कथन ।

भत्रात् । किर्मातीत कथा क्ष्म कतित्रा व्यव । जुके रस्य कड्टिएम कमलरनाहम ॥ धन स्म धनवणी करत्र गांवधांन । भौत्थरणान मर्छ क्ष्य अनुक्ष आधान ॥ सक्ष्मत्र कृत

रकान करन कारन । एनकि स्टब तार टाके कवटन भारत ॥ अवका श्रीक विदेश निर्देश कर स्थाप । बाना पुना इन करा भुक्तित्व मध्य । वाण दक्क लक्क कर्य थानी पूरत मंत्र । खादर याना (माकि करते नाम बाल खात्र । विरम्पन सूर्व कुर्व ग्रम यात्र कान । त्रक्रन भवन शाक भरिक धार्थन ।। क्षेत्रकारमी महीदेवत इसा कालियान । जुक कहि त्रथ मेरान देशानिट्ड निर्माण । जम् अनिविध्य अन्ति करे (पर । नासा প্রশ্ন জনগণ অংশ করে স্নেহ।। অনিতা দংসার জান কিছু হ बहर । बिहा त्याके बाबातर करि करना। शिका मार्टी विश्व ক্রান্ত ব্যক্তারা পুত্র। কেন্ত করি নয় স্বা শোককির স্ক্রা।। अक्षेद्रमादक जीव हक्तु मंद्र्य बक्त हरत्र शिश्वशृष्ट्र कार्य गर शिक्षांत्र वर्षे ।। किटम कारम किनकान शूर्व घरव घरव । वर्षेत्रश् भारतवादेव (कया दनायात्रदेव ।। महाने मुणिटन गव अक्रकार मह कामार्थ अवस् अर्थ नाहिक मश्मार । महिरम पूनम्ह जमा क्षित्रा अर्थ । प्रविदार्य नामा द्वाप कत्राय खन्य ॥ भूनवास ्यूको भूनई इन्हें विकास । ना वृत्रिक्षा सर्वा कर्या थारक छ। छ इन भौते वश्च देशमन कोषिया शुक्रीनर्दम । यूकन वसम शदद भान-क्षिक मर्ग । रमहे बाटल क्षम मृद्य विश्वत विश्वता धार े क्षेत्र का कि का बाबिना रिन्टर धान । कुलान एटकेंग्र ना राज हा श्रीक करते । शूर्व लाक हैदोर्ड विश्वान छ।वि मरव ।। छ जात ्रीयमांग माहे वर्गान्यः निक्तत्र । विकारगाद्य स्पीकाम्बस क्यन जा है। । विश्व छाटन जोकानांच मम करत कान। सूर्य पृथ्य भोतान्त्र जुना मानामामा गीउ छक तम जान जानता स्प , कान । वंशी विधि है लिए एउन कड़ाई न मन ।। रन रुप शर्म गौधू विक महाकन। इवटम हरेदन आखा आजात हतन ।। विचटत व्याचिकि मेन ना देश वोशात । अपर नर्खार्य याटक जीनम कार्यात ।। नम् हा दबन हिश्मा दबन कर्दावक्वमा दिन्द्रवाक बेल बादब कटक का नी नेगा। अहिंदन का इत दर्मन ना इत क्रश्यक । हे व्हार्थित स्व क्रिका नेट्ट जान जिल्हा भाग शुन्त बक्रांबन नव रकान करता शुक्र महिलाइत स्वर ना जाएव अबदा ।। क्रांत बगड कर्न मान बानमात्र । १वर्गर महरू

বিরত বাং প্রকার। বেইকাশ কানবান মহালা বক্ত । বিরে র বিরত বাং প্রসারের কাল । কাজ কাছ বেংগ কান করে কাচরণ নেহাতে আমারে পার নিশ্চর তর্বনা। কর্ম কান্য কাল্যকার। তাকিয়া ধানান। আমার প্রতার্থে করে কর্ম কাহুর্তান। কাম্যকর্ম কলভোগ করিতে না চার। ক্ষিত্রের সমরে বেই মম পান পার। ক্রানীর বিষম বৈরী হর অভি-শার। না দের বিবেক ক্রান হইতে প্রকাশ।। অভ্যাব জাশা ঘ্রার করিয়া বে জন। কর্মকর্ম আমারে কর্যের সমর্পণ।। কাম্য মৃত্যু বন্ধন কাটিয়া ভনায়ালে। সেজন বিমুক্ত হর ভোগ মাধাপালে।। যোর বিবরণ এই কহিলাম ধনী। ভার কি কহিব প্রিয় বল দেখি ভান। প্রীচ্পাপ্রসার ভাবি প্রক্রফ চরণ। মুক্তালভাবলী গ্রন্থ করিলা রচন।।

ज्ञा मना महमद्वात क्षामक ।

ल्यात । मारशार्यात विवत खिन्या अभिली। क्रम कारह केहिए हमें कित्र मिन्छि। कहिटा अभिन्न माथ स्थान विव-त्रण। यमा मर्नरच्य क्य कर नातावन्।। हहेरल व्यनरमञ् किया (माय घ.छे। किया कत्लामत इत गल्डत निकर्षे।। भामता अवना नाती किছूरे ना कानि। अनुग्रह श्रेकानिता কং চক্রপাণি।। তোমার বদন বিনিশিত বাকার্যা। আর্ণে बुक्टित्व विक विकट्वेत कूथा ॥ त्राधिकात विनय बवन बुनि एति क्रम क्यागाय नेवासामा कति ॥ भून विदेश गोसंभित्त नमा भरतक। विखातियां कहि कथा श्रुता धनक।। सम् श्रुवा बिए। करत् क्रुक्कराल फाटक। निकास भागात सादि मध श्रहा बारक । जीवे भर्त हैन कीर्य स्नान करते सूरव । निया कथा क्लामा कलामा आहि पुरंथ ।। अटिशि त्नराप्त अख्नित अस् রক। বের বিশ এতিরর চরণে প্রিয়তক। পিতা মাতা জতি ভক্তি বাবে মানানান। অকাতরে জাতিগণে করে कत्रमान ।। क्रमाच्या हिट्ड मन निवस्त्र ब्रेड । नक्टमहे मध्य मयकाय कावित्रते । शहरिश्मा शहनिका ना करते कथना व मुक्त का किएन गएका नकन्।। गरशक बारमस्य बारमस्य थन अक्षा अर्थन अभिक्र का अगटका तक । हैशा असी

अक के किस्ति करें । घटनाट्याज कांत्र अने जाया विगमती ।। आहरत सर्वे भूत स्वित्यां स्थान । उथात नग्रिक क्षेत्र मका मात्रा । रिने द्वव खांकी का निन किन गरत। शक्षाप अकेटबट्ड ब्रूरवाय केट्र ।। नर्कशाद्ध वियातम निद्ध विथा। मान । कार्ड केरे पूर्व कार्नी शिवाद नमाना। वाक्य मारमाक छात्र के निर्क छनत् । (बनाज निमय तिथा श्रष्ठा ना करत्र।। পিতা ঘদি করে ভারে ভাতনা বিত্তর। পুকাইয়া খাকে গিয়া बरम्ब क्रिड्य विभावास्त चाहरम छात्र मारवत मनमा भूब स्तर्र (पत्र नाठा क्रिट्ड छाजन ॥ उत्रवीडिव रहत्र क्रम नाहि कटव । प्रिवटन मादिश लक्षीकारकामत ভरत ॥ अकटल विकास मिछा जाना कुमांता (मधित्रा क्षरण क्रिंस रहेल भिन्द्रिया खाक्नीत श्राविक श्राटकारम कहिला बमन प्रताचा पूज (कन मा महिला।। क्यांड श्रेता यद आहित्व निमार्ड श्रम् नाहि दिया छोटा शास्त्र पिठ थाए । छनिया यामीत व्यक्ति जाना दमनी। वाकालान ना कदिल दिल वमनि।। कट्मटल विवय अंख मक्काकान इस। दर्बकाटन छेननीच खाँका एमत ।। कारिया नात्यत काटक कालिया किटिह । क्रम् (म मा रथर्ड क्रम् क्रम् वात्र महिट्ह। । हत्क मा रमिर्देड भारे कर्त माहि अमि। जाकन कराय थान रायरमा क्रममीन। एटवर खंकानी जन जानित्तर नाम । सामी जाका হেন্দ্র কিছু পাংশু দিল ত'র ।। দ্বেখিয়া বলেন শিশু কি দিলে बाहरण । या हरम कि महादमदा शारमू रम किएक ॥ खानाी करिए बोर्ड छन वाल्यम । लिटा आकावर्डि कति मारि व्यक्तात्रम् । अकाद्रम् एव लिखा द्वाधाविक हिटल । व्यक्ता क्रिंडिंगन देशांदेव शांश्य छाद्रि निष्य ।। यात्रीत वहन आति लक्षि गांधा नाहे। ज क शांत्म किक्षिए निवाहि छाहे इन्हें। अन्नावीय अन्य श्रुव जामात्र वहसं। दश्या छाजि चटत कें निश्चन श्रेन।। भूनि निश् धननीत्क किछू ना रिल्म। सन्द्र काल निर्मा स्थम स्टासन कविन।। सरिमारन निर्मा मादन बदन टारविना। निरीए कानन मादव छिछतिन निर्म ज्ञानदर केरिया अस्ति गांवासाय । मत्नाकार्य नक्यत्न निर्म

नोत को व ो शक्त करेन निम विश्व केन्स ( वुक् व्हर् नामित्नक खाचान कन्य ।। नुसम्दर्भ मद्दर्श हिना प्रक्रिनाय । किन्न मुद्द तथा दर्शक दम्दर्भ लाकमञ्चा। हलान वर्गाक दन्नी poices नाजी । क्या काहि नाहिक poin काछि ह जा।। अथब्द्य देव कि का हैन छ्यात। त्मा कान्टन छक्क कटन कि करत कथारा। कल्मिन छक्षान अक्टब दिनगाए। विक सूछ नित्र छेलेडिक छोत्र कार्टी जरन बक्क चत्र प्राथि क्छारलेड नन्। वनिवादत आमि मिन छेखम आनम्। धर्मम विदेश गरेत कटह ममामद्र । कि कातरे व्यानमम् हर्थाल नगरंद्र ॥ चित्र तटन आमात तर्दमटल किर माहै। बदमटल खमन करियी कि वि छ। है।। भर्या हैत्व क थात्र क्रांत्र छ एक । कि विके ভোজन निया भीष्ठ कर गाँछ । छनियो विद्यत सूर्य अद्वक ভারতি। কাছে চণ্ডালগণ আকণের প্রতি।। স্বাভিতে ह्यांन स्माता कटर गर्सक्त । दक्तान खर्थान छव हरेद (जाकम ।। खाक्क कि कि कात कि थाइस हैव । अहेथारम हैर বাগ করিয়া থাকিব।। জ্ঞাতিগোত্র পরিবার নাহিক জানার अक्ट्रलट अंगिशाहि आनि दकाम हात ॥ अनिशं विशेष गर भारत मण्योछ। यत कृत साम तमा हक भूरवारिक ।। यक्षान इव एवं आंत्रवा नकरन श्रवम आन्द्रम वान कर्न <। खाल भावि किया कर्या खरानि शक्ति। यकति कब्रिट्य कृति यथः दिली मीडि ॥ डेन क्वन इंटर कार्ट केन कहा वांक मार्क्यना विलया कार्य न्याद्य कर कर्क ।। जीवता मकटन रिक ट्रामात विवाद । समाधारम प्रकृत इहरत निकार । भागमा अन्य कथा विद्यात क्या । ह्यादन व प्राप्त हिला करिल मीकाइ ।। इतिन कृति। अक नावित प्रथात। विक स्थान मृत्र एक दनके था म । स्थादन कर्त कर कर कर क्किं। शन्दर्ग सेव माज लाक्न सक्के । इस्टिंग क्लिंग कर्मा कड़िया गांचन । हान कोल कार्त वर्ष करत छैगांच्यन ।। ATACH TOR DISTRIBUTE TO THE PARTY PARTY with attending the property of a least a series will and realist actions in Africa Mile

বিবাহ মোরা দিব। প্রাক্ষানের কন্য আর কোথার পাইব।।
আমাদেব জাতিতে চঙালা একজাছে। অপসাংলে ভাহার
বৈধব্য ঘটিরাছে ॥ আদিরা ভাহারে দিব প্রাক্ষানের বিরা।
ভই জনে সুথী হবে দোহারে দেখিরা। মন্ত্রণ করিয়া ছির
প্রাক্ষানে কাহল। মুক্তালভাবলী গ্রন্থ ছিল বিং দিল।।

अथे किन भू जात हुं हु। निनी-नद विवाद। न्यू-जिल्हा। यटलेक हलाल, रूट्स शामशान, करह भून **বিজ্পুর** i বিবাহ ভোমার, দিব গারোদ্ধার, কথিতেছি ভার शुक्त ।। भूमि विश्वनंत, करिएक मञ्जूत, व्यारशिकन कर गरन। স্থা লিখিন, কম্যা আম গিয়া, তবেত বিবাহ হবে।। 4 কথা শুনিয়া, চরিষ্ হইয়া, মিলিয়া চণ্ডালগণ। আনিৰেক कन्मा, विवादन्त कन्मा, किवा बन्न सूत्रक्रेन ।। छाक सिन काणि, काछेत्राकि इति, यत्र कलोका आत्रा जिल्हा সৌরভ, কি কব গৌরব,পচাগন্ধ তারগায় 🕫 খাঁদা সে নাদিকা कर्कम शामिका, शक्क नामिका धनी। अञ्चक्त मर्गा, जन निवालमा, पिटम अञ्चकात मिन ॥ विजाल नहना, त्लहक वमना মুলা সম দস্ত পাতি । ছুটিপাদেশিরে, গোদ শোভাকরে,গলে গল কপ্ত ভাতি। বিনাইয়া বেশ, বান্ধিয়াছে কেশ, কিবা থেঁপ। পরিপাট। তুলনা তাহার, কিনে দিব জার থেমন বংরী আটি। পৃষ্ঠে কূঁচশোভা, অতি মনোলোভা, গমনে গোধিক। হারে। কুমাও আকার, কুচযুগভার, লোলে আপ-मांत्र ভारत ॥ छ्छ निमीशक कतिया वर्ग, कमार्थ वरत्र छ লুইল। ব্ৰাক্ষণ নন্দনে, আনি ততকংগে, খুডকংগ বিভা দিল। क्रीकार्रंत कामि,कर्म यथाविधि, क्रिटलक काद्या यक । भटत क्सा त्रात, दम देश वामरत, श्री कुक मिरलह कुला। को कुक स्थान का नाम वा वा वा का वा करत वात । कि वाल नाक रमें कारम भाक, भन्न बहागा करने। बहेक्टभ गरन, महा-मह्राष्ट्रित्व, ह्छान युवकीनात । वागत कानित्र, अर्जाटक GS शां) (श्रेल जाता निटकंडरन । उपस्ट श्रेल गरत तृश्यता निन, शूटर को म छछिति। कनाति वृत्तन, द्रितिशा छश्रन, अध्यातास्य भागवित् ।। द्वाका नक्ता, व्यातिक खूकन, वृतिक

तर्गत करा। हिंथानी तम कर्ण, कारण कलक्षण, शांतित प्रश्चेत महा। इहेन भिन्नन, त्मांट्र विह्न न, त्रांट्र तह कर्ण, त्रांट्र तह कर्ण, त्रांट्र तह कर्ण न करा। त्मांद्र वाप्ता, त्मांट्र त्मां क्रांच्या क्रिया करा । क्रांच्या क्रिया क्रिया में क्रिया क्रिया में क्रिया क्रिया

व्यथ नाष्ट्रोक्ट्यावटकानाथान।

পরার। 🗐 कृष्ध कर्टश्न 🥶 न রাধা विस्तामिनी। विह्रित्तक ভিজ পুত্র লয়ে চগুশিনী।। বিছুকাল আমোদেতে করিল ্বঞ্চন। অভঃপরে উপস্থিত অপুর্য় ঘটন। একদিন চণ্ডালিনী ভালি লাজ ভয়। ধরিয়া পতির গলা অভিনানে কয়।। দেখ নাথ কেমন সুন্দরী হই আমি। স্বৰ্ণ অংকার কিছু নাছি দিলে তুমি।। এ হেন সোণার অক্সেনাহি অভরণ । দেখিয়া ना प्रथ पुनि ध चात (कमन।। नवीन शौवन भाव जनमधि প্রায়। অলক্ষার বিনা কি ইহার শোভা পার।। রম্ণীর রূপ **ডा**नि रञ्ज योवन। योवन श्रानिश्चकारी वनन कृषन॥ अड़-এব সকাতরে বলি প্রাণনাথ। গংগা দিবার চেষ্টা কর অচি-अंक ॥ अथन नामिटन चात्र भाष कि इट्टेंब । रघीरन वहिशा গেলে পরে বুঝি দিবে। শোণা দানা পরিব থাকিব সুথে বাসে। ভোমারে করেছি বিয়া এই অভিলাবে ।। ভুমি যদি ना निटल शहना मटनामक । उटव किन वर्गिक र छोमाव कर्यू পত।। স্বৰ্ অলকার বিনা না রহিব ঘরে। তোমারে ছাড়িয়া च्यों में याव खानां छुटे वा ना इहेटव छव मटक विद्धां विनास । व्यमालकि नहेंगा काँवर गृह्याम ॥ एएहे माञ्च এहेकथा ६छानी करिन। विष्कृत स्वर्ध स्थन (भन श्रद्धिमन।। श्रिमनीत করপ্রথা করেতে ধরিয়া ৷ কহিতে লাগিল ভারে সান্ধনা क्रिया। जूम भाव वार्शिय तम्गी तटन। मन क्रान Colvica करतांक नमर्गा । रहाहरू ट्रामात भटक द्वाम

बाकावाकि। बहित्संड क्येन ना इत्वहाकांकि।। उत्व क्रि छाक गरि एटस कालिमानी। निकास करिस लामि छाजिय প্রাণী।বিধি মোরে লক্ষীছাড়া করিয়াছে ভাই। নহিলেকি আৰু ভূষা দিতে ইছো নাই।। যেনন ৰূপনী ভূমি যুবতী তেমন रमानात भर्गा विना नाटक कि अमन । जूमि थिए पश्चकारत প্রকাশিলে খেদ। শুনিয়া আমার মর্ম ইইতেছে ভেদ॥ শ্পথ করিয়া ধনী তব কাছে বলি। এই আমি স্বৰ্ণ আনিবার ভরে চলি।। এক মাদ চুপ করে বদে থাক ঘরে। क्षेत्रक कांनिय कामि हैशंत किएत । माना एम एमा-खदत कतिया खमन । जिकाटमर्ग करन निव सूवर्ग जूबन ।। ভোষার বাসনা পুর্ণ করিব নিক্তা। ইহাতে না ভাবি কিছু श्वादनत मःभग्न । अद्वना त्रहिल शृद्ध मावधादन (थक। প্রেমদাস বলে মোরে ।মনে মাত্র রেখ।। চলিলাম দুরদেশে তোনার কারণে। প্রতিকা ভোমার দুদ্ধ মর্ণ আনমনে।। अञ्चय विस्तानिमी विषय टिशाशिया। अधित विनश्च कर् প্রসন্না হইরে। এতবলি রমণীর রাগ শান্ত করি। যাত্রা করে বিপ্রস্তুত শারিষা আহিরি॥ গৃহ তৈতে বাহির হটয়া চলে ষায়। ক্রমেতে চপ্তাল পাড়া প্রচাতে এড়ায় তালাগুর ছাড়া ইয়া ভারনো পশিল। বিশ্রাম কারণে রুক্তলায় বৃষিল।। চিন্তায় আকুল চিন্ত ভাবে কোথা যাব। কাহার নিকটে त्तरल सर्व रुप्त गांव।। (क अमन चार्ट त्यांत कतिरव सुमात काहात खेलदा चामि पिव अहे छात्र ।। स्नामक इटेंदा किटन মনের কামনা। দাত পাচ কত মত করিছে ভারমা।। উঠিয়া চলিল পুনঃ বন অভিন্থে। সন্তাপে ভাপিত ভকু গাঢ় भरताहृश्य । बिर्जन कामरम शिक्षा कृतिन श्राटमा वाश्व छझ दकर छत्र मी मारम विद्यमं ॥ हर्ष त्यर्छ शृद्ध काहे। त्थानी कुरके शांक। त्थानके बाहिशा विक वक्कारक जाता। প্রভাকর করে করে অঞ্চ জালাতন। অশ্বরে আন্তিক বিজ্ঞা मट्ट मना यम ।। दकाशा लाटन दमाना नाक टटन कि छा काटन कारिया केशांत्र किंदू ठेरिदिएक माद्य । कान्द्र व्याप्य क्या ना जिला विका । सन्यम्भा माद्र विभाव विका । अकान्द्रन

शमन कि किन किरोकत । नमा दुर्भ मिथिन अक छेळ जल्देत তমোময় নিৰ্দে ছোর হইল যখন। ধীরে ধীরে বুকোপরে छेठिन छथन।। विभिवात छेलेयुक भाषा धक लाखा विनितन विक्रभूज राव किन करत्र ।। जेहे इरक थारक वक नांछी कक লাম। বেদ ভদ্র পুরাণে পণ্ডিত গুণধাম । পরম ধার্শ্মিক বক ধীর শাস্ত জানী। ব্রজার সভার কংহ পুরাণ ক'হিনী। নিত্য नित्रो बजालाटक करह शांन कथा। प्रव वृन्ह नरव खचा, শুনেন সর্বাধা।। ব্রস্কৃতাত্যজিবক বাসায় আইল। গাছেতে মনুষ্য আছে দেখিতে পাইল।। ফিজাদিল কেবা ভূমি কছ মহাশর। কি জনো ভারন্যে এলে দেহ পরিচর।। মতুষার গম্য নহে তুর্গম এ বন। মহিষ গণ্ডার ব্যান্ত চরে অগণন।। क्रिन दिन वर्ग मान क्रियां कि श्रामा। य ए<sup>।</sup> एन वरम् ভাহা ভাষার দে বাদা।। ছিক কর প্রাণে ভর নাহিক আমার আশ্রমে অতিথি আজি হয়েছি ভোমার।। কুধার ভূকায় कात्र कामन समर्। विसम लाकूल बाका नः मदत वनरन ॥ ভক্ষ দ্রুৱা দিয়া ভাগে কর ক্রাক্ষ। শেষে কর আমার ৰুষ্ঠান্ত শুমুদয়।। শুনিয়া ছিজের কথা ভাবিতেছে পাথি। অভিথির দেবা ধর্ম কিব্রপেতে রাখি।।একে বন ভাবে ঘোর নিশি অন্ধ্রর। খাদ্য দ্রব্য একানে মিশিবে কি প্রকার। আল্লমে অভিথি যদি থাকে উপৰাদী। হইবে ছফ্ক ধৰ্মনাশ भाभ तानि ।। नत्र क कविटक वांग माध्य कांमि इरव । मक्न জম্মের পুণা যুচে হাবে ভবে।। এত ভাবি সাধু বক নারি ছুই পাখা ৷উত্তে তবে উৰ্দ্ধ উঠে হইয়া আদেখা৷ কণমাত্ৰে ছাগি উভবিদ नमीकूटन। हक्षु भूटि धविटनक बृहर मकूटन। मर्गा লয়ে হর্ষ হরে শাশ্রমে চালল। দিজ তনরের তরে ভাকিরা বলিল।। কার্চে মর্ঘিয়ে ভায়িযোগ কর। পোশ্বইয়া ধাও মংগ্য আনিয়াছি ধর।। রুক পাশে কুত্র এক ভোগা আছে कोटि। बन्नामा स्थोत कतिया निया भीटि ॥ अनि दिख रूक हरे छ ब्रिट्ड मोजिनाक हि कुक् दिया करम जनन का जिल नहेंता मकून भीन वक्ष करते छात्र । ज्ञालनग्र मरनाय्रय लित

ट्रिंच थीत्र।। जाशान्त्व श्राकामांह नाटन एव सुनाहेनत इहेन भूर्व पूर्व क्यू था।। उत्तरक भावित भारत सूखित इहेन एनकाल वक विधासण्ड किकानिन्।। **ध्येनए**ड एव । एक र्झिष्ट मीउन। उत्त आंत्र विनास्ट किया आहि करा।। বিশেষ করিয়া বল আমারে সবাদে। কে ভুমি ভারণ্যে এলে কোনঅভিলাবে।। আভাতাত্ত থোমার যতেক বিবরণ।শুনিব नक्त चामि अहे निरंदनन विषयत्न बक्क क्रम क्रम चामात्र অতি অভালন আমি পাপী হুরচের।। বিদা শিকা েতু পিতা করিতেন রাগ। একারণে ঘর যাড়ি করিলাম ভাগ বিবাঁহ করিয়া শেষেচগুংলের বংলা। স্বর্ণ আভরণ বিনা ঘটি त्राट्ड काना।। जारे कानियाहि वटन कहिलाब माटि। अखुद्र वियान অভি দেখে বুক काछ। बान्तरगद कथात वरकत रेहन হাস। কহিতে শাগিল দয়া করিয়া প্রকাশ।। শুন দ্বিজ বলি পামি এক উপদেশ। যাহাতে প্রচুর সোনা পাইবে বিশেষ আছেরে আমার স্থা যক অধিপতি। যদি ভূমি যেতে পার ভাহার বস্তি ।।বিনয়ে কহিবে ভারে মোর নম্কার । পাইবে স্থবর্ণ রাশি অতি চমৎকার।। দ্বিদ বলে কোথা দেই যক্ষরাজ খাকে। কোন দিকে গেলে েখা পাইৰ ভাষাকে।। আহুৰ্গা প্রসাদ ইষ্ট চরণ ভাবিলা। মুক্তালতাবলী কহে ভাষার রচিয়া অথ ভিন্ন পুত্রের যক্ষালয়ে গ্রামন।

দীর্ঘ-ত্রিপদী। কহিছেন জলচর, দুন্থ ভিজ্বর, যে স্থ নে থাকরে মক্ষের। সে দিক উত্তর সটে, হিমালয় সলিকটে, গঙ্গাতটে স্থান মনোহর। কাঞ্চন নির্দ্যিত পুর, দর্পণের দর্প চুর, হীরক কপাট ভায় শোভোচারিভিতে কলবান, মুদ্দীতল সমারণ, মধুত্রত ধায় মধুলোভো গারোবর হবিমল, পুরিত নির্দান জল, টল টল করে মন্দ বায়। পুষ্প পুঞ্জ প্রক্ষুন্তিত, গঙ্গো করে আমোদিত, কোকিল পঞ্চম শ্বরে গায়। ছয় ঝতু প্রস্পার, বাজয়াছে নিরস্তর, সহিত নিজের দলবল ময়ুর ময়ুরী যত, নিতা নৃত্য করে কত, বিস্তারিয়া কি ক্রব সকল। যক্রাজ নিকেতনে, প্রতি দিন নিমন্ত্রণ, হয় লক্ষ্ ভালাণ ভোজন। স্থাবণে র থালা বাটি, ঝারি ঘটি পরিপাটী,

পেয় নিত্য করিতে সেবন।। ত্রন্তানেবা ইঙা মাত্র, লইয়া উচ্ছিট পাত্রগৃহর ফেলে যেন মূণময়। ঘারে ভূমি সেই স্থানে यक्त तां क विमायांक, त्यांत्र मात्य किन्छ श्रीत्रह ।। ज! इट्टल ধনপতি, ভুষ্ট হয়ে ভোমা প্রতি, সুবর্ন দইতে আজ্ঞা দিবে 🕻 यं उठ दे हैं। जारह, जात वास्ति नहें अरह, उने खरत दिनात হইবে।। বক মুখে দ্বিশেষ, জ্ঞাত হয়ে উপদেশ, ব্রাহ্মণ কুমার মনে ভাবে। কতক্লে সুখ তারা, যামিনী করিয়া गांव , ज्ञान जेमहा हत्न शांद्र । वहिन जावना ज्ञात, निर्मा নাই রক্ষোপরে, সারা নিশি জানিরা কাটায়। প্রভাত হইলে প্রি, রুক্ত ইউতে বিজ্ঞবর, নামিয়া উত্তর মূথে যায়।। নিশ্বাস ত্যজিয়া দড়, আখাল পাইয়া বছ়, বিশ্বাস কৰিয়া শীব্র চলে পৰ্কত কানন কত, এড়াইল শত শত, বিশ্ৰাম না করে কোন ऋटल। मना वायूद्वद्व शांब, मन्यूट्थ विशिष्ट शान्न, यक्त महा शांकांत ভवन। अधि। निका थटते थटत, (१८त्र मन पूष कटत्र, होि दिश (दष्टि ह छे प्रवन । नक्तक निवालय, मन्दित मानिका ময়, কনক ক্ৰুস ভাৱ কোলে। খেত রক্তবর্ণ নান', পভাকা উডিড माना, भवन विरक्षाल ह्टल माटन । श्रमञ्ज ममञ्ज বাট, কন্ত শত হাট ঘ:ট, গীত নাট হয় স্থানে স্থানে মাওঞ্ ভুরঙ্গ যত, রাজপথে ভামে কত, রথ রথী যেখানে সেখানে क्रवान चौचनां काव, यटक वाद्य प्रवृक्षाव, व्यवकां विक्र বদন। দীর্ঘ ভাল ভরুবর, লম্বিত যুগল কর, ভয়ক্ষর **ঘোর** দর্শন। কেশ জটা চক্ষু কটা, মঘ্সম অঞ্ছটা, ঘোর ঘটা স্থ লাকার দেছ। কেই নাচে কেই গায়, কেই উভরতে ধায়, बुवन बूलात थ वी त्कर । (कर्वो स्टेशा क्कू क, करत एक महा বুদ্ধ, কেছদক্ষে নাড়িছে পাছড়। দেখে বিজয়ত ভারে, দাঁতে দাত এক হয়ে, বাজ পথে ধাইল আছাড়।। দারি ভাবে ধরি ভোলে, ইন্সিচে বিজ্ঞানে ছলে, কেবা ভূমি কোথ कात भाष। त्रांच त्रांच किया कांचि, कात श्रेव कांत्र नांचि भेड़ा दल बरह निवं भाषा।। यस इत खंडभात, विक कर महा न्त्रं, ममून्य शक्तित करें। विक्षितः दम क्या ममन्त्रामम भाव नम, बाब कर नाई बामा वह अभिया बातक प्रमा बदर्

পहिता क्रम, जरामरय अरमोह अश्वारन । विश्वा बहै घरेम्रोरह या १ राक ताका कारह, ममाठात कव छाउ श्राटन ॥ धनि पाति मुक्रणारम, कर्कें विष्टम खारम, वटल किरत यां किराया यां व नक्षी हाजा मरता प्रश्रंथ, जूमि रन क्लान मृत्य, गक्र बाज नव मन পাবে। दश्या जातिश्राष्ट्र क्लाद्य, क्लिन बनिया क्लाद्य বুঝি তোর প্রাণে নাছি । খুনিলে যক্ষের রাজা, নিবেন উচিত সাজা, তবে ভোৱে কে দিবে আশ্রয়।। অভএব শ্বন্থ বলিতেছি ছিত্তুন, সুশীন্ত্র পলাও লয়ে প্রাণ। নতুবা শঙ্কট ছোর, উপায় না দেখি তোর, কি ৰূপে পাইবে পরিত্রাণ।। ভিজৰলে শুন ভারি, ভর্ক না করিতে পারি, কেন ভুমি বশ বার বার। এত আমি নহি মুঢ় আছে কিছু কর্ম গঢ় কহি ভবে মূল সমাচার ানাড়ীজঙ্গ নাম ধরি, আছে বক ধর্মচারি - সেই মোরে পাঠ।ইয়া দিল। সথা তার যক্ষ ভূপ, জানাইতে क्योंन क्रम, भवामण आमाद्य कहिला। खाति कट्ह वटि সভ্যুগ জানিলাম ভবে ভথ্য, সেই বক বটে নূপ স্থা। কিঞ্ছিৎ দাড়াও তুমি, জিজ্ঞানিয়া আদি আমি, আজা হৈলে পাবে वाक (पर्या ।। रुपछत्व सावि (४८३, मश्वाप कहिल (४८३, यक পতি বনিয়া যে স্থানে। খুন নৃপ যক্ষেশ্বর, আনিবাছে ছিজ বর, ইচ্ছা ভার অংগে বিদ্যমানে ॥ নাম বক নাড়া জঙ্গ, তব প্রিয় অন্তর্জ, দেই ভারে করিল প্রেরণ। অন্ভর কথা নয়, যদি অসুমতি হয়, ভবে ভাবে আদি এইকণ।। ভারীর বচন শুনি, যক্ষরাজ মনে প্রাণি, অসু চর প্রতি তবে কর। কোথা আছে ছিল নর, আন গিয়া শীঘ্রতর, সুধাইব সংগর বিষয়। ভুপতির আজা পার, বারী বায়ুবেলে ধান, উপনীত হইল क्रशादतः करः हल विश्व वत्, जारामिल सरक्षत्, गर्म नात्र যাইতে ভোমারে ॥ধন)পু-্য গণ্য রেখা,জদুক্টের আছে শথা कूटवर महिट्ड दन्या इटर । जाना कि हैशर शर, शाद मटन म छ वत, मन इश्य पुर्व श्रांद जत्वाहात्रीत कथात विकाशम करतन भौख, महम भाग कामन्त्र कामन्त्र कामात्र । अपूर्वी धारात बहन জীকু:ফার পদতলে, শিশুর পুরাও বাঞ্ছ কার।।

অথ ভিন পুত্রের ধকর।জার সহিত্যাকাৎ।

প্রার। অনন্তর তিজবর অনুচর সঙ্গে। কটক কটক मिशं हर्न महनावरण ॥ नवरन नगत भाषा निवीकन करि । বলে একি অপৰূপ আহা মরি মরি।।জনমিয়া হেন পুরী দেখি নাই চক্ষে। স্বপ্ন মন জ্ঞান হয় হেরিয়া প্রত্যক্ষে। প্রসাদ উপর নৰ নাগরী সুন্দ্রী। চমকিত চঞ্চল চিত্ত ছলে লয় হরি।। दोक भर्थ यूर्थ पूर्थ यक नांशीनात । जनांनात्य जन कांनात्य করিছে গমনে। দেথিয়া ভালাণ পুত্র মোহিত হইল। চর সহ পুরীমারে গমন করিল।। বদিয়া আছেন যক মহারাজ যথা। জিল নিয়া উপনীত হইলেন তথা।। প্রণাম করিয়া ভূপ করিল জিজাসা। আমার নিকটে এলে কি মনে প্রাশা।। কহ শুনি বক বন্ধু আছেন কেমন। ভোমারে পাঠারে তার কি লাভ এমন ৷৷ নিত্য তিনি প্রতাতে আদেন্ মোর পুরে। তবে কেন তোমাকে পাঠান এত ছুরে।। উত্তর करत्न विक कथात (कोणत्न। एव गर्था नाष्ट्रीकक् चार्ट्स कुणत्म । जिनि स्मारत भाष्ठाहै । वित्नन अहेथीरन । किन्ता চাহিলে গোণা পাব তব স্থানে॥এই হেতু আশা সেতু বাঞ্জিয়া যতনে। বহু কট্টে আসিয়াছি ভোমার সদনে।। ধর্মে মতি ধনপতি ভূমি মহাশয়। ভোমার করুণা হইলে ভারে কারে ভয়।।সম্পৃতি আমার থেণি নাহিকর কোধা বিশেষত ভোষার বলুর অনুরোধ।। ধকরাজা বলে আজি থাক ভিজ বর। নিয়মিত ত্রাকাণ ভোজন হলে পর ।। যত স্বর্ণ লইতে পার করিব প্রদান। প্রভাতে উঠির। কল্য করিছ পরান।। द्वान प्रका शृक्षा तिश्रो कंद्रह अर्थन । अञ्चः दन दक्ष्मि र् ज्या নের নিমন্ত্রণ। দুভেরে কহিল ভূপ দেহ বাদাঘর। বক্রভোজ্য কালে পুনঃ ভানিবে সম্বর।। যে আজা করিয়া দৃত বিদায় **इ**हेन। विक सूर्र्फ निवा अक वांगा वाषी निल्।। नियुक्त इहेन् আগি ভূতা ছুইজন। শীতল শলিল দিয়া ধোরায় চরণ।। নারার তৈল জানি অঙ্গেতে মাখার। গঙ্গামান করিবাংস एटब नदश यात्र ।। नहीत मार्कना श्रदत सान कताईहा। श्रीती न्त्रपुरम्य र्याष्ट्र मिन भवादेवा ॥ छम्ख्या न्या राम योबात्

गर्कात । सिमेश्विक चित्रभग र्यामा यथाम् । एक कर्म दिन ल जगित्रे अरु गुण् । थाण स्वर भौनिया (योशाय अर सका। চবা চুষা লেছা পেয় নানা উপহার। মিন্টার সন্দেশ ভক বিবিধ প্রকার।। কাঞ্চান গঠিত পত্র সকলের পাতে। यण्तरम खेलारम कृष्टित अक गारल ॥ त्वांकनारख मकरन করিয়া আচনন। কর্পুর ভাষুলে করে মুখের শোধন।। मिकिंश निटलन भटत यक नुभगति। मानिका सूर्वन मूका मनि शैता চুনি।। कानिकीन कुलाल कदिता विकत्तन। প्रतम्भत নিজালয় করিল লম্ন।। কেবল রহিল স্থা লোভী দ্বিপস্থত ভাবিং ভাবনার ভাবে ভয়বুত।। তদম্ভরে ভ্তাগণ আনিয়া ভখায়। উচ্চিট মুৰ্ণ পাত্ৰ ফেলিবারে যার।।দেখিয়া ত্রাক্ষণ कद्द उर्दि गर्स लाक। अहे ताना त्वर त्यादा एक महाद्रोक সুবৰ প্রধান ধাকু উচ্ছিট না হয়। বেদ শাস্ত্র পুরাণ ख्यार एक क्षा छनिया है जिल्ह हानि वर्ण यरकश्रत ।। লইতে পার যত সোণা শহ ছিজবর।। ঘেই সাত্র ধর্মরাজ জাবুজা করিল। মহানদে ভিজার নাচিতে লাগিল।। সেই নিশি কটে প্রফে তথার ধারিয়া। প্রভাতে সুবর্ণ বোর। লইয়া বান্ধিয়া। শুরু হর ভার লয়ে করিল গমন। পথেতে इहेन द्रोति (चाद्र प्रमान ।। श्राक्षां क्षा यान वर्ग व्यक्तिए ना পায়। উপনীত নাড়ী জঙ্গ বকের বাসায়। রুক্ষ নীচে ভার ব্যুখি উঠিয়' শাখায়। একলোক হৈতে বক আইল তথার। ভিন্ন বলে কত সুখে আছব চ ভাই। বছদিন উভারেতে দেখা শুনা নাই। ভোমার সমান মোর বন্ধু নাহি কেই। বেদিশাম ভব সন্নিকটে এই দেহ।। বক কণ অভিশয় পাই য়াছ কটা স্বৰ্ণাভ হেডু ভুক হয়েছি যথেটা। এই ৰূপে মিন্টালাপ উভয়ে করিয়া। পূর্ব প্রায় বক মৎস্য জানিল थित्रा।। अर्थ आणि श्रीकृषिया थाहेन खाचन। इत्कत শ্ৰামায় দেঁতে ব্যিস তথন।। বক বলে অৰ্ব্যাক্তি নিদ্ৰা বাহ ভূমি। লাগরণ করি ধন রক্ষা করি আমি।। পরে আমি ঘুষা हैद अ श्रान काजिरव। तकनी श्रान देशल श्रहरू यहित এক বলি জলচর জাগি। রহিং।ক্রমে রাজি বিথংর অফীত

इहेन ।। भरत वक युपाहिन खानां। जातिन । बरन परन विरंद इया केंद्रिटड लाजिन।। अखाउ स्ट्रेटन निमि याव निक्यान बन मर्ग थामा खवा शहिव कमरन ॥ वरकरत मातिया नह পৰে পোড়াইব। কুধানশে এই মাংসম্বেখতে থাইব।। এড ভাষি উপকারি বকেরিনাশিল। সুবণ ভারের অগ্রে বাঞ্জিয়া लहेन। लाशहेन यामिनी छन्य निवाकत् । खातनत्य श्रञ्जान कतिन विवयत !। अशंदनदा यक्त पांच कार्य निवयत्न । यक বন্ধু কেন না আইল এ চক্ষণে ।। আদিবার ডাগার সময় বরে যাইল। কি কারণ দ্বা মোর এখননা আইল।।বিপদঘটেছে বুকি করি অনুমান। তত্ত্বকরিবারে দূতগণেরেপাঠান।।উর্চ্চ चारम शैन वारम यक हव थात्र। कट श्रूटत विकरत राजि বারে পার।। দেখে তার ভারে বান্ধা আছে মরা বক। বলে ওরে চুফ্ট ভিব্দ ভূই বড় ঠক।। যে জন করিল ভোর বড় উপ কার। বিনাশিলি ভারে ভুই পাপী ছরাচার।। বিশ্বানঘাতক ভোরে ঘৃণা হয় ছুঁভে। ইহা বলি বান্দে ভারে ধক্ষরা জ দুতে মৃত কম্প করিয়া মারিল বছতর। লইয়া চলিল যক রাজার লোচর।। মৃত বক দেখিরা যকের অধিকারী। শোকে সকা-ভর অতি চক্ষে বহে বারি।। জিঞানিল সমাচার কহ অমু-চর। ছত বলে বকেরে মারিল এই নর । শুনিরা ভূপতি অতি কভের ২ইল। চণ্ডাশ দিজের প্রতি ভৎসিয়া কহিল।। কারণে যক্ষেরে মারিল ছুষ্টমাত। অপরাধি নহে ভোর কি করিল কভিশা তোরে বোণা দিতে মোরে করিল অস্তরোধ। প্রাণ বিনাশিয়া ভুই দিলি ভার শোধ।। ভোমারে বধিলে পাপ না হয় কিঞ্ছি। ভূগিবে নরক পাপ ঘেমন সঞ্চিত।। বলিতে বলিতে ক্লোধে যক অধি-পতি। ব্যতি ভিজের প্র'ণ দিল অনুমতি।। দুতরণ শত পুর হইয়া ঘেরিল। বিপ্রস্তে একবারে প্রাণেতে মারিল।। रूपा अक्ताकः बक्का चामि प्रत्यम् । विमेश्च (प्रविश्वा महा वक जानमान ।। सामित्यादेश क्वानिया मकन विवद्रण । हान्दिन यक अधिপण्डित खरने।। दिविद्यान मता दक तुरम्बर्ट পिष्या। कमअनु सन छाट्ट दिन इस्ट्रिया। आन

मान लिए इ देक छेडिया विनिन्। स्मर्वेशन अदेवर अलीमकदिल তে মরা সকলে প্রাণ বাগালে আমার। যে মোরে বধিব क्रिक्श (मण्डे क्रुड़ा हर्ग्ड़ ।। यक्ष्यं क क्ट्र खाद्य करिशः निधन । किनिया नियादह पूरत कक्षवत्रन ।। यक बटन कांत्र मथा कि कर्मा कर्त्वता वाचात लागिया दक्त खाना विधिता। व्यापीरेका रहेन कामात गरदगाता। क्षेकित्क रहेन त्मादत এই পাপ ভোগে।। অভএব ভার প্রায়শ্চিতের কারণ। নাহিক সংশয় আমি তাজিব জীবন। এত বলি প্রতিজ্ঞা क्रिन् बक्दीत। श्रीनता मकल (एव इहेल श्रीख्त ।। क्रिलेन চতুর্ম খন যক্ষপতি। হোথা তার লবদেহ আন শীঘ্রপতি ष्ट्रकर्त भृडरपर ज्यनि जानिन। मिक्ष स्नीमः ह बना विष्य ব। চাইল।। প্রাণদানে চেতন পাইয়া ততক । एवं तन कर्त्रिन मर्भम ।। **अस्ट**तिष्ठ भाश खाँद गाँहेन अस्टर्ड । বেধিষ্টানু প্রবেশিল গুনয় অন্তরে। বিশুরকবিল স্তব দেবতা সকলে। আমার সমান পাণী নাহি ভূবওলে ॥ বিপ্র কুলে আমার যে হইয়াছে জন্ম। পরিত্যাগকরিয়াছি নিজ ধর্মকর্ম চঞালের প্রায় আছি চঞালি লইয়া। আরুত হইগ্রাছি আমি বকেরে মারিয়া।। এতবল ছজ সূত বিবেকি ২ইয়া। আরম্ভ করিল তপ বলে প্রবেশিয়া।। অভঃপর দেবগণ বচে সক্ষেকরি। চলিয়া গেলেন সাব অমর নগরী।। এ ক্রিক कदरन कमिनी उदय अना के दिन्य मना मर तक दनाव खन বিপ্রবংশে জনমিয়া ত্র ক্ষণ সন্তংন । চ্ঞানের সহবাদেহরে। ইব জ্ঞান।। এক রাত্র ভার সহ কবিয়া নিবাস। ধর্মজ্ঞাতী अन्छत्र इहेन विनाम्।। येमानिष तक कटत हिन छेनकात्र । ভখাচ অনুধ তারে করিল সংখার।। হটলে অসং নঙ্গ এই দশা ঘটে । সহায়তা করিলেও এেলায় সক্ষ ট ।। দেখি প্রির मद्भारत कि कुन हमक्काता आन नाम करविहन खानान কুমার।। তথাপিও বক ভার বাচাইল প্রাণ। নাধ্যক সহ बारत देशल कियाकान ॥ भूनिता श्रीम श्री कांच शर्य है इहेंग। बुक्शन ठावनी छान्न निक विवृति।।न

অথ গৌরমূথ মুনির এছা।

পরার। এতেক কহিল যদিশ্যাস তপোধন। শুনি জানিশিত িত্ত হয়ে যত থাৰিগণ।। তবে পুনঃ গৌরমুখ মুনি মহান मर्थ। व्यारमते निकट्छे कम कतिशाविनत् ॥ अह् व इत्येत कथा (यन सूर्धायात्र । व्यवदन् स्वयन् कृषा वाट्ण कनिवात् ॥ খনা ছাছে সুধাপানে কুধা নিবারয় অসুধাপানেতে জুধা অধিক বাড়য়।। ষ্ঠ পায় ডত গায় কান্ত নহে মন। এ বড় আশ্চর্যা প্রভু অভূত কথন।। হইয়াছি কুধাতুর অভান্ত এখন কৃষ্ণ কথা সুধানানে তৃপ্প কর মন।। পূর্ণত্রতা প্রাৎপর প্রস্থ নিরাঞ্জন ভাষার ইচ্ছার সৃষ্টি হয় ত্রিপুবন ।। দেপ্রভূর নি**জ** थांम शालांकं (कमन। (कानक्षथादी मह विकृतनाउन।। সাকার কি নিরাকার গোলোক জীংরি। কিংছতু বা গোকুলে ইনা অব হরি।।একাংশেত অবতার কিবা পুণ্যতম। প্রকা শিষ্কা কণ প্রভু প্রভুর নিয়ম।। ভার তাঁর প্রাণাধিকা প্রধানা कामिनी। शत्रमामा शूर्वमद्री (तालाक वामिनी। महे स জ্ঞীমতী সূত্র কিনের কারণে। ভালুর নন্দিনী হয়ে 'জন্মে রুক্ষ বনে ।।কোন হেতু ভায়ানের রমণী হইল। ক্লাহবাদে किन कलक्ष चिति।। এ नव विखात कति कह महाभन्न। ि देशक राष्ट्र कथा डेक्ट्रा वर्ष इस्राष्ट्र वागरमय कम सूनि শুন অতঃপর। সে বছ নিগুড় কথা কংখ ছিল্বর।।

श्रथ (शांताक धारमत विवत्न।

যথা ব্রহ্মবৈবর্তে। তেজোকপঞ্চ যদুক্ষ ধারেছে যোনিতা ছানঞ্চ প্রচ্ছেরং গোলোক ভেবিমোর চা। বিকোটি
যোজনারাম বিভাগি মণ্ডলাক্তং। তেজং স্কর্মপং সমহদ্রত্ব
ভূমিনরং পরং । উদ্বস্থিত ফাবেকুডাং পঞ্চাশংকোটি যোজনং
পোলোপ গোপীসংযুক্তং কম্পার্ক গণানিতং। কাম্যেকু
ভরাকিনিং রাশ্মগুপম গুডাং। ব্নলারণাং বনাচ্ছাইং বির্জা
বেন্তি ভং মুনে। সভাং ভূক শৃতক্ত কং সুনীগুমীপ্রিতং।। অন্
দৃশাং ধারিভঃ স্বর্মে দৃশুং গ্রম্ম বৈক্টবিং। যোগেন পুত
মীসেন চাক্সীকং স্থিতং বর্ষঃ।

#### **\*** \*

### कारा छ वा।

্পুরার। পরং ব্রহ্ম পরাৎপর পূর্ণ তেজোমর। যোগীগণে রোগ সদা যেরাপ ধেরার।। যে তেকো মগুলাকার অভিশয় (भा मा । कारि सूर्या नम गात श्रेशाटह अला II कि लख স্থান দে প্রভূর নিতা ধাম। গোলাকার এই হেতু গোলোক ভার নাম। ত্রিকোট যোজন স্থান অতি পরিপাকটি। মৃত্তিক। নাতিক তথা রত্ব তার মাটি।। যোজন পঞ্চ.শ কোটি বৈকৃষ্ঠ উপরে। ঈশ্বরের যোগ পুত আছে শুন্যভরে।। विवका मार्पाट मनी रशारमाक त्यकेन। श्रमाद् कहितं त्य বিবজা বিবাণ।। লোলেকের মধ্যে শত কল্পার্কগণ। বুনদাবন বন মছল অপুল কানন।। পোপ গোপীগণ আছে আছেরে গোপালে কামধের আছে কভ ভাহার মিশালে। শত শৃক্ষ নামে তথা শোভয়ে ভূধর। শত শৃক্ষ ধরে সে পর্বত তেকোক্ষর। রাসমঞ্চ আছে তথা অনেক প্রকারে ভাহার শোভার দীমা নাহিক সংদারে ৷৷ এরপ গোলোকে অভি গোপনীয় স্থান।। স্বপ্নেতেও যোগীগণে দেখিতে না পান। বৈক্ষবগণের মাত্র দৃশ্য গম্য হয়। রুক্তভক্ত হেতু রুপা করে কুপাময় ॥

প্রোক। লককোট পরিমিতৈরাশ্রমৈণ স্থানোছরে।
রত্নেম্বার নির্মাণে গোপী নামার্ভং সদা। শত মন্দির সংযুক্তমাশ্রমং সুননোহরং। রত্বনির্মাণ লক্ষ্ মন্দির স্থেপরং
আশং চ ভুরশ্রেণ চন্দ্র কিয়া কুতং শুভং। গোলোক মধ্যদেশস্থাতীর স্থানোহরং। প্রকার পরিপাযুক্তং পারিজাত
বনান্থিং। কৌস্তভেজেন মণিনা নির্মাণ কল্যাজ্জনং।।
হিরাসার বিনির্মণ পোপান জন্মসুন্দরং। মণীশ্রমারে
নির্মাণ কপ ট ধর্পণিস্থিতং। নানাচিত্র বিচিত্র দুনরশ্রমভাঞ্ব
স্থাণ কপ ট ধর্পণিস্থিতং। নানাচিত্র বিচিত্র দুনরশ্রমভাঞ্ব
স্থাণ কপ ট ধর্পণিস্থিতং। নানাচিত্র বিচিত্র দুনরশ্রমভাঞ্ব
স্থাণ ক্রেণ্ডিরার সংযুক্ত স্থাপ্তং রত্বনির্মিতে। ন নাচিত্র বিধিত্রাটা
ব্যন্তগীশ্বা বরং।
আন্যালার কুনির্মিতে। ন নাচিত্র বিধিত্রাটা
ব্যন্তগীশ্বা বরং।

পরার। এই নে নোলোক ধাম অতি কমুপম। দেশপী দের লক্ষকোটি আন্তর্মে আন্তল্য। গ্রন্থপার ভার্মেটে মংক্র सूर्विर्मिक । किवा (माञा मरनाव्त हो। निक् (वश्वित)। अकरे আশ্রমে মন্দির শত শত। রত্নয় প্রকার প্রি। শৃত্যিত।। গোলোকের মধ্যবর্ত্তি প্রভুর আশ্রম। কি কব তাহার শোতা অতি মনোরম। প্রকার পারখামুক পারিজাত বন।। শো-ভিতেছে কি সুন্দর পুস্পের কানন 🕕 চতুকোণে সে ভাতাম চন্দ্র কিন্তাকার। শোভিত মন্দির লক মধ্যেতে তাহার।। অমুশ্য রতনে সুনিষিত সে সকল। কৌস্তভ মণিতে তার সকল উজ্জল।। কপাট সকল শোভে মণিতে থচিত। কি সুন্দণ রতন দপ্র সমস্থিত। কিবা সে সোপান বন্ধ দিয়া হিরা সার। হেরিলে হরের চিক্র স্থুদীন্ত ভাহার।। মধ্যভাগে এধান মন্দির মনোহর। যোলভারে স্থুসংযুক্ত আশ্রম স্থুন্দর রত্নময় প্রদীপেতে করে তথা আল। নান্ধবিধ মণি মুক্তা। মাণিক প্রবাল ।। তার মধ্যে রমণীর রত্ন সিংহাসনে । বিচিত্র চিত্রিত নানা মণি বিভূষণে ।। তাতে বিরাজিত ক্লক গোলো-কের পতি। বাক্যমনে অগোচর অপুর্বামুর্ভি।। বাক্য মনে ধাান যাহা ধরিতে না পায়। কি কাপে দে ৰূপ আমি কৃষিব ভোমায়।। ভবে যে কিঞ্ছিৎ কহি শুন ভপোধন। नांद्रण कट्डन यांशे (प्र शक्षानन।।

ष्यथ (शांत्लाक मार्थित खानवर्षन।

ह्माक । मबीन नीवनगाम किलाब नवनः खण्णनवर्षा-या इ बाजीन श्रण मानन लाइनः ॥ मद्र भार्तन भूर्नम् भाषा छाइन मामनः । काइिक्म्मभा नावना लीला निम्मण स्मादिक्स श्रण श्रण श्रण श्री श्रुक निश्वः । मिन्न स्व-नीश्य स्थानसः स्माद्या श्री श्री श्री श्री श्री श्री स्थानन ग्राण्या । इम्माद्या मिन्न म्याद्या विक्र स्थान विवासिकः ॥ स्वास मानजीयाना नम्याद्या विक्र स्थान स्वास युक्षाण्डि मन्त्रिष्टान्तमान्तः। भूतिहानिन्त मळ्य निर्मान भूगर्ग न ह ।। सुर्वराक्षण भूने रेखन्त मस्विभान्दास्य दक्ष खणा विक्षु निर्वानास्य खणा रेग्वरिस्य विक्षाप्टः। स्विभित्रः स्वाप्तार्थः स्वाप्तिक्ष्यः क्ष्मान्त्रः स्वाप्तिकः स्वाप्ति स्वाप्तिकः विक्षाः । स्वरः क्ष्मान्त्रस्य स्वाप्तिकः देवस्या-स्राम्

#### অসা ভ'বা।

প্রার। নবীন নীরদ নিশিদ শোভা কলেবর। পঞ্চদশ বংসর জিনিয়া শোভাকর।। শর্ৎপার্কণীর পুর্ণশশীশোভা ग्रांका। इत्यरह **दे**क्जनक ती अन्त मुथ दाका।। क्वांति कन्स-পের নিশ্দি লাবণ্য সুষ্ণর। কোটাচন্দ্র জিনিয়া এপুট বপু वतं।। कामायुक्त स्थम बन्न मखन। (माइन मूदनी क्छ জগত মকল।। বহি সংকৃত পীৰবন্ত পরিধান। চদানে চাতিত অঞ্চ তাতি শোভমান।। অজাত্মদন্ধিত কিবা মালভীর মানে। বনমালা খোভে গলে কৌস্তভ মিশালে।। তিভঙ্গ ভক্তিমা কিবা অঙ্গ সূগঠন ৷ দকাকে ভূষিত মণি মাণিকা রতন।। চুড়ার ময়ুবপুচছ শোভিত নির্মাল। রত্মর মুক্টেতে অধিক উজ্জেল। বছন সূপুরে মুগ্ম চরণ রঞ্জিত। বস্তুকেয়ুর बनद्राटः जून विजूषिण ।। वरन कुछान अखाइन सूरमाचन । মুক্তাপুংক্তি নিন্দ। করি স্তব্দর দশন । পকু বিশ্ব বিনিন্দিয়া অধরে: ঠ ুশাভা। উন্নত নাসাতে কিবা ৰূপ মনোলোভা।। অপকপ ৰূপ ক্ষা অভি চমৎকার। সর্কাকেতে ভূষিত রত্ন জলকার।। সুস্থির ঘৌৰনা গোপী সুহাস্য বদ্র। চারিদিকে 🗐 রুষ্টের আছমে বেষ্টন।। বিধি বিষ্ণু শিব আর অনস্ত প্রভৃতি। মুরেন্দ্র মনীন্দ্রমনু মানবেঞ্জুতি। ভবনবন্দন করে করি যোড়হাত। বিংখাসনোপরি স্থিত গোলোকের নাথ। ভক্ত অনুগ্রহ কারী পুরুষ রতন্য ভাক্তপ্রিয় ভক্ত নাথ বিভূ সনাতন্।। বাসেশ্বর স্বসিক বাধিকার কান্ত। রাধাবকস্থল क्षिक करण नाहि खसा। अहेकद्रण नाइरक्टर करि महरचन পুনরপি মহা দেব করেন উত্তর।। यनाপ অবুলী হন প্রস্থ अशादनात ।। जास्कृत जानमा ८२५ क्रम्यन्थात । क्रम्यन वह

व्यथ (शारमाक्नारथत विश्वत ।

द्धि कश । धक्रमा त्राधात्रा मार्कः भारतात्र के शिव स्वरः ।
विकरात्र महात्रभा निर्व्वत त्रामम् १९ । त्राधिक। स्थ मारा । त्राधिक। स्थ मारा । त्राधिक। निर्वे । क्या विहादः क्रिक्क छाष्ट्र । विह् हत् ।। त्राधिकः विद्वतः मान्।ः म्झातार्थः कर्गामार् हम् । व्रम्मा भार्मा । त्राधिकः विद्वतः मान्।ः म्झातार्थः कर्गामार् छामा पर्मन हित् मिरिकः। पृक्षेण्ठः किरित स्वर्शः विरात्र क्रित्रकः त्रुष्ण्वतः महात्रभा निर्वेत् व्युम्खला । ज्ञामकः क्रित्रकः त्रुष्ण्वतः महात्रभः । पृक्षेण् त्राधिक । हक्ष्णकः विद्वमनः ।

#### ত্স।ভাষা।

भशात। त्वारमारकरण महावरन त्रांगमरकाशरत। धकनी
त्रांधिका गृष्ट श्रीहत विहरत।। त्रांधिका विहारत मृत्य हरत
क्षत्रम्मा। शानितमा व्यापनारत शत कि व्याश्मा। श्रीमणी
क्षणांशि सूर्य हात्रोहिन। क्षान। विहातारत क्षत्रमा
क्षत्रान।। त्रांधिकारत मा विलिशा श्रम्भ मात्रांशव। वित्रकात
क्षित्रा कार्यान ।। विलिश विद्या त्रप्रांशव। वित्रकात
श्रित। क्षितिक व्यक्ति भाव क्षित्र विद्या त्रप्रांशवना
क्षित। क्षितिक व्यक्ति भाव क्षित्र विद्या त्रप्रांशवना
क्षित। क्षितिक व्यक्ति भाव क्षित्र विद्या त्रप्रांशवना
क्षित्र निकर्णेट हरता। क्षित्रमा विद्यारम्थी व्यानका
नात्रद्व।। विकारत हर्षत्र हर्षत्र हर्षत्र मन। स्थरम श्रम क्षिरे

करता वित्रका गहिए शैंड कानरम विशेषता । जाश कर्य ताबिकात क्षित्र गशीनन काणिया ताबिका भाषा कर्त निष्य मन । श्रीन कमिनि रेशना विद्यानिक मन। क्षत्र वार्य वार्य नोत नहर्त्त कथन ।।

कथ विदाकात कुछ श्रीमछीत नमरमारमाना।

ক্লোকিঃ। তাশক বচনং শ্রুছা সুস্থারেচরুরোদচ। উবাচ তাশ্চসাদেরী মাস্তং দাশয়িতুৎক্ষমা।। যদি সভীপ্রত্যুবং স্থা সাধিং প্রসচ্ত। ভামুচঃ পুরত স্থিতা আর্ষাঞ্জব প্রিয়াসভীং বস্থতদেশীর্ষামেনীবির্লাসংস্থিতংপ্রভূং। তাসাম্ভবচনংশ্রুছা রখামার্ক্স সুন্দ্রী।। জগাম সাদিং গোপীভি প্রিসপ্ত শত কোটিভিঃ।

#### ভাষ্যভাষা ।

পরার । স্থীগণ মুথে শুলি এগব বচন। শ্যাগত হরে
প্যারী কবেন রোদন।। তবে কতক্ষণে রাধা স্থাগণে কয়।
সভা কি দেখেছ হরি বিরক্ষা আলয়।। দেখাইতে পারিবে
কি তথা প্রাণেশরে। সভ্য যদি দেখে থাক লয়ে চল মোরে
স্থী সবে বলে গাধে দেখেছি নিশ্চত। বিরাজিত রাধাকাস্থ বিরক্ষা সহিত।। অবশ্য ভোমারে মোরা দেখাইতে পারি
দেখিতে যদ্যপি চাহ চল ত্রাকরি।। এতেক শুনিয়া রাধা
রথ আরোহণে। স্থী সহ চলিলেন বিরক্ষা ভবনে।।
তিন সপ্ত শতকোটী স্থী সক্ষে চলে। রথের বর্ণ নিভন
ভিক্রের বলে।।

### कार बिद्राधांत तथ वन ना।

শ্লোকঃ। রত্নেন্দ্র সার রচিতং কোটা সূর্য্য সম প্রভং
সর্বেষাংস্যান্দরনাঞ্চ শ্রন্ধঃ দার চরং পরং।। কোটা ঘণ্ট। সমা
যুক্তংমনোশ্রারিমনোহিরং। শত যোজন মুদ্ধঞ্চ দশযোজক
বিস্তৃতং। মনিসার বিকারশ্রেষ কে টাউভেঃ সুনোভিতং
রতি মন্দ্রির লক্ষ্ণের বুলার বিনারিতেং। রত্ব।পর্বা লক্ষ্ণাং
শতকৈ সমাস্থিং।। পারিজ্ঞাত প্রস্কানাং মালা কোটা
বিরাজিতং কুন্দানাং করবীনানং যুথিকানান্তথৈবচ। সুচারু
চক্ষাকানাঞ্চ নার্বেখানাংমনোহরৈঃ মলিকানাংই মালতিনাং

মাধুরীনাং সুগ জানাং।। কদস্থানাঞ্চ মালালাং কদমেশ্চ বিরা জিতং। সংস্তাদলপজ্বনাংমালা পাঁছা বিজ্বিতং।। শৈতচামর কোটীভি বজ্রমৃষ্টি ভিরম্বিতং। পারিজ্ঞাত প্রস্থানাং কোটী কণ্প বিশাজিতং রত্বশ্যা কোটীভিশ্চ নিজ্বজ্ঞ পরিষ্ট্রেঃ। পুল্পোপ্রান ঘুক্তাভিঃ শৃক্ষাভি র্ফিতং।। অস্যভাষা।

দীর্ঘ ক্রিপদী। অপুরা রথের শোভা, কোটা সূর্য্য সম প্রভা, প্রেষ্ঠ ইতুসারে বিনির্মাণ। কি কব রুপের কথা । যতর্থ আহি ষ্থা, এ র্থের না হয় স্মান।। লক্ষ্চ আছে যোড়া র্থেতে নাহিক ঘোড়াঃ বায়ু ভরে করয়ে গমন।মনোহর দীপ্ত অ্তি,চলেন মনের গতি, ঘোড়া ভার আপনি প্রন। কোটীং. প্তাকায়, রথধ্বত্ব শোভা পায়, কোটী ঘণ্টা বাজে একে-বাবে যা মণিহাবে বিভূমিত, কোটা ভ্ৰম্ভ স্থাভিত, রবের উপরে চারিধারে।। মধ্যেতে অপুর্কস্থান, রত্বাসারে সুনির্মাণ সূর্ভি মন্দির লক্ষ ভায়। রত্নের সর্গা কড, লক্ষ লক্ষ শতং, সমন্বিচ কিবা শোভা পায়।। তার মধ্যে দ্রব্য কত, গৃহ ব্যব হার মত, খাদ্য দ্রব্য কত পরিপাটি। পারিজাত পু<mark>ত্র্প ভা</mark>য়, কোটি শ্যা শোভা পায়, বতুশয়া শোভে কোটিং। কোটা কোটা প্রিমিত, বজমুষ্টি নমনিত, খেত চামরেতে শোভা वर्ष । मामाविभ पूष्ण भारम, विक्रूषिक स्य क्रान्दे, कि सुम्बत त्रत्थव উপরে।। করবীর কেয়াপাতি, মলিকা মালতি জাতি, भारतो कत्र है। लाकून। नारतचत्र वापि कति, शुल्लामाना নাহিছ, সুনক্ষেতে করে সমাকুল।। কেটী পারিজ।ত মালে, উर्জन करत्र इंडाल, श्रमभा श्रम यूनमाना। कड़ कर ভার শোভা, ব্রহ্মাদির মনোলোভা, কিসুক্ষর হয়েছে উজ্জালা ब ब्रायंत्र तककार्व, स्थालन वर्षिया नाती, नाति नाति चाटि व्यक्तन । बिइनी व्यक्तानरानी, दश्न उत्य ताथा बागी, उठितन द्रावयुक्त मन ।

শ্রীরাধিকার বিরজা ভর্নে গমন ও বির্জার । নদীরূপ ইওন।

(माक्ष्र) धैरमञ्जूणीयथा जून मरक्य र्तिथिय। जनाम महना द्विन एर्ज्य म्हल्य स्ट्रन। बाद्रत नियुक्तर महल्बात- त्वाणः महमारवः। लक्तांश श्रीवृद्धः श्रीमान महाक्षिः। त्वाशि श्रीमान मार्यामः श्रीकृष्णं व्यव किष्वः एम्वाकृष्णं क्वा । विवे विश्व विश्व श्रीकृष्णं व्यव किष्वः। विश्व विष्य विश्व व

### क्षेत्राङ्गवा ।

পরার। হেন রথে হরিপ্রিয়া করি আবোচন। চচ্চুর निमित्य भिन्न वित्रका खबन।। बाद्यटळ याहेटळ छथा दम्दथ ছাপরাল। লক গোপ পরিবৃত আদাম রাগাল ।। হান যুক্ত সুখে তার সরোকহ সম। কুঞ্জের কিন্ধর সেই অভিপ্রিয়ত্তম ভাহারে দেখিয়া দেবী আরক্ত লোচন। ক্রোধিত ক ক্পিতা इत्त कर्टन वहन।। भून भून बद्ध विक लम्मा किस्तत। पृत হও দুর হও ছাড় ভার বর ।। ভোমার প্রভুর ভাছে মদন্য। क्रिमें । दर्शयंत्र छ।शादत क्रामि कि वाश ता धमी ।। ताधि-कात वांका खेनि छात्र ना छाणिन। त्वळ इटेल मश्रवनी कट्छ में काहिन।। ताथिकारत धार्वामाल माहि सम पुरत । निश्मारेक व्यापाम बर्ट्स वात क्षेत्र कर्त्य ।। । जाना दर्शक वर्गाधकपृत्र वर्ण স্থীপন। কোধে কল্পমান তহুমুনিত বোচন।। একরে चनचा। नेथी कारशदेख बाहेगोत लक रताश गर करन विशास रहे निया। वानटक विशास रहे नि हरने नर्वक में महा क्लानारण मन रेश्न त्रहेकन । अवस्थात वाकि नुस अभि माद्राप्तन । अञ्चर्गामि ज्ञानम कानिल कार्रन ।। जाईना बार्ण गण गरी गटन करिया नक्का रुक् करका न श्रेर्तन

হরি।। তবেও সভর চিত বিরক্ষা সুরন্দী। মনে মনে ভাবে ধনী উপার কি করি।। অন্তর্জান ইইলেন আগনি আপিতি। নিকটে আইলা রাধা অনিকোপবতী রাধিকার সঙ্গে আমি বলে না পারিধা এখনি তাংগর কাছে অপমান ইইব ।এতেক ভাবিধা ধনী ভরেতে অন্তর। যোগেতে ছাভিল প্রাণ গলিল শরীর।। তার হয়ে অন্ত তার প্রাবিত হইল। মহানদী বিপে দেবী গোলক বেভিল।। বলয়া আকারে করে গোলোকে বেন্টন। এক কোটি যোজন প্রস্তেতে নির্পণ।। নিমেতে গভীর ভার স্মান দিব্য। বিরক্ষার নদীরপ ভিজবর কয়।।

ख्य बीय जी त विव्रकात गृह हहे एक निकाल दे गमन।

दर्भ कहे। ताथा दि गृहर गद्भा न ममर्ग हताः मून । विद्रम् काम्म गित्रक्रम १ पृष्ठीः । गहर बनायमा । बिद्रम् विद्रक्ष विद्रक्षी पृष्ठीः गिरुक्त गित्रक्षार विद्रक्ष विद्रक्षी पृष्ठीः गिरुक्तमार शिक्तमार शिक्तमार

#### জ্ঞানাৰা ।

म्हें वादे क्य करवन तामना के किश्यद विवक्तात छाटकन ख्यन ।। देकाथा ८३ विद्रक्षा सम खोटनत खित्रकी । कल देक्ट উঠি শীঘ্র দেখা দেহ আসি।। পুরতিন তত্ত্ব চইয়াছে বারি। ধরিয়া কুড়ন তন্তু আইন হে ফুম্বরী।। 🔊 হরির বাক্য শুনি বিরক্ষা সুনদ্রী। জল হৈতে উঠিলেন দি । দেহ ধরি।। द्वारा मना जानवंडी इहें इंडिंग एथन। न द्वित निकार के कानि किल भरभन। निक्रमादी विद्यकाटत दमिश केशव दी। (धामकाटव क्षित्वम शास्त्रात्कत পতि । हुन्न क्षांनिकम माम मुङ्गू छ कति । एके श्रम विवक्त पारत बालन खीरति ।। छन शिर्म मता শভ্য বলিহে ভোমায়ানিতা নিভ্য তব স্থানে আলিব ভেখায় রাধার সমান ভুমি প্রিয়সী আমার। ইংার অন্যথা কিছু ৰ্নাহি ভাব আর।। এত বলি কোনে লয়ে বিরকা সুন্দরী। वित्रकात छीटत सूर्य विम्तिन रुद्धि ।। छात्रा प्राधि ताथिकात প্রিয়সখী যত। পুনরপি রাধিকারে করাইল জ্ঞাত। এত্রগা প্রিদাদ কয় প্রীক্ষণ চরণে। দৃঢ় ভক্তি দেং প্রভু শিশুর মননে অথ রাধিকার নিকটে গোলোকনাথের আগমন ও

শীরাধিকার মান।

শ্লেবিঃ তারাক্রাধ সা দেবী সুস্থাপ ক্রোধ মনিবে।
ক্ষেত্রকং সন্দিত্র বিষকৃত্ত পরোমুখং। মদাশ্রহং সমাণন্তং
বুবং দাসোনদাস্থা। এন নামন্তরে ক্রেণা ও গাম রাধিকা
ক্রিকং। প্রতন্তে রাধিকা ছারে শ্রীয়াসহ নারদ।। রাকেশ্রী
হরিং দৃত্যা বাইটোবাচ প্রিংপুঃ। বিরক্ষা প্রিয়মী কান্তা
মূলপার ভুবং।। দেহৎ তাক্রা মম ভাত্রিখানিয়া সিতাং প্রতি
হে নদীকান্ত দেবশ নদীং সংভাকে সিচ্ছিল।। হত্তীরে
মন্দিরং কুরা হিন্ত হিন্ত তয়াসহ। নদী বন্ধ সাল্লক নদো
ভাব ভু মহ্ব। নিন্সানাদাসাক্ষণ সঙ্গনোঞ্বানভাহে
দ্বাত্রপার প্রিয়াম ক্র্যান্তি। নৌতুষ্যা ভুমিন্নানাহ গোলি
ক্রেমা বিরয়াম ক্র্যান্তি। নৌতুষ্যা ভুমিন্নানাহ গোলি

भारत । नशी बुद्ध कर्मानी अनिया रहन । त्कांश छत्तः । क्वांशास्त्र कड़िना भन्नन । यथीत्रात छाकि वत्त कार्रिकड

क्षित्त । मा निवा क्षांबाद घटत बिक्ट्य कार्निका विस्कृत ভাব খেন মুখে ইয়া রয়া। অন্তরে বক্ষতা তার মুখে হান্য जर ।। बहै करल करह ताथा काशीत मधिक। (इसकारण ताथा को छ जाति উপनी छो। जीना (म.त्रश्रे जिल्हा जीकृष्य उर्थन । ताधिकात द्वारत कामि दिला पद्रमान। ताधिका वाभन कास प्रविशा नमा त्यां कार्येवांनी क्यानिनी क्टर सदन प्रश्या। পার্রী কন ওছে নাথ নিবেদন করি ৷ ভৌমার প্রিংসী ভার্যা विवृक्ता सूनमुद्री । सम करह नती बाला कहन (मधनी। एथालि खाशांत क रह यां अ खन्यनि ।। अट्ट मनीकां ख क्रिया (नरवर् केशत । नभीत मर्छ श हेष्ट्। कर्त्र निवस्त ।। अक्टर रम नमी ভারে মন্দির করিয়া। থাক থাক তথা দেই নদীকে ল্ইয়া नमी यपि देश उर्व श्रियुक्ता नाती। छेटिक इटेंटि नेम जायात भुताति।। मनीमर मानद मक्रम म्युहिल। महत्म ज्ञाकतम सूथ স্থাহ্নতি সহিত।। এতবলি ততকণে নির্ব হইল। ক্রোধে कर्मालनी जूमिन्या। ना छाजिल।। नक लाभी निक्छिए আছিল তথ্ন। काष्ट्र। कन्दुर्व्ह ६८। त्रद्ध मर्क्स्यम्। य ভাবেতে নোপীনণ আছয়ে তথায়। শুন সবে এক ভাবে ভিজ বর কয়।। রাধিকার সদা দ্রব্য তত্তেতে করিয়া। চারিদিকে ঘেরি সবে রুহে দাগুটিয়া। আজ্ঞামাত্র আনিয়া যোগায় ७ ७ का । ज्याका दिना काक मूर्य ना गरत वहन ॥

অথ প্রীমতীর সেবাধিকারী গোণাদিগের বর্ণন।
স্থোবঃ। কাশিটো মহরতাশ্চ কাশ্চিকা মুক্ষাংশ্চ রাধিকা
কাশ্চিত্তমূল হস্তাশ্চ কাশ্চিকালা বলী করাঃ। বাসিডোদ
করাঃ কাশ্চিৎ কাশিচিৎ পূজা বলী করা। কাশ্চিৎ সিন্দুর
ইস্তাশ্চ মণি হস্তাশ্চ কাশ্চন।। রত্বালস্কার হস্তাশ্চ কাশ্চন
প্রমাণে আমা। বেণুবীণা করাঃ কাশ্চিৎ কশ্চাদমন্ত্র করা পরা
মন্ত্রীত নিপুণঃ কাশ্চিৎ কাশ্চিন্তন ত্পেরা। ক্রীড়াবস্ত করা কাশ্চিমধৃহস্তাশ্চ কশ্চিন।। মুধাপত্র করাঃ কাশ্চিদ্ভিন্
প্রিক্তাঃ পরা। বেণবস্ত করা কাশ্চিৎ কাশ্চিকান সোৰকা
প্রাঞ্জালি করাঃ কাশ্চিৎ কাশ্চিত্তাত পরা বরা। এবংক্তি
বিধাং মন্তিরাধিকা পুরতো মুন্তা বহিদ্দেশিক্তা কাশ্চিক कि शोषु महा। का कि का विष्क के विश्व के विश्व दिन विश्व के विश्व

### ভাস্য ভাষা ।

পরার। কোন গোপী আছে করে ধরিয়া চামর। কারু করে সুক্ষা বস্ত্র অতি শোভাকর ।। ঝারি ভরা সুবাগিত বারী কার করে। প্রাক্তি প্রসূপে করে ২ন্তপরে। কেহবা ভাষুণ হত্তে আছে দাঁড়াইয়া। অপুর্ব পুজ্পের মালা কেহ वा में हैशा। शूक्तत्र निस्त हेट्छ बाट्ड कांन खन। काङ्गर হত্তে মণি মাণিকারতন।। কেহ কেহ ধরিয়াছে রত্ন জলক্ষার कथन कि वाक्षा इस अभिकी बाधात ।। वीना वानी काक करत यञ्ज स्वास्त्री। प्रक्रीटड निश्वाटक इ एक वा नाहिनी।। আৰু হৈলে পরে নিত্য গীত বাধ্য করে। এ হেতু সন্মুখ তার। আছে যোড করে । খেলনীয় বস্ত লয়ে ভাছে কোন জন। কি খোলতে মনে ইচ্ছা হয় বা কখন।। মধুহত্তে করি তথা কেহ কেহ খাছে। সুধাপণ পাত লয়ে কেহ রহিয়াছে নানাবিধ বেশ বস্ত্র কেহবা শইয়া। কেই আছে পাদপীঠে হাতেতে করিয়া।। কেংবা দীড়ায়ে আছে পদ দেবা আশে। क्ट्रक्ट्**ख**ि शांठ कर्द्र हादि शामा। बहेक्रभ नेफ গোপী রহিয়াছে কাছে। ইহা ভিন্ন অন্য কত দিকে আছে বহিন্ধারে কোটা কোট আছে গোপ্নারী। শ্রীমতীর পুরের ইইয়া রক্ষাকারী। ষোড়শব্দীয় গোপী সবে মনোরমা। মনোচর বেশধারী নাহিক উপমা।। দ্বিজ करहे मामान्य (खबमा लाभी भरत । एष्टिकीटन दावा के व्य कत्य गर्वकत्व ॥

ভাথ শ্রীরাধার পুরে প্রথেশিতে শ্রীরুঞ্চকে বারণ শ্রীরুফ্রে স্থানাস্তরে গমন।

श्रीकक्षा क्रक्षमचाख्यर गहुर नम्बूकात मर्श्विष्टः। भूतेखि एक वर श्रीराभ्य त्राधा भूमकृताच्या।। ए क्रक वित्रशाकाखर शक्य मर्भूत लाखात्र। एवं स्थारित मिनिकाल एर भव्यकी माध्या। कियाबाल धुरकात समाजि किर श्रीराक्षमः। वाभिका वर्षार श्रीका स्त्रा। विष्ट एथीक

বিনরং গারং মং শতরোচিতং। কানিচ চুচরিতি হরে গচচ তানান্তরং কানং । রাধা কোপানয়নে গমরিষা মরা ববং। কানিচ চু রিভি পীত্যাক্ষণং গচচ ক্রান্তবং। ছরৈর বিশ্বিতা তং বিনামঞ্চ বক্ষাতি।। কানিচ চুচুরিতি প্রেমা রাধিকায়া হরিং মুনে।। কান্তর্গুরিত প্রেমা রাধিকায়া হরিং মুনে।। কান্ত্রান্তর গচচ মান্ত্রনার বিধিঃ। কান্চিদিত চুণানঞ্জ পরিহাস পরং বচ।। মান্ত্রনার মং ভঙ্কা মান্ত্রা কুক্কামুকঃ। কান্চি মে চুরিভি হরিং স্মাত্রং পুরতঃ ন্ত্রতা গল্পমীপ মুর্থপা পানাপরং কুরু।। কান্চিনিব্রিথা মন্ত্রমাধ্রঃ প্রমানোত্তঃ। ন্ত্রত্বক্স ক্রান্তর ক্রাণ্ডিনিব্রিথা মন্ত্রমাধ্রঃ প্রমানোত্তঃ। ন্ত্রত্বক্স ক্রান্ত্রনাধ্য মন্ত্রমাধ্রঃ প্রমানোত্তঃ। ন্ত্রত্বক্স ক্রান্তর ক্রান্ত্রনাধ্য মন্ত্রমাধ্য প্রমানাত্তঃ। ন্ত্রত্বক্স ক্রান্তর ক্রান্ত্রনাধ্য মন্ত্রমাধ্য প্রমানাত্তঃ। ন্ত্রত্বক্স ক্রান্ত্র শ্বিত্রকাধ্য মন্ত্রমাধ্য প্রমানাত্তঃ। নিত্রত্বক্স ক্রিভা

### ত্যা ভাষা।

मीर्घावनमे। ध ब्राप्ट लानी मन, यथा हिल यडकने, রাধা বাকা করিতে পালন। মাইতে রাধার ঘার, মানা देकल न छेव दा, श्वनि क्रुख दहिला ज्येन।। स्वाद द्रदश श्राप-পতি, তাহা দেখি রাধাসতী, পুনরপি বলেন বচন! হেরুঞ বিরজাকান্ত, আমার আঁথির অন্ত, দাঁড়াইও না করহ গমন এতে স্থিদশীকলে, প্ৰবঙী হে সুশীলে মাধ্বিলো প্ৰিয় महर्गत । निवादक अधूर्र्डटब्र, कि कार्या कार्याव घटता कार्मि নহি বিরজাসুকরে।। এত যদি রাধা কয়, তবেভ সে স্থি চয়, কুষ্ণে করে করিয়া বিনয়। হিত কথা নিতি গার, সময় উচিত আর, যাহাতে ক্রেধের সাম্যহয়।। কেহ বলে ওরে कति, काटनक छालका कति, ज्ञामासूटत कत्रक शमनः। चूहित्व রাধার মান, আমি গিয়া হব স্থান, ভাকিয়া আনিব ততক্ষ क्रिवाल श्री कि कड़ि, क्रमकाल गाह इति, श्रास्त्र कृमित्ह অগন। ভোষার বাধিতা প্যারি, তোষা বিনে হে মুরারী, कारक जात्र वानाय वहन । (थार्य करह दकान खन, जन याद जुन्मावतः मानास भवधि निवतः। (कड् श्रांतहोटन कम्, अन ८१ काबूक द्वारा, अख्डिशाद श्रोत अप कर हो। दकर वी बचा दुश्व वात्रि, करह यन शिविर, मानिनीत निकामेट यां श्रीक कि के व कार्य, स्थ श्राद्व का त खी से, सान क्र कतिका छेठा छ । इतिकारन कार्ति श्रीमा , श्रिष्टकमा मृथि इकाल

मांबदनत करत नियातन। महत्व काउलांक, महानाम माई-महि, क्विम मेशमा वेममा। भूमिता मधित वानि, महे क्वि हक्वमानि, भृशस्त्र कदत्रम भ्रमन। विक्रमत कट्ट भूमह, उत्तरस्थ मक्टन स्थम, श्रीमादम लहेम्रो विवतन।।

अर्थ औक्ररणत गृशास्त्र शमात आमारमत कार्य छ

### শ্রীদানের প্রতি শ্রীমতীর অভিদাপ।

्राकः। (भाषी ভिব या यार्यक खना वात्र कार्रण। मगण्ड कोल श्रीमामा इस्त्रो (शश्युत्र भएड ।। कालप्रवाह बिमामा श्राधिकार श्रद्धामध्रीर। श्रुक्त श्राप्त कर करेर ब्रुक्त-शक्य (माहन । कथः वर्गात गाउन्छः करूवांकाः मनीचंतः। का जातायः शूर्वकायः करताति छः विषय्निः।। साबीः । व्यवत्रोष्टक निट्यां धःकगारमवत्र । कगा भागार्किमारेनव गर्द्ववा श्रीच द्विभवार ॥ क्वननिमात्र कृष्ण्युक्तर मञ्ज्य छिषार । क्विकि कार्किका एको खर नाकामि निक्व नः ॥ देवकृष्टि প্রিরুস্য চরণায়ু জ মার্জন। করোভি কেশৈঃ শবঃশ্রীদে-बन्द ७ कि श्रुक्त कर ।। मञ्जन की ह खबरेन इ कर्ग शिषुष सुन्म देव ।। मंडल्ड व्होलियः ॥ ज्यान कानश्नि ज्योधतः । किलादि व প্রিতাকা ভক্ষুত্রং হরে। জ্বীদাত্মে। বচনং শ্রুড়া কেবলং কটু মুলনং।। সদাশ্চকোপদ্য জন্ম খারস মনাদহ। রাসেশানী বহির্গতো ভনুবাচন নির্ভুৱত। স্ফুবদোটি মুক্তোকেশী ब्रक्के कि लाहने ।। ब्राटभावाहरव द्वालक्षणामस्य पूर्व सूत्र् नम्भारे किन्नत्। इक कानानि मनाथ न नानामि वनीयत् चनाच द्याद्य अकृत्या नशामाकः खेजाधम्।। कानानि खनकर द्वानि नेमा निकति गण्डार । यथान्ताक जिमम -बिकार मिणि गर्छ ११। जया मिन्यनि मार पूर्व जया प्रा-मशाना भारताबुहाबर कर्खारत्र कि कुभी खंद्रश्री। वारमधाती क्रिस-कु। खा मूचाल विवेहा गर । वहमाह त्येवा माखनामूदेवहकू मुहि जिहें।।

## হক্তাৰভাষনী। জন্ম ভাষা।

প্রার । বারিত হইয়া রুক্ত গোপীর বারণে। গুহান্তত্তে शर्म कट्टन एएकन्।। इत्स्यू शर्मन एत् जीनाम क्रिय শ্রীমতীর প্রতি কিছু কৃতিতে লাগিল।। ক্রেণ্থেতে কি.লারী हिल आंद्रकर्ताहमी। जीनाम आंद्रकहरक त्कार्यकरस्वांनी किनद्रशा खन्नी कृषि आमां अस्तित । कृष्ट्रे वाका कर किहू না ভাবে অম্বরে ।। আআরোম পূর্ণকাম যেই ভগবান। বিভ্ ম্বনাঁকর ভূমি এ কে। ন বিধান। জাননা কাহারপাদপ্যস্থা कति। इहेशांद€ जाशनि द्या जिनम केनदी ।। दमवीट खनदा षुमि शूका कति काता ना कानिया निक्रमत्न कर कहन्द्राय ॥ अवनीनाकः म क्रम हारि क्रज्जिल्ड। उव ममा कामी कामी পারেন স্থিতে।। , বৈকুপ্তে বিষ্ণুরূপ প্রভু বে আপনি। क्यना क्रवरत रमवा क्रियम्बलनी॥ क्लिकारव रमस्या रश्वी श्रव এক মন। কেশেতেমার্জ্জনা করে যুগল চরণ। কর্ণ পীযুষের স্তবে দেবী সরস্থা। ভক্তি করি যেই জনে সদা করে স্তক্তি এংন প্রভুমি কহ কটুত্রাজাননা যে কুষ্ণ চন্দ্র তোমার ঈশ্বর। রোধ তাজি শীঘ্র উঠ শুনহ বচন। তাকিভাবে ভঙ্গ পিয়া 🗐 - রি চরণ।। । ভীশামের একপ শুনিয়া বটুবাণী। छनिया (काथिका देवन ताथा क्राकुतानी॥वादित काइना (पनी कार्यर अमनि। क्रूबरमाष्टि मुक्कर कर्मा चावक लोहनी। শীলামেরেকহে দেবী নিষ্ঠুর উত্তরাওরে জাল্ম মহাম্চলম্পট কিন্ধর।। তুমি কি কেবল জান তোমার ঈশবরে। আমি কিছু नाहि जानि एक त्वह अकटत ।। एकामांत क्रेश्वत क्रूक आमारमत नया धरेकि छापन मत्न क्लानक् निक्तम । अत्त खक्राधन তুমি জান খীন অতি। জননা নিন্দিয়া কর জনকের স্তৃতি।। अञ्चरत्रत्रा निष्मा (यन करत्र एक्टलाद्र । महम् निष्मा जूमि করহ আমারে।। আসুরী সভাব তোর ওবে মুঢ়মতি। অসুর इहेशा शिवा क्या र संखी। त्री लाक इहेट छूमि कवेह नमन প্রাম তোরে অভিশাপ দিলাম এখন।। কে তোরে রাখিতে भारत हैरत इत्रामम । कवार्थ कामात वाका कानिर निक्ता **७७विल तारम्यती श्रद्ध धार्यामना। कोनजादन भुमत्राम** 

भारत करिना ॥ निकटिएड जाहिन गएडक मधीन। विक कट्ट करत जारा होमद राजन।।

ष्य जीमरीत श्राप्त जीगारमत किनान।

শোকঃ। শুভাচ বচনং ত্যা। কোপেন ক্রিডাধ্বঃ
স্পাপতাঞ্চ প্রীয়ামা প্রশংঘানিং প্রজন্সি। মহুবাইব
কোপত্তে ত্মত্বং মানুষীভূবিঃ ॥ ভবিষাসন দক্ষের মরা নপ্ত
দ্বানিংশ্রীহরের শোবৈশ্যা রুদ্দাবনেবনেঃ॥ গোকুলে প্রাণ্
দ্বংক্ষ বিস্তাবর কাননে। ভবিতাতে বর্ষশহং বিচেছনে।
হরিনা সং॥ পুনঃ প্রাণা ত্মীশঞ্চ গোলোকো মাগনিঘানি
ভাগি ত্যক্তাচরাত্বাচ সজগ্রেমহরেঃ সুরঃ।গত্বাননাম প্রীকৃষ্ণ
শাপাখ্যানম্বার্চ। আনুপূর্ববাহ, তংসর্বং কারাদ্র ভূশং
প্রজা। উবাচ ত্বং ক্রদন্তক গছেইং ধরণীতলং। নজে তাতে
ক্রিপুরনো হামুরেক্রা ভবিষানি॥ কালে শক্ষর শুলেন দেহং
ভাজামমান্তিকং। জাগমিষানিপঞ্চাশং যুগাভিত মমানিষা
শ্রিক্ষনা বচংশ্রম্বান্ত। মণান্ত্রিতা ওছক্রিরহিতং মঞ্চি
ক্রানিম ক্র্যানা। ইত্যক্তা প্রাহিং নত্বা জগীমন প্রমানির
ভিহি । এব শন্তাচ্ত্র বসুব তুলনী প্রিহা।

### অস্যভাষা।

পয়ার। শুনিয়া রাধার থানী জীদাম কুপিল। কোবভরে
৪৪ ধর কাঁপিতে লাগিল।। মহাকোধে জীমতীরে অভিলাপ
করে। অধ্যানী প্রাপ্ত তুমি হবে অজপুরে।। মালুমী সমান
কোপ ভোমার দেহেতে। মালুমী চইবে তুমি আমার
শাপেতে।। একথার কদাচিত নাহিক সংশ্রাভাবশা অস্থিকে
হবে মালুমী নিশ্চর।। মুচ্মতি বৈশা জাতি আয়ান নামেতে
জীকুকের অংশ্লাত হইবে ব্রহেতে।। ভূপ রূপে খ্যাত সেই
হবে বৃক্ষাবনে। তোমাকে জায়ান পত্নী বলিবে ভূবনে।।
ভায়ানের রাণী রূপে সেস্থানে রহিবে। পুনর্গি বৃদ্ধাবনে
জীকুক শাইবে।। কত দিনে কুক্ষ সক্তে করিবে বিহার। তুর
ভবে বিচ্ছে প্রতিবে জারবার।। শতর্থাবধি কুক্ষ বিচ্ছেদে

व्यवस्थि। वाषां व हत्र । कृटकृत निकटि लोला विक्रिक्टमटन जिलाम खोक्स शरम खनाम कविशा। यह ममानाव करह कान्मिया कान्सिया।। भूकाभव भागामाभि गक्न कहिल। वाधिकार मह जीत ए बल इहेन ।। कहिशा मकन कथा करदेश विषय । कृष्टे हरक रुत्र यन वादि विद्यान । श्रीपार्यत द्यापन দেশিয়া নারায়ণ। আশাসিशা কন তারে মধুর বচন।। খেদ नाहि क्त्र यार धर्नी छेलता अपरत्तत त्राका रूटम असिद्ध সত্তর।। ত্রিভূবনে না পারিবে কিনিতে তোমারে। অজয় হইয়া মুখ ভুঞ্জিবে সংদারে ॥ পঞ্চশত যুগাভিতে উদয় কা-लंब। छाब्रिटंव रम रमश् छव मृरमण्ड मिरवर ।। कामिरव का गांत कारह का मोरव का मांत यांश्कृषि कुमखल कर नाहि আৰু।। ক্লের মূখেতে শুনি এতেক বচন। ক্তাঞ্জলি হয়ে किष्ठं करत निरवनन।। जायूतीक (भरह जामि तव वक्तिन। নাকরিঃ মোরে প্রভূতক ভক্তিহীন।। এত বলি কুকাপদে করিয়া প্রণাম।আগ্রমের বাহিরেতে গেলেন জীদাম॥ সেই ति असूत्रत् श्रीनाम सम्बद्धा मध्यपूष्ट नात्म (यह जूनमीत পভি।। षिक करह कृष्ण्डल क्यूग्नागत्। ভङ्गान त्रक्रा হেতু সদত কাতর ॥

অথ জাদামের শাপে ভীতা হইয়া জামতির জীক্তকের নিকটে গমন ও জীরাধাক্তকের অবতার।

त्माकः। १८७ खीमाणिमात्मती खनारमृत्निधि छी छ खीमामणाश्ना खोक्कः रम्याद्य ॥ द्यादिमा कथमर श्रीत यामिन्न छोदिछ । करन नत्म युगण्य एकात्माश्व द्या दिना लाक् छविक्छा १ क्रत्का द्यायामास (खन्नी । इस्नार्थ १ रमिन्नामि द्रार्थ १ १ द्रार्थ । द्रार्थ । क्याम धन्नी १ नद्रार्थ एक्नि मह । व्यक्ति १८१ क्यालकर एका क्रिया । व्यक्ति एक्नि क्यामा खाक्यामम शिक्त । विकर्ण क्रिया मही द्रार्थ दिनी विश्व विकर कृष्ण क्याम स्थार्थ । क्या क्रिया मही द्रार्थ

# प्रकाम । राजी

### क्रमा ।

भेड़ोड़। अनेटमंड अमर्ट्स अमर्ट्स अपकी उपन । विषय मार्ट्स व त्रज् दिसामिक असे ।। ভाবिशा कि दिशा (मरोड़े किशा मन्तर । बोक्स निकटि यान गडा चलता। कत्यट भारत कथा तक्त करिया। द्वापन करतन (परी (गारकटक साहिया। कार्ट्र कट्टन ताथा क्रांक केट्र । मास्यो इहेश यान कार्याव पूर्वाम । एकामा विका कि बारशरहर विविध श्रान । करनक विट्रष्ट्र माथ यूत्र भठ छ। म। এ । वित्र क्यनिमी कदत्र द्रा-मन बोहर करहन एरव आधान वहना। (भाकाएता मिर्थ क्रम श्रीमरी ताधारत। मधुत वहत्न श्राष्ट्र तृवान छ हारत।। विध्यक्रमतः कर्य श्रियम मा क्ष कालत । जनगर यात आपि कार्मी जिल्हा। क्षीकृष्य केटरन यहि अध्वक रहन । मानिम्ल হৈল তবে প্রীনভার মন।। প্রীকৃষ্ণ সহিতে রাধা সংনব্দিত मत्म। इहेद्दम कवडात कानि इन्मावतम ॥ त्रकारू चट्डाटक জিমিনা ক্মলিনী। জীদামের শাপ হেছু আয়ান গৃহিণী।। রাধা হেছ কুফচন্দ্র হন ছবভার। গোপ বেশে রাধানহ ক-রেন বিহার।। অধিকস্ক বিধাতার প্রার্থনা আছিল। ভারাব-ভার। (इंड्रु डाइ। ६ २ हेन ।। এ मकन कर्या करम ममाभन कर्ति পুনঃ (शार्लाटकर ए यान (शार्लाहकत इति।।

सीर्य जिल्ली। दान कन मुनिशन, क्रुक्टल एव कांत्रन, क्रावन टाइ क्षित्न वाश्वान। इन्म यन मार्य रुदि, लून क्ष्रल कात छित, त्वन विश्वित्रार श्रमान। छिशालि मालू यो लीला, कड मार्ड श्रमान।, कि कित्र लाई लाई व्यान। मार्ज या दिश्व कित्र कित्र

ख्य इस्तारन भीतामा के स्वतं विशतं & मण शिक्षारक कोरन नहें। जा श्रीत वरन रश होतन करवेन।

भाषात । अके मिन वृक्षावरन नन्म महाभव । रकारने ए लहेबा मृत्य ब्रीकृष्ण एनत्। वृत्सावन छे भवतन चाखिव कानत्न र्ताधन ठाउँ। कदि जानिक्ड माना उन्हर्द गरहारद तिश्री मिलियान । क्र हैशा (१)। ब्रुट्गर्य खे छ जन भाना। बाल्टक्ट्य জনুপান করাইন পরে। জাপনি,ক্রিয়া পান স্বস্ট অন্তরে व निल्न बहेमूल िखाम काउन। इंग्नकाटन एम्थ उपी जा-শ্চৰ্যা ঘটন । মাধাবী মাতুৰ কুণ বঁলায়া কোলেছে। পাতিশা বিৰম মানা দেবিভেন। আচ্যিতে আকাশেতে মেঘে। উন্ম वाश्वावाङ बर्कावाङ स्थात अव इसाजून जून करन स्वय कन्द्र शक्ति । कुलाकात् वाति थातः इस दित्यन । इक्तनं किल्लिक रहेन अश्वार्**छ। वड़ वड़ दूक माना उन्न हर**न পড़ে ।। दिविदा मरमात्र मरन वज् छत्र भारा। कि कतिव कि श्रेरव छ। रवन छ्लाञ्च। नन्त दरन धा मगरत्र स्तावर्ग छा जिला। श्रहरू याहैव आमि कमन कविशा।। शृद्ध यनि नाहि याहै वालाक कि इहेटव । फेल्ब मक्कि देश्न कियरन पुनिद्व ।। धरेकाल নক্ষ ঘোষ ভাবিখা আকুল। কোন মতে কোন দিকে নাহি পান কুন। হেনকালে কুক্তক্ত মায়া বাভাইল। নিজে ভরে-শ্ব হবে ছবেতে ভাদিব।। ছইহাতে জড়ায়ে ধরি পিতার গ্রেলতে মহাভয়ে মরহরি লাগিল কাপিভোতাহা দেখিনন্দ-द्याय छाट्यन कलात । बाह्य कट्ड एमस्ट्र छ्यार्थ छाहेत ।। र्वाकुरनटक काहिरलन वाथा ठीकुरावी। व्यक्तार देशन छैदि बाकुल शहारी।। मुक्त बर्ख्यात्र द्वारी कार्निम कार्द्र । व्यक्षित्र मिन्द्रमय किन एककन ।। এट्टिक छ।विद्या छटन भूकि छ अ ऋदि। तानिहरू राबद्ध किया राष्ट्रिक्ष धरिया राष्ट्रारन बार्डन सम दर्गाला के शहें । दिन तर हे हितान क्रिया रूपता ।।

कार कालीत हान की गठीत का धमन। भैशाव किन्छत्व स्वित निकार स्वित्वा। छेड्रीन बीटत विद्या समय शाहेगा। विक्तान को साद्य स्वरत नेमा महानेत्र।

আশ্চর্য মানিয়া হৈল পরম বিশায়। এমতীর রূপে দশদিক पारना करता विवासन एएक काणिहन एक हरता केंचती कानिया जीदर जीनम् उथमा छ कि डाटर धार्मियो कटर निदन-मन ।। शर्तमूनि मुर्थ आमि जानियां हित । कमला अधिक कूमि थिया बिह्रित।। धरे य राजक सम विक् कवडात। প্রম নিঞ্গাচুতে অচিতা আকার।।লানিয়া সকল তত্ত্ব নাহি থাকে স্ত। জামি যে মানব বিষণু সায়া বিমোহিত। এত বলি জ্ঞান করে বহু জ্ঞান দুনিয়া ভাগার বাণী ব-लान जीमणी।। अने अनुभावधाटन छट्ट महानास। (नथ (यन बहै कथा क्षकार्म ना इत्रां बदल जलकल व वक्र मखरन। প्रोहेटल मर्भन जूमि वह भूगाकरल । विकल न। एत्र कन्न मर्भन আমার। অভএব বর মাগ বে বাঞ্চা ভোমার। রাধার वहन छनि बज्र पिछ करा महा कवि वत यहि पिटवटना निम्ह्य অন্য কোন বরে মম নাহি প্ররোজন। ভোমাদের উভয়ের প্রাচের রহে মন।। উভর চরণে ভক্তি দৃঢ় করি অংশ। উভরের निकटिंड दिन सम वाग्।। हेश जिल्ल बना किছू वर्त नाहि कृष्ट्रि । छनित्रा जशास वानी बनिटलन ताहे।। दाहे वटन बन्न भामि निलाम अकार्य। इट्रेट्ट मर्ट पृष्ट अखि छामात मनरन পরেতে মানবী দেহ তালিবে যথন। অনারাসে গোলো-क्टिंड कतिरव अग्न ।। विक कटर वाटमध्यी महा सकामिशा পুরাও শিশুর আশা অপাঞ্চে হেরিয়া।।

व्यथ बिमटी बिहुटक गहेता शमन ब ताममक मर्मन।

श्रीत । बहे मछ छे कि कृति मर्गाद की मही। क्रिक्ट क्षां भाग विकास का का भाग कर खरार्थ भूमह मूमि गर्थ। क्रिक्ट कर्षा एमरी एम छारा उथम ।। द्यां कर कर्षा एमरी एमरी एमरी क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रि

बार्ग कर क्रांत गाइंद्र गाइंद्र । कामानिक देश क्रम क्रम नव्यक्ति।। बङ्गिन भरत गड़ी निक्र मंडि भारेरताकानिकन हरत यम योच धना दिए।। भूनकि ज गर्स खेळ हुन आ निजरन (पांदलाटकत द्वांत्रमक ६६ल पावटन।। पातन कविता वास (मर्ब आठस्ति । त्रक्रमत दानमक नम् त्य उतिक । कि कर करित त्यांचा थांचा सूथांचा। यह यह वन त्यांच गर् क्रम् । मामाविध विভूषि वट्य विভूषि। উভিছে পতाका ভাহে অতি सुर्गासन ॥ यान युका या विकासि याना थरत थर्द्धा उष्ट्रम्स मर्जानेट किया मीख कर्द्र ।। मखरमाना स्रुवि धान मद्भ विवाक्षित । कुक्यूम चाकात मनिनगरनट मखिछ मद्भव वार्ट्द भूष्णामान मदगर्व। श्रम्कृषि च भूष्ण भद क्कारत जमता । व नकल प्रतिश्वा भारती रुख देविक । मृद्रकृत ভিতরে বিয়া প্রবেশে হরিত।। তথায় আছয়ে খাদাদ্রব্য সমু मत्र। नानाविथ পরিপূর্ণ নান। স্থানে রয় । রম্ব কুভে স্ক বা निक सूनिर्मन कन । स्थामधूर्व दिव एथ सून वन । वासून क्षञ्च बार्ष कर्त्र वानित। পরিপাটি वाणिर स्मक्क भू-निका। तिथिया दावाद मत्न क्यानन क्याद्र। विक कटर उपरक अनर मगानात ।

### अथ क्रिमजी क्रिक्टकत नवटघोरन क्रम मर्गेन करतन।

भन्नात्र। मरक्षत्र जिल्दत भागी द्रित्त ज्यन। भूकाभन्नाभद्र विज भूक्ष तक्त ॥ नग्नदन जाट्य स्ट्रिंग मर्क स्थ्य
नग्न। कि क्व दम क्षम क्ष्मजुना नाहि इत् ॥ कित्मात वन्नम
क्रिया क्षम मदनाइत। जिल्मग्न क्षमित्र भगाम क्टलवत्र ॥
दक्षणि क्षमर्थित मम नावनः स्वत्र । उप्तत्व ज्या ज्या जिल्ला क्ष ॥ भोजवद्ध भित्रभाम क्षमग्न मन्न । स्वत्र द्रिणव्या स्थाय वन्न ॥ निर्मान क्षमग्न नन्न । स्थाय द्रिणव्या स्थाय वन्न ॥ निर्मान द्रिण वन्नद्र ॥ महन्त्र न्य जिल्लाम् वा द्रिण वन्नद्र ॥ महन्त्र न्य जिल्लाम् वा द्रिण वन्नद्र ॥ महन्त्र न्य जिल्लामा द्रिण वन्नद्र ॥ महन्त्र न्य जिल्लामा द्रिण वन्नद्र ॥ महन्त्र न्य जिल्लामा द्रिण वन्नद्र । महन्त्र न्य जिल्लामा द्रिण वन्नद्र । महन्त्र न्य जिल्लामा विवा वन्नद्र विवा वन्नद्र वन्नद्र ।

क्ष जाक्रा गरिष्ठ जो हा कर करशामक्थन।

लघू-दिशनो (: तित्रो सम्बत्त, क्रम भरनास्त्र, क्रम भश कर्भात्म । ज हर प्रविका, रहेश (माहिका, लालमा नवनकृतम अक्षा कृष्ण मात्रः अकृत्ये ठात्रांत्र निमित्य शाक्षात्र व्यक्ति। गृथं हस स्था, शिदा मोर्स कृष, हकू त्म हरकांत शाथि।। त्राथात्र नजन, सूरांगा वनन, श्रापुल कमल श्राय। एवति नाता-वक करहन एथन, मधुत वहरन जाता। जूमि मम थिया, कहि बिट नविव', व्यानाधिक। त्यमाधिती। श्रामिश त्यमन, सू म e जिमन, এक जा जाउन जानि। नर्क वाशी आर्थित गर्क क्षण कृषि । अ कथा क्षमाथा नग्न। लालादक कार्रिनी, ब वर्षक निकानी, महनद्र छामात इत्र ॥ सूत्र तन मास्त्र हर श्चित्र काटक, की कांत्र करतकि याहा। आफि भू ककन, छ छ दम বিলন্স পুর্ণিত করিব ভাষা ॥ শুনিয়া এ ব'লী, রারা ঠাকু-वांनी, भूनत्क पूर्विङ स्व। कुछ अनि १३८॥, बीकृत्क हार्विष्य, নধর বচনে কন।। গোলোক কথন, আছেয়ে স্মরণ, বিস্মরণ কেন্ ২ব : কহিলে যে জপে মোর দর্ক কপে, ভোমার দেশ্বে বৰ্।। সম্পুতি নাথ ৫০ তোমার বির্চে, পরিছে সামার মন। মের বক্সংলে, শিঙসি মগুলে, দেহ তব জীচরণ।। শুনিয়া বচন, হাহিয়া তথন, কংহন পুরুষে তুম। হিত তথ্য সার, শ্রুতি আরি আরু ব্যবহার যে নিয়ম।। এ ভাবে বুঝিলে, বিৰ'হ না हहेटल, विश्व छेडि नश्र। अह रहकू र्शत, भरनटक विष्ठाति, किटमातीत श्रवि क्या छिर्छ ভাজকৰ, কাল শুভকৰ, हरेशाहि जालमन्। एव व्यक्षा चूर्व कदिव ८२ जुन , जिज्ञवत कट्ट भून।।

# कथ मैक्सरकत है ए। एक उकात का नम्म।

नम् जिना। इत्यात् विकास, विभाज। उथात् छेना छ देन्त आपि। इत्यास माना, करन रेड छेक्तना, हर्ड्यूर्य मूफ्-श्रानि। यासिया प्रयास, श्रीकृत्यवद्य लाय, विभाज। ध्रमाय कृति आंतरमान्त्र खिल,करिया प्रमाज, मून्य्थानिया इति ॥ द्रांचात्र कार्ट्रेट, परिसा प्रतिरं, कार्यस्थात्रम् श्रीमाकस्थित स्कृति शांतित्माक छाडि, बदनक करतन छाता। त्रचात छवटन, जुने श्रास भटन, वटनन किरायो नवी। लह बोहा वन, य बाइश नब्र , किर छोटा भी उन्नि। खिन उर्गार्गन, व त्रान छवत. छने गढी खांचा मिका ने ना छाटि मन्निए, टार्गिट ने लाहे हैं प्रति प्रति । ना छाटि मन्निए, टार्गिट ने लाहे । ना छाटि मन्निए, टार्गिट ने लाहे । विश्व कि । वासिका छन्। ज्या विनिधी, उद्यान म्हित श्रास क्रिक कार्या गाँदि, याह छता कृति, विन्ति छुछ । नाहि छन्।। करह विश्व बत्, विश्व द्वा, व्याप्ति छन्।। विवाह विश्व है, करतन चुनिछ, वास क्रिक छुटे छटन।।

#### व्यथ श्रीताशाक्रद्रका विवाद।

প্রার। বেন বিধিমতে তবে বিশ্বাতা তথন। কুশ্ গুকা ক-विशे ज्ञानिम छ्डानन। आर्या मध्कात कति कवितन स्थान (मड़े प्र । विशंदर्द विश्वि नियम । एत पूष्प्र नेशा देवद्व উঠি নারারণ। অগ্নির নিকটে প্রাণি বসি ভতক্ষ।। বি ধর मर्गिङ निधि चाष्ट्रम कति। कथिटनम द्याम कर्या ममार्शन हिव ।। त्म विवादश विधाला य नम मर्का छोत् । कम्माकर्का वत कर्षा (भोदिश्य) भात ।। जिन कर्य गमाधा करवन इश्यामन । कनोक्छ। क्रा कना घरिनन उर्थन ।। उन्हों व घरिनर घरव আঁসিয়া শ্রীমতী। শ্রীক্লফের চরনেতে করেন প্রণতি।। সন্ত-वात श्रमिक क्रि उपयद्ध। श्रवशि श्रमाम क्रिया क्रिय करत्। जानबारत कर्मानी टेकली मन्न नाम। जान्यिः व्याशन नाटन सूकत विधान ॥ एटंब विधि बंद कना। केंग्रेट्स केंद्रे जन विदेश करमाने कमा कर्तन अभिमानतदक कन्यात পাণি এইৰ করান। বেদেক্তেতে দপ্ত মন্ত্ৰ বরুরে প্রভান।। जनस्य कमान इस वर कर्म थुरत्र। वर इस कमा अर्फिटर भिट ताबिदा। जिनमञ्ज कमादिक পड़ान क्षेत्रां कि । खोत পরে মালা বনলের অহমতি।। পারিজাত পুত্রমান। লইরা ज्या क्रा शटक देव शटल क्रवन वर्ग न ॥ भूनद्र श्रवत राट्ड माना गटनाक्सी दिवशाहेनी कना। शटन देशन निश्चम क्रमादत बद्धत बद्धम अधि भात दात । वन धि क्रमाक्रीन क्यार्स क्यार्त । चुनालक शक्ष मह नव्हित करा व । वान्ति

करतम बन्धा विश्विष विधाय।। शिका सम कमा करव করে সমার্পণ। বিধাতা রাখাকে করে ক্লেণ্ড অর্প। ভিত্ত छ दि श्रेषां विकास कर्तन । देनकाटन स्टर्भ याकि एक म्दर्भना। व्यक्तक इन्सू च साद प्रक्रण श्रष्ट् । बाग कर्द অনিনার আনন্দিত মতি।। পারিকাত পুস্প রৃষ্টি করে পুর पात । अस्तर्याटक ती क शांत्र माहदत्र व्यथनत् ।। अञ्चादमण्ड विक्रिक्ष कि कि विश्व विश्व वा मिक्स वाद्य के कि कि कि रमाक्त्र ।। विधि वरने धनकछि किছू नाहि होई। উक्रटतत्रभटन रयन पृष्ठ छक्ति भारे ॥ जिमारंगत छे छ। तत्र यूनन पत्रा जन्ना रहेश एकि सारक मम मरन्।। छिनिशोविधित वानी এইর তথ্ন। তথান্ত বলিয়া পরে বলেন বচন। মদীর চর-भाषा सूर्ण जक्ति। कहना भारत এदं खन अलाभित ॥ त्व कर्म्म छाहेला छोड़ा करत नगावान। अक्तर्व अञ्चादन जुनि कत्र श्रीम ।। श्रीन विधि त्राधाकुष्मेश्रीण व्यवस्थि। सङ्ग्रीत शक्त करतन स्त्र्वित स्र्रेटिश । वाश्रिक्त द्वाधाकृत विवाद क्येन खांक डार्ट तिहे बन कत्र स खादन ।। भूनर्यःत **ड**रव डाइत আদিতে না হয়। দ্বিশ কহে পূর্ণ কর শিশুর আশায়।।

## व्यस विवाहार छ अवाधाकरकात विदात।

পরার। বিধাতা বিবা দিবে করিলা গমন। আনন্দেতে
প্রীরতীর সহাস্য বদন। বক্র চন্দে ক্লফ মৃথ হেরি বার বার।
লক্তিতা হইনা মুখ ঢাকি আপনার। কামবাণে প্রণীত্তিতা
পুলকিত কার। ভক্তিভাবে প্রথমিয়া প্রীকৃত্তের পায়। ধারে
ধীরে দ্যা। কাছে করিয়া প্রমন । কৃত্বুসাদি ক্লফ অলে
করেন লেশন। মুভিলক স্থানে দিয়া ক্রেণ্র কপালে। স্থা
মধুপুর্ব পাত্র দেন কুত্তুলে। রাধা দত্ত স্থামধু লইয়া তথ্য
ভাজন করিল স্থান প্রমান্ত ভাস্বল ভূলিয়া দিল ভূব। তাহা
ক্রেণানারের করিয়া ভোজন। ঐ সব দ্রবা ছবি লইয়া তথ্য
সংখ্যে রাধাকে দেন হর্ষিত মনে। রাধা ভাহা থাইনেন
লক্তিত বদনে। তর্মারের রাধারে হার লায়ে ব্রুক্টণ। ভ্রেট

वर विश्वांत कतिना कुजूर ला। विक कररे बार्थ कृष्ण प्रत्य बुगतन। मक्तत कामात यन मधु शान हत्न।।

ख्य विश्वति अक्टिक्द वालक बन थाउन अ श्रीमधी । श्रीकृष्णदेक कोटल गरेदा यटमा माद मिकटि एन ।

প্রার। বিহারাত্তে যুবা দেহ ত্যাজি ততক্ষণ। পুনরপি मिष्ठकारी देश्या नाजायन।। दाधिका त्रत्यंन नन्ति नित्यन य ৰপ। ক্ৰিভ কুধিভ রীভ বালক সে কপ।। তবেভ শ্রীমভী নেই শিশু কুষ্ণে লয়ে। চলিলেন ক্রতগত্তি নদ্দের আলয়ে।। क्रामारत छेल्नी उनत्सत खरन। यत्मानात क्रांत निम् করেন অপ্রায়খন একুলেঞ্চ দেন যশোদার কোরে এমতী वटलम किছू समधुत त्वादल ।। अमरना यद्गामा छव जामी মহাশয়। পোর্চেতে দিলেন মোরে তেংমার তন্য়। আনিতে পথেতে বড় ছঃখ পাইয়াছি। কহিতে নাপারি ভাহা মেৰূপে এনেছি।। স্থুল শিশুভাৱি বড় ভৌমার নন্দন। স্কুণাতে कार्ड इर्म करत कान्क नन।। स्माष्ट्रित छात्र अथ शिहिन হৃষ্টিতে। আমি কিলে। পারি শিশু বহিয়া আনিতে। এই দেখ রৃষ্টিতে বসন ভজে গেছে। না পারি কহিতে পথে य इश्य म्द्राहा। बहै लह भिन्न खन मिया भारत करा देश গো যশোদা আমি যাটব সম্বর । গৃহতৈতে আসিরাছি আমি वङ्का। शुंद्ध याहे देवन नहीं महेशा नेपान । এত वर्णि कमिनी निक शृह्य रिनना। यत्यांना धाहेता कृत्य (कारनाट नहेना।। कवि कट्ट नम्बानी छन निवृत्ध । श्रीर्शत म दात ारत रितिन सूर्थ ।

मोध-जिल्मो। वान कम प्रमिश्तः, समर्थि उत्पावतम, वाधाक्रक केल मिना। উভয়েতে প্রেমাবেশ, मिना मोला मबद्धान, कड़ कब खादांव कथन ॥ किश्विष्ट वान, श्राविष्ट व लाह गाव, धाव कि खिन्छ दोष्ट्रा कवा। चूनि प्रमिश्त कथ, धा कहिला महामुख्य देशन मनात बखत ॥ किस कम निर्मान कथ, धा कहिला महामुख्य देशन मनात बखत ॥ किस कम निर्मान व लाह निर्मान विवास हो। विवास का श्री का का का निर्मान व लाह का का निर्मान व लाह का का निर्मान का निर्मान कराय का निर्मान का निर्म का निर्मान का निर्मान का निर्मान का निर्मान का निर्मान का निर्म का निर्मान का निर्मान का निर्मान का निर्मान का निर्मान का निर्म का निर्मान का निर्मान का निर्मान का निर्मान का निर्मान का निर्म का निर्मान का निर्म का न

हर्या । यात कमा अधावकी। इस्पष्टित वाश्रमाह, क्रक करु मात्रा (न्याहेता। कर कर छात्रासस, कि रहेत स्व वस, शुनः किया कर इंड कविना।

### क्षेत्र मुक्तावरम् इति वहन् ।

मीर्य-जिलाने शामनी करहन वाम, भूनर छ। शांत छातं, মুক্তাবলী কথা মুধাধার। এক দিন পৌৰ্বমানী, নিশিতে छम्ब्र मनी, कृष्णवनि कृद्धक्षः वृत्धात ।। वाधिक। वनिया कारक, ह दिनिद्दक्षियी बारक, मत्त्र त्थ्रम द्रामटक व्यक्तिम । रहेनकाटल नज़श्ति, दाधादत आमिश्व कति, निक शांटक करते. स्मि (वस्ता कांडिएश क्म कांन, त्यस्म (पर्न सम्मन्ति, निन्त् त मीमस करंत्र कारना। शहत नद्य वास्त्रत्यः शत्राहेन माने । युन, रंग का का रामन मारक छाटना ॥ । एत भटत काने वांत्रं शास्त्र शत्न मुकार्त्त, जुरन निया वाधिकांत शत्न। नाकाट्य (माहिनी नाल, जालीन विज्ञ ताक, निव्यक्षिय ভাল ভাল বলে । মুক্তাহার পরাইতে, মুক্তাবন আচ্মিতে, **ॐ**क्रिता वाषात्र मत्न इहेने। मत्नत्र मानम् य हाः श्रकाम ना করে তাই', ভিহি বলি ছিড়িয়া ফেলিল। উপজিন প্রতি श्रुव, मनिन रहेत पूर, मानाक्रिट जीतन खोबक। ए। ज আভরণ মনি, ভূতলে পজিল ধনী, ভাব দেখি ভাবেন ক্রিডক किंदिलन मझ मा, मानाउ । हेन अग्र, खीम होता भूका मान अति। व्यक्ति। व्यवान गाम, चतात प्रतिद्वाम, भिन दारम भिष्ट भागाति।।

# व्य की नहीं त मान उक्षर की कृत्य । (हम्रो।

প্রার। বেখিয়া বাধার মান রাজীয়লোচন। মনেতে ভাবেন তবে কি করি এখন। চন্দ্রাবদীর কুন্তে বঞ্চি বেলিন যামিনী। এই বপে হরেছিল সে কিন মাজিনী। কুঞ্জ কৈতে আমারে বাহির করে দিন। রুন্ধা আদি সংগী তাতে, কজ বুরাইল। আনিও সা বস্তুকত ধরিয়া চর্বা। তথাপি হিল ভক্ত সে মান তর্বা। প্রবেজানি নিজ মনে ভাবর।

विद्यात । अधिवस ब्रुमात नहें शा छ लटेन मा दर्गा दिन बद्र एटवं मान क्य करित । शुरु हव् वि ति है नना चे होटन किटनारी ८४ (वर्षि मोबुन मान छोहा इहै एक बीखा। इहेटव कठिन बख अहे मान हो हो।। कुछ कथा (रकू कुछ दे र स अश्मान। अड निन मुका बदन ना निवास हान ।। आर्निश अर्थुक मि অন্যেরে বিশাই। অবশ্য করিতে মান পারে ইথে রাই ।। অপরাধ দিতে নারি আছি অপরাধি। না পহি উপায় এবে कि कारशत्क माबि।। शारम धरव माधित नहिरव मन्। ধান্য বরপ্ত বাভিতে পারে অধিকস্তুমান 🛭 যেহয় অত্যেতে मिथि न थिया किकिए। अदेवटा किवि उद्ये ए इस छे हिन्छ এত ভাবি র'ধাকান্ত রাধা কাছে গিয়া।। সাধেন অনেক মত বিনয় করিয়া।। ভাছাতে রাধার আর বেভে গেল মান নয়নের ভবে ভাসে কমল বয়'ন।।কিছুতেনাকন কথা क्विन (वाक्न । आधान क्वाचाल क्लाल आलन। তাহা দেখি নরহরি ভাবেন অপার। কেমনে করিব ভঙ্গ এ मोन बाथ वं।। एटव क्रम मटन मटन कविशा जिल्ला (की-শকে কংগেন প্রাথী ভ্ল- আর্বার ।। সাহিল্যে বছ্নত কংণ-ना अर्निट्न। निडांख वा मादक विकि वंब्जन कौतदन । उदन चांद्र किया कन थाकिया डेशाल । सूर्य थाक मान नाय याहे यथा छ। दन विक श्रीयोक खिहा छि जिल्हा न । कु ঞ্জের ছুলবে পিথা বলিলা ত্থন ।। তিয়াদিত ভাবেতে বলিয়া नादाश्व । कालनाव कत्रकार्कि कटरन म्भून ॥ कन्कारन दत হরি হেরিয়া আপেন। इनस्ट्रिक ডাকিয়া কিছু ক হেন বছন।। डेशनक मार्क इन्हें छनान आश्राही विक कटर मिन् दान त्राक्षा कृषः भारता

चय बिह्न बिद्ध थात्र यो म चक्कन त दहन।

नव जिल्मो । एर्स इन कति कर्टन किन्ति, तक किन नथौनान । भून महत्ती अस्कृत द्री, कन्दकार्छ स्टम्स्स । क्रिके नवम, मनाइस मनम, चरित क्षार्च माट्रन । ज मनाइ एन, बेर नथी भून, धन मान क्षांत नोट्न क्षार्यक्रिक्ट स्थिम श्रीतिष्ट्रियं, माद्री करत श्रामाना मणम मणात्, वहा यात्र आतं, त्मादर्श नामात्र श्रामा। श्रामि (महे मणा, श्रिम महमा, कत हिट्छ धारे (महि।।तृष्ट्रमी श्राचांत्र, मिति किल्डिंड धक्रद्य स्थित मधी।। यथन ध वानी, कम हक्रशांत्र, श्रीश्रत श्रिम मधीनत्। श्रीम श्रीम श्रीम श्रीम श्रीम श्रीम श्रीम स्था मधीनत्।। कृष्ट श्रीम कहें, (मश्रिष्ट श्रीम त्राम स्थित हार्थि मधिन स्था श्रीम ग्रीम श्रीम श्रीम

व्यथ मान उक्षनात्य त्रमा औदांशात्य त्यान।

শ্বার। তবে পারী রুক কর করিয়া ধারণ। একে একে कते हिरू करतन पर्णन ।। गर्क सूमक्रल आहि अमक्रन नाई ! द्रिशिश विन्त्रश्च हिस्स स्टेट्सन द्रारे ।। दूबिट्सन मान छक्न कति वात हन। कतिना ठाजूती शति मिहा अभवना। 45 छ।वि বিধ্যুখী জিংধামুখী হয়। হানিয়া বলেন তবে প্রভু দরাময় कर थिए कि त्विटन कर विटलिया। कि काइरन व्हे ষুথে রহিলাব নিয়া।। রাই কন কে বুকিবে চাতুরী তোমার किहा इत्न मान छक्र कतित्व आमात्।। अमंक्रन किছू नाहे সকল মঞ্ল। শঠশিরোমণি ভুমি জান কত ছব।। কার नाथा एव हक वृश्विवाद शादा। द्वा मान कवि मान श्वा. वांत्र छत्त्र ॥ अञ्चलि द्रांशा मधी नित्रव हरेला । शामि इन्हा-मधी छट्ट कहिटल नाशिमा ॥ कि कान्नट्र बाद्ध जात इड बित्रमान। जालिन हाताल जूमि जालनात मान।। कर किव मक्तिमी क्रियान जुलिला। बिक्रास्थ्र ज्यमक्त कि जाद यु कारण ॥ वशास्त्र कर्छ। त्यहे बनि कूमन । छात्र कि कथन भारती बारह अवजन । क्रुरकर भरत क्या करिटन विचान काथा मृद्या मृद्यालिक इस यात्र सीन ।। यात्र मार्टन मृद्या इरत् क्ष नाट व व । किवाल वृत्तित्त कृति काशा मन्त्री (र द्शक (म दशक कांत्र नाइन कार्का नाई) बिक्टकंत्र वार्का जीवन

रेनम अर्था बाह्य। बर्टनि श्री मणी ह हार्ट्ड पाइका। बन-हेला श्रीकृष्णेत बार्ट्यट्ड महेशा।। विक करह हिन्दि वर्ग गर्यक्रम । माजक्रक कथा अर्टन टेस्ल नमाश्रम ।।

ज्य द्वारा कृटकत युक्तावटन शमन।

मीर्च जिल्ली। उदर इदि ग्रांश गदन, बगिरणन बक्शित प्रदेश तिन छेड्टाइ इश्ये । नशीतन नर्यक्टन, त्रवी कदर्र अकमरन, অধিকন্ত বাড়ে তাহে সুখ।। পরে শুন বিবরণ, তদম্ভের নারায়ণ, পুনঃ সেই মুক্তাবন করে কারে কিছু না বলিয়া, भटनरे विष्ठातिया, केकिल्लन दाथा इटल धति ॥ माम नर्षेत्रहाँ शन, खनन करिका वन, क्रांचर शना युक्तावरन । ভारा प्रि वाधा मुद्दी, अधिवसु मानवकी, श्रीत छाहा सानित्यन मतन्।। রাধার ধরিয়া হাতে, ভ্রিয়া অনেক ভাতে, মান ভার করিয়া, ভঞ্জন ৷ মুক্তামর অলক্ষার, মুক্তার গাথিয়া হার, জীমতীরে পরান তথন।। যত गरहदीभेटन, मुक्तमस আভরনে, गांका-ইয়া দিলা সেইকাশে। আপনি সাজিয়া রঞ্চে রাধারে লইয়া नक्ष, विगटनन वृष्ट्र निःशान्तन ॥ स्ति कि सूर्यन अले बिचू-बत्त अयुक्त, किवा क्षण अिं मत्नाहत । ए क्षा पिथि मत्व, महामत्म् मरहादम्दन, मुखादन् छेठित् समद्भा और्धाः श्राम बरन, ताथाक्रक शमंखरन, व्यथितनदेव त्मरं बहे वत । निष् मम श्रतकृष्ण हाश्या कक्षण पृष्ठ कूर्याल ताथश नित्रख्य ॥

অথ দৌর মুখ ছনির পু ঃ প্রশ্ন।

পরার। এত শুনি স্থানগণ হয়ে ছাইমন। ব্যাদের নিকটে কিছু করজোমে কন।। মৃত্যানভাবলী কথা অমৃত সমান। প্রবংশ প্রবংশ করে এছু এক নিবেশন। অনুপ্রব করি কর সম্পেই ভয়ান। জটিলা কুটিলা ছুই নতী কি অস্তী। কি কারণে গাইলেক এতেক ছুর্গাড়। কোন হেতু পরীক্ষার ছন্ত্রমে তিবিল। কেশ নেতু ছুর্গাড় কেন অলেতে পভিনা। লোক মানে অপমান সম্মান্তিলে এ জলা প্রাক্তী দিলাই করি কোন পাল।।

বাসি কন মুনির্দ্ধ শুন সে করেনী। তালী কৃটি সম ল নাহি জেহ সভী।। সহীসাধী বাল ননে বাকে অহন্ধার। সেই তেতু কৃষ্ণ করে জন্ম সংসার।। ত্রিভুবন মধ্যে নারী আছে খুড় জন। সকলেরে মুণা করে বাধানে আপন।। এইমত নানা মভ বাড়িশ জুর্মাত। অসিলের পতি রুফ ভাবে উপপতি।। ক্রফ পরিবাদ দিরা ত্রহলানণে। রক্তে ভক্তে উপহাস করে প্রতিক্ষণো অন্ধিবন্ত রাধার্ক ডেশ অতিলয়। এই হেড়ু মহাপাপ অন্ধিন হৃদ্য ।। পাপ হৈলে পরিতাপ পার মহাজন। বেদের বচন এই না বায় বগুন।। মর্প আর ডেশ জন্ম জটিলা কৃটিল।। মহাপাপ জন্মি তাপ এতেক পাইলা।। এত্যদি কহিলেন বাাস তপোধন এ শুনিয়া সন্তোধ হৈলা যত মুনিগণ।। এত্রিগ প্রসাদ কহে প্রীরুক্ত চর্বেণ পুরাও শিশুর আশা প্রভূ নিজ গুণে।

ख्य बिद्राधाक्रदण्य युगल क्ल वर्गन ।

होश्यो। कि मचा सम्बद्ध, किल्मानी किल्मान, विश्वा-मुद्भागत, विमिल (साद्य । तम्ब चवाकति, ठाक महत्वी, क सदापि धारु, मना निर्धारिश । अभ मरनार्द्र नामि करन-বর, নর জলধর, চাতক লোভা। ত্রীমন্ত্রিবরণ, ভাতে সুগঠন। শীমুতে যেমন, বিজুলি লোভা।। শ্যাম শিরোপরে, শিখি भूष्ट्र धट्ड, कड माड कट्ड, छात्र छ्छेत्रि । ताथामिटत द्वनी, रवन वान कनि, कुछ ननी मनि, जूबिडा छात्र।। एपरा नि-न्यूत बाक्सन रेन्यूत, कशांटन विन्यून, कत्रक खदत। किरम त क्शादना, क्रिबार्ड जात्ना, श्र.म ভारन जान, जिल्लाक बद्र । अमृथम् छन, छन्। उक्तन, तक छर्नन, किमित्रा हते। सर्व यूर्वन, खादर रूथरन, नम भडमन, के जून घडे।। क्यून नम् न, कारमत क्लान, कहारक रन वान, खाकन श्राप्त र्यम मूल थन्न, अतिहा कालम्, स्माट्ट स्मारा लग्न, शानित्ह कात्र । अधानत्र काम, कास्तत्र स्थान, उद्या कदत्र नाम, ठिएउ किनि। मुख्यामम् हात, नाना चनकात, बदलद दिनाहात चूचिक वान । अविशास बाटम, बिकिनकारम, जीखवारम सन्मत माटक किया दम सम्मन, कृष्टिक मुख्य अभूत स्थ्य, शदर विदर्शिय ।।

भागभारत, किशित धारत, सूत्रक छर्भन, प्रकृत क्षेत्र । মরি কি পুরুষ, ছেবিয়ে সে বৃষ্ণ ভক্ত মনোভঙ্গ গুঞ্জরে তার मुक्तांदन मार्कः अकाल विदारण, प्रतीरमत् मारकः, रमवला मर्व विधि व्यक्ति खर, बक्तन वानने, मरक यछ एमर वाहेन खरन।। আসি মুক্তর্বন, বিধাতা ভখন,। হেরিয়া ররণ। নয়ন ভরি। मह सूबनारः, जूनमी हम्मान, खाँछ मंग्रहान, श्रुवन कृति। प्रका मम र्जित्स, कुडाक्कलि टेस्ट्स, खनम कतिरस, कश्लि कड । ब्रॉ-प'कूष उत्र, इष्टे । नन्स, त्मन खवाख्य, मन वाञ्चित । वाह्य (मद कन, खन सृमिशन, देशल सुद्धावन, विश्व स्थान। शुन्ध इक्टाम्ब, देव्हा यटन स्य, मरु भशीहत, एथात योग।। निद পাদি বন্য নিকৃষ্ণ কানন, বির্ক্তের স্থান ক্রেফর যত। ভা-श्टां ध्राप्ति, श्रेल श्रान, श्रान मुख्यावन, मरनत मंड।। विक् यत हि, शिला मधुलुती, त्म वन मःशकि, कृतिना बन। अटक वन्न, खिनिया जयन, यठ क्ष. यग्न, म:खाय प्रन II এই অগ্রার, মুক্তির আধার, যে শুনে ভাহার, কল্শ নাশে। ধন পুত্র জন্ন, ইহকালে হয়, ঋন্তে নিবসন্ন, বিষ্ণুর বালে ।। যদি कानकन, बधित कांत्रन, कतिएक खार्चन, खानखन इस । कतिशा यजन, शृंद्दर्क द्वांखन, क्रांत्रित रम जन, পणि भाषे॥ वक्कां व्यक्ति नातो, पृष्ठ । क करि, छिन शक्त धाँत, खावन करत । शुद्ध বতী হয়, সৌভাগ্য উদয়, হারা পতি পায়, হরির বরে।। बिह्नाक्ष्यादम, मदम्ब बास्तादम, ब्रांबाक्र्यः शदम, यांहद्म সার। দিয়া প্রতরী, হইয়া কাণ্ডারী, ভবছোর বারি, করছ পরি। তব কুপা বলে, শমনের দলে, যাই আমি চলে, ভো-मात्र वाम । निख्नाम मारम, कित सूर्ध वारम ताबिवा छलारम भूतां वाम ।

#### শ্রথ গ্রন্থকারে পরিচয়।

कलिकोटा दक्षिकाति विकिछ मध्यात्र । शतकार (मणना। मिक्ट्रि छोरात । तामकेला नृत नाटम खाम स्विधा छ। शक्ति वाहिनी पूर्व कर्द्रण कष्ट्रक । त्रेह आदम निवशिष्ठ बङ्गिन इस । जीवाम मक्त वाहम्मां ये महामास । गर्वामाद्य সুপারণ স্পত্তি অতি। এইগালান বিজ তাহার সন্ততি धर्यभाञ्च शावनाम् कति अकश्टि । श्रतान धनक करतन क्टलिय बिकटिया मश्कृत यूक्टित मकत्न रह क्षेत्र। अह ছেবু নিজ্মনে, ক'র্মা বিচার।। বছবিধ বুখনত মন্ত্র। করিয়া मधादन स्मार्ट्य हिट्डत नानिशा। मुख्यान डांचनी कावा कतिञ्च प्रवस्ता व्यनीतारम ज्ञाबट्ड शातित्व गर्कणम्।। शिंख-তের বেধি ংভুকোন্থ স্থান। যতু করি লিখিগ্রাছি মুদের প্রমাণ । বিশ্বভাগে ভাষা তার আছমে বিভার। ক্ষ হয়ে Cस्विट्यम (य वामना यात्र ॥ এই ভिका हारि खनिशने मझ-शर्दिम । ब्रह्मं यमानि प्लाय थाटक दर्काम ऋदिम ॥ त्म प्लाय का किया केत थटा ब धर्ग। रात्रमम नीत पाकि की दिवत छक्न त्रांबाक्त्य भाष्मभाषा अभवा अभाग । क्लाक कतिहा पूर्व कत মনক্ষাম।। শিশুরাম হতেক্ষেশ্যাম। চরণেরে। নিরাপদ कृषिया बाथर निबल्धत ॥ श्रीहर्शाव्यमाम बाद्ध श्रीकृष्ण हत्रम । इब्रिइति वन मद्य श्रन्थ ममालन।।



क्षिकालो कि श्रुव द्वाल अवस्थित वनाटकड लिन ३१ नम्ब छ । पर